सम्वत दो हज़ार

भारतीय योगी

सम्बत दो हज़ार

अथवा

भावी महाभारत

लेखक

'भारतीय योगी'

प्रकाशक

नवयुग पुस्तक भण्डार

इलाहाबाद

दूसरा संस्करण] [मूल्य, सवा रुपया

प्रकाशक—
श्री० सत्यभक्त
नवयुग पुस्तक भण्डार
बहादुरगञ्ज—प्रयाग

मुद्रक—
सतयुग प्रेस,
बहादुरगञ्ज
इलाहाबाद

भूमिका

—०—

इस समय दुनिया के अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बड़ी हलचल मची हुई है। आज एक मुल्क से तो कल दूसरे से लड़ाई, बलवा और मारकाट की ख़बरें आती रहती हैं। चारों तरफ़ लड़ाई की जबर्दस्त तैयारियां हो रही हैं, नये-नये भयंकर हथियार बनाये जा रहे हैं और राजनैतिक गुट्ट या दल रचे जा रहे हैं। इन तमाम बातों पर ग़ौर करने से साफ़ जान पड़ता है कि कोई संसारव्यापी महान संकट अथवा दूसरा महायुद्ध पास ही आ पहुँचा है। सच तो यह है कि हम इस संकट के भीतर पैर रख चुके हैं सिर्फ़ उसका पूर्ण भयंकर रूप हमारी आँखों से कुछ दूर है।

इसके साथ ही साइन्स के नये-नये आविष्कारों ने समय और दूरी के अन्तर को मिटाकर संसार के तमाम हिस्सों को इस तरह मिला दिया है कि एक की हलचल का दूसरे पर फ़ौरन असर पड़ता है। हम चाहे कितना भी बचने और दूर रहने की कोशिश करें दुनियाँ में होने वाली घटनायें किसी न किसी तरह हमको अपने भँवर में खींच ही लेंगी। ऐसी हालत में अपने और अपने देश के भले-बुरे पर ख्याल रखने वाले हर एक शख्श का फ़र्ज है कि दुनिया की हलचलों पर निगाह रखे। यह छोटी-सी किताब इसी उद्देश्य को किसी हद तक पूरा करने के लिये

लिखी गई है। इससे पाठकों को ख़ास-ख़ास मुल्कों की मौजूदा हालत और उनकी नीति का तो पता लगेगा ही साथ ही आजकल की राजनीति और युद्धविद्या की उन असली बातों का भी भेद मालूम हो सकेगा। जिससे वे आगे होने वाली घटनाओं का हाल समझ सकेंगे और उनके बारे में ख़ुद ही कुछ अनुमान भी कर सकेंगे।

यद्यपि राजनीति का विषय रूखा और गूढ़ होता है, तो भी हमने इस पुस्तक को मनोरंजक और सरल बनाने की पूरी कोशिश की है, जिससे साधारण पाठक भी इसे शौक से पढ़ और समझ सकें। जर्मनी, इटली, जापान, रूस वगैरह की भयंकर फ़ौजी तैयारियाँ, फ्रांस के तिलस्मी किले, बिना चालक के उड़ने वाले हवाई टारपेडो जहाज़, दो-डेढ़ सौ मील तक गोला फेंकने वाली तोपें, अनगिनती मनुष्यों को पल भर में मारने वाली जहरीली गैसें, बड़ी-बड़ी सेनाओं का संहार कर सकने वाली बिजली की मृत्यु-किरण, परमाणुओं की ताक़त से संसार के नाश की योजना आदि कितने ही चकित और स्तम्भित करने वाले रहस्य पाठकों को इस पुस्तक में मिलेंगे।

इसके सिवा युग-परिवर्तन का सिद्धान्त, सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में आने से होने वाला पृथ्वी की काया-पलट और ज्योतिष-विद्या की कुछ ऐसी बातें भी इसमें मिलेंगी जिनसे ज्यादातर पाठक अभी तक बिल्कुल अनजान हैं।

योरोप, अमरीका में कितने ही लेखक इस तरह की किताबें जनता में युद्ध का भाव भड़काने और इस तरह अपने देश की धाक दूसरे देशों पर जमाने के उद्देश्य से भी लिखते हैं। ऐसे लेखक युद्ध की तारीफ़ करते हैं

और उसे फ़ायदेमन्द बतलाते हैं। पर हमारा असूल इस बारे में यह है कि अगर मनुष्य ज्ञान-विज्ञान में इतनी तरक्की कर लेने पर भी आपस में भाईचारे का बर्ताव नहीं कर सकता और जानवरों की तरह मरता-कटता है तो यह उसके लिये बड़े शर्म की बात है। इसलिये हमने यह कोशिश की है कि इस किताब को पढ़ कर पाठकों को आधुनिक युद्ध की भयंकरता, उससे पैदा होने वाली संसार के नाश की सम्भावना और उसकी दूसरी बुराइयों का पता लग जाय। हमारा विश्वास है कि इन ख़्यालात का जितना ज़्यादा प्रचार होगा उतना ही संसार का भला हो सकेगा और उस पर आने वाले कष्टों में कमी हो सकेगी।

पर हम यह भी जानते हैं कि ऐसे संसारव्यापी महान परिवर्तनों का रोक सकना आदमी की ताक़त के बाहर है। काल-चक्र की गति में बाधा डाल सकने की बात सोचना भी मूर्खता है। तो भी यह मुमकिन है कि जो लोग इस सम्बन्ध में समय रहते कुछ जानकारी हासिल करके अपने को परिस्थिति के माफ़िक़ बनाने की कोशिश करेंगे वे शायद आने वाली आफ़तों से कुछ थोड़ा-बहुत बचे रह सकें। इस पुस्तक को लिखने में हमने इस बात का ख़्याल ज़रूर रखा है, पर इसमें हमको कहाँ तक कामयाबी हुई है इसका फ़ैसला दूसरे विद्वान लोग और हमारे प्यारे पाठक ही कर सकते हैं। अगर उनकी तरफ़ से हमको कुछ प्रोत्साहन मिला तो हम अपनी अगली पुस्तकों "हवाई युद्ध"—'नई दुनिया' आदि के द्वारा भावी परिवर्तनों की कुछ और झलक दिखलाने की कोशिश करेंगे।

—'भारतीय योगी'

विषय-सूची

—:o:—

सम्बत दो हज़ार

अथवा

भावी महाभारत

"With Spain on one side of us and China on the other, we ought to take warning from the signs of times. There is plenty of sand around us in karachi, but it will be a foolish policy to play the ostrich. We ought to be prepared for the possible eventualities, though the probability of their occuring might be remote." (His Excellency Sir Lancelot Graham, Governer of Sind)

"अपने एक तरफ़ स्पेन और दूसरी तरफ़ चीन को देख कर हमको समय की गति को समझना और सचेत हो जाना चाहिये। यद्यपि करांची में हम लोगों के आस-पास बालू की कमी नहीं है, पर शुतरमुर्ग की नक़ल करके अपने को भुलावे में डाले रखना बेवकूफ़ी होगी। हमको भावी सम्भावनाओं के लिये ज़रूर तैयार हो जाना चाहिये, चाहे उनके वास्तविक रूप में सामने आने में कितनी भी देर क्यों न हो।" (हिज एक्सेलेंसी सर लेंकलोट ग्रेहम, सिन्ध के गवर्नर)
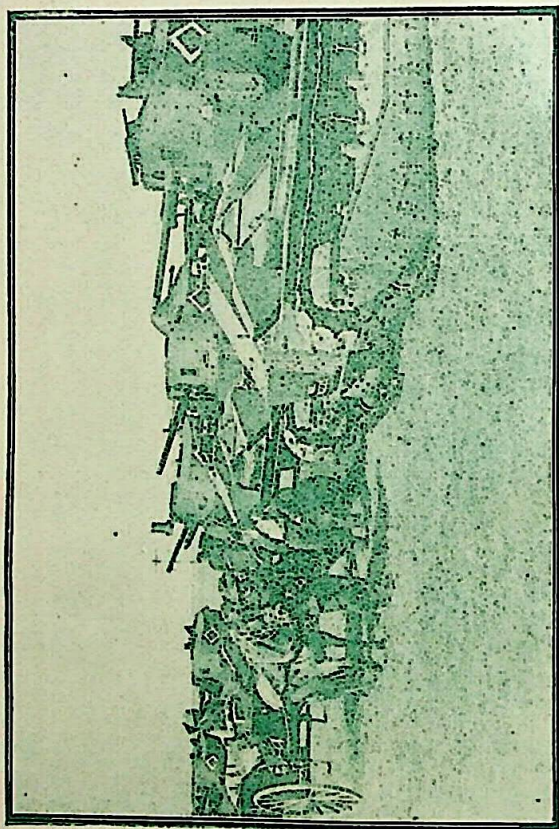
ये भयङ्कर 'टैंक' इङ्गलैण्ड की फ़ौज के हैं। इनमें से हर एक फ़ौलाद से बने चलते-फिरते क़िले की तरह होता है, जिस पर किसी भी तरह की चोट का असर नहीं होता। इनके ज़रिये दुश्मन पर मनमाने ढङ्ग से गोलियों की वर्षा की जा सकती है। ऊपर के चित्र में ये 'टैंक' आपस में अभ्यास के लिये नकली लड़ाई कर रहे हैं।

नये युग का सूत्रपात—

परिवर्तन या बदलते रहना संसार का अटल नियम है। एक मामूली समझ रखने वाला आदमी भी अच्छी तरह जानता है कि दुनिया में कभी कोई चीज़ हमेशा एक सी हालत में नहीं रहती। जो आज बालक है वही कल जवान होगा, फिर बूढ़ा होकर यहाँ से चला जायगा। यही हाल तमाम मुल्कों, क़ौमों, मज़हबों, सब तरह की संस्थाओं, रीति-रिवाजों, सामाजिक और आर्थिक प्रणालियों आदि का है। यह सच है कि इनके जवान और बूढ़े होकर मिट जाने में ज्यादा अर्सा लगता है, पर एक दिन अन्त सब का हो जाता है। जब यह बदलाव धीरे-धीरे होता है तो मामूली आदमी उसे अनुभव नहीं कर सकते। कोई भी आदमी अपनी जिन्दगी में इनके चढ़ाव-उतार का बहुत थोड़ा हिस्सा देख पाता है। सिर्फ वे ही लोग जो इतिहास और समाज-विज्ञान के जानकार है उसे समझ सकते हैं।

पर एक ज़माना ऐसा भी आता है जब पुरानी संस्थाओं और प्रणालियों का एक दम ख़ात्मा होकर नई रचना होने लगती है। तब परिवर्तन की चाल बड़ी तेज़ हो जाती है और मामूली आदमी भी उसे देख और समझ सकते हैं। संयोगवश ऐसा ही जमाना इस समय हमारे सामने मौजूद है। इस वक़्त सब तरह की संस्थाओं और सामाजिक रीति रिवाजों में ऐसी तेजी और हलचल के साथ बदलाव हो रहे हैं कि जो लोग अपनी आँखें बन्द किये रहते हैं उनको भी उसके धक्के लग रहे हैं और वे भी आँखें खोलने को लाचार हो रहे हैं। अब ऐसे मामूली समझ के लोग भी यह अनुभव कर रहे हैं कि निश्चय ही पुराना युग ख़त्म होकर किसी नये युग की शुरूआत हो रही है।

आज मनुष्य-जीवन के राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, किसी भी पहलू पर निगाह डालिये, आपको फौरन पता लग जायगा कि पुरानी बातें बड़ी जल्दी-जल्दी बदल रही हैं और उनकी जगह ऐसी बातें जारी हो रही हैं जिनका कुछ समय पहले हम ख़्याल भी नहीं कर सकते थे। यह सच है कि आज भी ज्यादातर आदमी इन परिवर्तनों का असली मतलब नहीं समझ पाते, इस लिये वे या तो उनको देखकर चौंक रहे हैं और घबड़ा रहे हैं या नाराज़ होकर कोस रहे हैं। उनके मुँह से सिर्फ यही निकलता है कि 'अब पृथ्वी पर पाप बहुत बढ़ गया है और संसार के बुरे दिन आ गये हैं।'

पर जमाना या कालचक्र ऐसे कमज़ोर या सीधेसादे लोगों की पर्वाह किये बिना जोरों से अपना काम करता चला जाता है। वह मौजूदा समय के विपरीत पुरानी और हानिकारक रीति-रिवाज़ों और संस्थाओं को बेरहमी से तोड़-फोड़ कर फेंक रहा है। मनुष्य-जीवन के हर एक हिस्से पर उसका असर पड़ रहा है।

राजनीति के मैदान में देखिये तो पिछले १५-२० वर्षों में कायापलट ही हो गई है। बड़े-बड़े सम्राटों, शाहन्शाहों, सुल्तानों, कैसरों और ज़ारों का नाम निशान नहीं बचा है। जो राज-सिंहासन सैकड़ों हज़ारों वर्षों से क़ायम थे और जो ईश्वर के बरदान-स्वरूप अटल-अचल समझे जाते थे, उनको मामूली लोगों ने उखाड़ कर फेंक दिया। सिर्फ दो-एक सम्राट जो आरम्भ ही से प्रजा की इच्छानुसार काम करते थे और जिन्होंने पहले ही से हुकूमत की बागडोर प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में दे दी थी, बचे हैं। नहीं तो ज्यादातर देशों में ऐसे ही लोग कर्त्ता-धर्ता बने बैठे हैं जिनका जन्म बहुत ही छोटे समझे जाने वाले खान्दानों में हुआ है। पाठक शायद जानते होंगे कि मुसोलिनी लुहार, हिटलर भिखारी, और रूस का स्टैलिन चमार है। क्या यह नया युग शुरू होने का लक्षण नहीं है?

सामाजिक क्षेत्र में भी कम हलचल नहीं मची है। इसकी सबसे साफ मिसाल हमारे ही देश में मिलती है। जिन रिवाजों और रूढ़ियों से लोग पीढ़ियों से लिपटे हुये थे वे टुकड़े-टुकड़े होती नज़र आती हैं। विदेश-यात्रा, स्त्रियों को शिक्षा न देना

और उन्हें पर्दे में क़ैद रखना; चार-चार, पाँच-पाँच साल की बच्चियों का विवाह कर देना और विधवा हो जाने पर उनसे जबर्दस्ती घोर तपस्या कराना आदि बातें हम लोगों के देखते-देखते मिट गई हैं या मिटती जाती हैं। अब सामाजिक रूढ़ियों के सबसे बड़े किले जातपाँत और छुआछूत का नम्बर आया है और उसकी नींव हिल रही है। अगर्चे पुराने ख्यालों के लोग उसे बचाने के लिये बड़ी हायतोबा कर रहे हैं और आठ-आठ आँसू रो रहे हैं पर युग-परिवर्तन की जोरदार लहर के सामने उसका बच सकना नामुमकिन है और हम लोगों की ज़िन्दगी में ही यह जमीन पर गिरता नजर आयेगा।

धर्म की तो बात ही न पूछिये। दरअसल संसार में कभी सच्चा धर्म था भी या नहीं इसमें सन्देह है। क्योंकि जिसे आम तौर पर धर्म के नाम से पुकारा जाता है वह तो पंडित, पुरोहित, मौलवी, पादरी आदि लोगों की समाज पर हुकूमत थी। तरह-तरह से इन लोगों की पेट-पूजा को ही लोग धर्म समझते आये हैं। यही सबब है कि धर्म के नाम पर भी हमेशा से झगड़े होते रहे हैं। अगर दुनिया में सच्चा धर्म होता तो उससे मनुष्यों को सिवाय सुख के दुःख मिल ही कैसे सकता था। इस बात को अब लोग अच्छी तरह समझ गये हैं और सब देशों में धर्म का पेशा करने वाले लोगों का ज़ोर बड़ी तेज़ी से घट रहा है। नये युग में इस पेशे का बिल्कुल ख़ातमा हो जाना पक्की बात है, और ऐसा हो जाने के बाद ही शायद हमको उस धर्म के दर्शन

हो सकेंगे जिसका ताल्लुक मनुष्य के दिल और आत्मा से होगा न कि बाहरी ढोंगों से।

इन तमाम लक्षणों और चिन्हों को देख कर सब श्रेणियों के समझदार लोग इसी नतीजे पर पहुँचते हैं कि अब युग के बदलने का समय नज़दीक आ पहुँचा है। इस लिये जहाँ जाहिल या अनसमझ लोग इन चिन्हों को देख कर डरते या चौंकते हैं वहाँ समझदार या विवेकशील लोग समय के मुताबिक चलने की कोशिश करते हैं।

नया अवतार

इतना ही नहीं बहुत से धार्मिक विचारों के लोगों ने भी नये युग के आगमन को महसूस किया है। इसी का फल है कि हम हिन्दुओं में कल्कि अवतार, मुसलमानों में मेंहदी और ईसाइयों में मसीहा के प्रकट होने की चर्चा सुन रहे हैं। बर्मा के एक मठ में दस हज़ार बौद्ध साधू बुद्ध के नये अवतार का स्वागत करने की तैयारी कर रहे हैं। ईरान के बीस लाख बहाबी नवीन अवतार में पूरा विश्वास रखते हैं और उसका प्रचार कर रहे हैं। लाखों थियोसोफिस्ट भी यही बात कहते दिखलाई पड़ते हैं। इस तरह करोड़ों आदमी और पचासों संस्थायें जल्दी ही नये अवतार के होने और उसके द्वारा संसार में नया युग क़ायम किये जाने में विश्वास रखते हैं और इसके लिये तैयारी कर रहे हैं। इस बारे में कुछ समय हुआ नीचे लिखा मनोरंजक समाचार योरोप के एक धार्मिक अखबार में प्रकाशित हुआ था :—

"क्या ईसा मसीह ने फिर जन्म लिया है ? क्या सन् १९३६ में ही वह कहीं पैदा हुआ है ? इस सम्बन्ध में आजकल योरोप के अध्यात्मवादियों में बड़ी चर्चा हो रही है ? कुछ साल पहले मिश्र की पुरानी गुप्त-विद्याओं के जानकार मि० जार्ज बावेरी ने भविष्यवाणी की थी कि १४ सितम्बर १९३६ का दिन दुनिया के इतिहास में बहुत महत्व का समझा जायगा और उसी दिन से एक नया युग शुरू होगा। सन् १९२४ में रारीश नाम के जगत-प्रसिद्ध विद्वान तथा चित्रकार ने तिब्बत के एक लामा (साधु) से सुना था कि दुनिया की पार्थिव शक्ति के ऊपर धर्म की शक्ति की विजय चंवाला युग (सतयुग) में होगी जो कि जल्दी ही शुरू होने वाला है। उसने यह भी बतलाया कि १२ बरस पीछे (अर्थात् सन् १९३६ में) इन सिद्धान्तों को फैलाने के लिये दुनिया में एक अवतार या पैगम्बर प्रकट होगा। यहूदी लोगों का ख्याल है कि उनके धर्म ग्रंथों में बतलाया गया 'मुएरगजर' नाम का युग (अर्थात् सतयुग) जल्दी ही शुरू होगा। ईरान में अली के मानने वालों का भी ऐसा ही विश्वास है। जापानी लोगों का विश्वास है कि सन् १९३६ से 'अबातेरो' नाम का युग (सतयुग) शुरू हो जायगा।"

इस नये युग का असर संसार में अभी से पड़ने लग गया है और जैसा हम ऊपर बतला चुके हैं उसके कितने ही लक्षण दिखलाई दे रहे हैं। पर वह पूरी तरह कब तक आ जायगा यह सवाल पूछा जा सकता है । इस विषय में पुरानी मिसालों से यह

जान पड़ता है कि जब नया युग दरअसल शुरू होता है तो उससे पहले एक बार संसार में हद दर्जे की अशान्ति और मारकाट हो लेती है, जिसमें परिवर्तन के ज्यादातर विरोधियों का खात्मा हो जाता है या तकलीफें उठा कर उनके ख्यालात बदल जाते हैं। ऐसे मौक़े पर अक्सर प्राकृतिक उत्पात: जैसे भूचाल, तूफ़ान, अकाल आदि भी बड़े भयंकर रूप में होते हैं और उससे भी दुनिया की सफाई होने में मदद मिलती है। अगर हमारे धार्मिक ग्रंथों के शब्दों में कहा जाय तो जब अत्याचार और कष्टों के मारे मनुष्य-मात्र त्राहि-त्राहि करने लगते हैं तभी नया अवतार होता है और तभी नया युग शुरू होता है। श्रीकृष्ण जी ने भी इस बात को गीता में बहुत साफ तौर पर कहा है। उनका 'यदायदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवत भारतः' वाक्य सभी ने सुना है। इसके मुताबिक जब कभी धर्म की बहुत ही हानि हो जाती है अर्थात् जब दुनिया के लोग परोपकार दया, क्षमा आदि सद्गुणों को छोड़ कर जोर-जुल्म पर उतारू हो जाते हैं, अपना मतलब पूरा करने के लिये कमजोरों का गला काटने लगते हैं तो भगवान का अवतार या किसी महापुरुष का आविर्भाव होता है।

संवत २००० का महत्व

पर लोग उतावले होकर फिर सवाल करेंगे कि आख़िर यह सब कब तक होगा ? अगर्चे, जैसा कि कहा जाता है राजनैतिक घटनाओं के बारे में भविष्यवाणी करना नामुमकिन है, तो भी

इस सम्बन्ध में एक कल्पना हमारे मन में उत्पन्न होती है। हमारे विक्रम सम्वत् का दूसरा हज़ार ख़त्म होकर तीसरा हज़ार शुरू होने वाला है। सात वर्ष बीतने पर अर्थात् ईसवी सन् १९४३ में हम सम्वत् २००० को समाप्त करके तीसरे हज़ार में प्रवेश करेंगे। शायद हर रोज सम्वत् लिखने के कारण लोगों का ध्यान इस तरफ़ न गया हो, पर दरअसल यह एक बहुत बड़ी घटना है। इस देश पर विदेशियों के हमले और बड़े भयङ्कर युद्ध में उनको हराने के उपलक्ष्य में महाराज विक्रम ने यह सम्वत् जारी किया। जब इसका पहला हज़ार ख़त्म हुआ तो देश में फिर बड़ी उथल-पुथल मची और देश पराधीन होकर मुसलमानों की हकूमत शुरू हुई। अब दूसरा हज़ार ख़त्म होने पर अगर कोई बहुत बड़ी महत्वपूर्ण घटना हो जाय तो इसमें क्या ताज्जुब है।

अनहोनी घटनायें

कुछ लोगों का कहना है कि सम्वत् दो हज़ार में कल्कि अवतार का प्रकट होना बिल्कुल पक्का है। वे कहते हैं कि युग के बदलने और अवतार प्रकट होने के समय जैसी अनहोनी घटनायें हुआ करती हैं वैसी आजकल बहुत हो रही हैं। मिसाल के तौर पर हाल ही में अख़बारों में छपी कुछ बातें यहाँ दी जाती हैं:—

(१) इटावा के पास तथा और भी कई जगह खून के रङ्ग

की बारिश हुई। एकाध जगह तो डाक्टरों ने उसकी जाँच की और उसे असली ख़ून ही बतलाया।

(२) बिहार के एक कस्बे से एक गाय की ख़बर आई है जो कभी ग्याभिन नहीं हुई पर रोज कई सेर बढ़िया दूध देती है।

(३) मुजफ्फरपुर में एक आम के पेड़ से मनुष्य के कराहने की सी आवाज निकलती हुई सैकड़ों लोगों ने सुनी।

(४) जून १९३६ के सूर्य ग्रहण के अवसर पर एक गाय ने खाना पीना त्याग दिया और ग्रहण के बाद पहले की रखी हुई सानी भी नहीं छुई। अन्त में जब उसे हटा कर नई सानी की गई तभी उसने खाया।

(५) इलाहाबाद के पास एक गाँव में सिर्फ पाँच छः महीने के आम के पोधे में तीन चार फल लगे थे।

(६) शेखूपुरा (पंजाब) में फ़रवरी (१९३७) में एक रविवार के दिन लोगों ने दिन के चार बजे एक जगमगाता सितारा आसमान में देखा। यह बहुत देर तक एक जगह ठहरा रहा फिर बादलों में छुप गया।

(७) ११ अगस्त १९३७ को हिन्दी सामयिक पत्रों के पाठकों के परिचित पं० सूय नारायण जी व्यास ने विलायत जाते हुये मार्सेल्स के पास जहाज से दिन में चन्द्रमा को देखा जो खून की तरह लाल था। भारत के महान् ज्योतिषी बराहमिहिर के मत से ऐसा चन्द्रमा खून की बारीश होने का चिन्ह है। ऐसा ही

लाल रंग का पूरा चन्द्रमा ११ जुलाई को ज्यूरिच में देखा गया था। उसका फोटो भी अमरीका के एक अख़बार में छपा था।

(८) ३० जनवरी (१९३७) को पंजाब के हसनाबाद स्थान में सूर्य के गिर्द एक मण्डल सा दिखलाई दिया जो दिन भर वैसा ही बना रहा। एक बूढ़े आदमी ने बतलाया कि २४ साल पहले ऐसा ही चमत्कार देखने में आया था और उसके अगले साल ही योरोपीय महायुद्ध शुरू हो गया था।

(९) कोरिया में ८ जनवरी १९३६ को सुबह आसमान में एक मण्डल दिखाई दिया जिसमें रोशनी के तीन मंडल या घेरे थे। वह दो घण्टे तक दिखलाई देकर क़रीब ११॥ बजे मिट गये। कहा जाता है कि 'मंचूको' की स्थापना और लड़ाई के पहले भी ऐसा ही मण्डल देखा गया था। चीन के विद्वानों की राय में ऐसा मण्डल लड़ाई की सम्भावना जाहिर करता है।

इस तरह की घटनाओं को ढूँढ कर लिखा जाय तो एक लम्बी फेहरिस्त तैयार हो सकती है। ऐसी क़ुदरत के ख़िलाफ़ घटनाओं का हाल पढ़ कर और सुनकर लोगों में दिन पर दिन यह ख़याल जड़ पकड़ता जाता है कि सचमुच ही नया युग पास आ पहुँचा है और अब दुनिया में जरूर बहुत बड़ी उथल-पथल होगी।

हमारे यहाँ के पुराने धार्मिक ग्रन्थों और बाइबिल के समान संसार की दूसरी धार्मिक पुस्तकों की भविष्यवाणियों से भी यही जान पड़ता है कि सम्बत् २००० में बहुत बड़ा परिवर्तन

और मारकाट होकर दुनिया की हालत एक दम बदल जायगी। इन भविष्यवाणियों का हाल हम अन्त में लिखेंगे। पहले यह बतलाते हैं कि दरअसल इस वक्त संसार कैसी मुसीबत में फँसा है और चारों तरफ़ सर्वनाश की कैसी तैयारी हो रही है।

——लड़ाई के काले बादल क्षितिज पर मँडरा रहे हैं और खूनी तथा भयंकर संग्राम की सम्भावना बढ़ती जाती है। हर एक आदमी योरोप में चलने वाली हथियारबन्द फौजों के पैरों की आवाज़ सुन सकता है। हवाई जहाजों और बम बरसाने वाले जहाजों के बेड़े आसमान में उड़ रहे हैं। हर एक मुल्क की सरकार लड़ाई की तैयारी में जी जान से जुटी है, क्योंकि वह अब टाली नहीं जा सकती। हमें दुनिया की इन महत्वपूर्ण घटनाओं को भूलना न चाहिये। क्योंकि हमारे होनहार के लिये इन शासन-विधानों और कौंसिलों के चुनावों की बनिस्बत यह घटना बहुत ज्यादा महत्व रखती है।

—पं० जवाहर लाल नेहरू

सर्वनाश की तैयारी—

कुछ समय पहले एक हिन्दुस्तानी यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ेसर अर्थशास्त्र का विशेष अध्ययन करने के लिये इङ्गलैंड गये थे। अगर्चे उनका ख़ास उद्देश्य अपनी पढ़ाई पूरी करना ही था और राजनैतिक झगड़ों से उनको कोई सरोकार न था तो भी तमाम योरोप की हालत उनको बड़ी हलचल-पूर्ण जान पड़ी और क़दम-क़दम पर आने वाले ख़तरे के लक्षण दिखलाई पड़े। वहाँ से लौटने पर एक अख़बार के रिपोर्टर से बातें करते हुये उन्होंने कहा था:—

"योरोप में जिस बात का मुझे ख़ास तौर पर अनुभव हुआ वह उस महाद्वीप वालों की युद्ध की मनोवृत्ति है। यह मनोवृत्ति योरोप में साफ दिखलाई पड़ती है और एक बाहरी आदमी को भी उसका फौरन पता लग जाता है। इस समय योरोप बारूद की एक ज़बरदस्त मेगज़ीन बना हुआ है, सिर्फ एक चिनगारी पड़ने से वहाँ बीस साल पहले की घटना (महासमर) से भी ज्यादा भयंकर और नाश करने वाला दृश्य

दिखलाई पड़ सकता है।......योरोप में युद्ध का छिड़ना तय है, उसे कोई रोक नहीं सकता।"

इसी तरह की राय निःशस्त्रीकरण कान्फरेंस के सभापति स्वर्गीय हैंडरसन ने प्रकट की थी। 'लीग आफ़ नेशंस' से जर्मनी के अलग हो जाने पर आने वाले ख़तरे की कल्पना करके उन्होंने कहा था :—

"चाहे मौजूदा हालत में समझौता हो सकना कैसा भी मुशकिल क्यों न जान पड़ता हो, तो भी सभी मुल्कों की सरकारों को हथियारों की समस्या हल करने और अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति बनाये रखने की कोशिश करनी ही पड़ेगी। क्योंकि अगर जल्दी ही इसके लिये कोशिश न की जायगी तो हम बड़े ख़तरे में पड़ जायँगे। इस वक्त हमको सहयोग या कलह—अमन या लड़ाई दो बातों में से एक को चुनना पड़ेगा। या तो हमको धीरे-धीरे अपने हथियार बिल्कुल घटा देने होंगे या अपनी हिफ़ाजत और दूसरों पर हमला करने के लिये ज़ोरों से तैयारी शुरू करनी पड़ेगी।"

इङ्गलैंड के भूतपूर्व प्रधान मंत्री मि० लायड जार्ज की गिनती संसार के सबसे बड़े राजनीतिज्ञों में की जाती है। आपने 'अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति रक्षिणी सभा' के एक जलसे में बोलते हुए संसार की भयंकर दशा का चित्र इन शब्दों में खींचा था :—

"दुनिया की हालत बड़ी अजीब हो रही है और मैं नहीं कह सकता कि क्या होने वाला है। इसकी तन्दुरुस्ती बिल्कुल

ख़राब हो गई है। जब कोई आदमी बीमारी के सबब से कमज़ोर हो जाता है तो वह हर एक बात से डरने लगता है। कभी वह ठण्डी हवा से बचने को कोट का कालर लौटता है और कभी कहता है कि 'इस खिड़की को बन्द करो उस दर्वाजे को बन्द करो।' वह ताक़त के लिये तरह-तरह की पेटेण्ट दवायें खाता है पर इससे उस का खून ख़राब होता है, दिल कमज़ोर हो जाता है और शरीर पर बहुत बोझ पड़ जाता है। यही हालत आज तमाम दुनिया की हो रही है।"

ईसाइयों के एक बहुत बड़े सम्प्रदाय रोमन कैथलिकों के धर्मगुरू पोप भी मौजूदा हालत को योरोप ही नहीं तमाम संसार के लिये बड़ी बुरी समझते हैं। उनको डर है कि इसके सबब से मौजूदा ईसाई सभ्यता चौपट हो जायगी। उन्होंने 'इन्ट्रैंसियेंट' पत्र के रिपोर्टर से कहा था कि योरोपियन देशों की फ़ौजी नीति, खास कर स्त्रियों को फौज में दाख़िल करना, बहुत ही हानिकारक है। उन्होंने ऐसी राष्ट्रीयता अथवा देशभक्ति की भी निन्दा की जिसका मतलब किसी भी तरकीब से अपने मुल्क का महत्व बढ़ाना हो। क्योंकि ऐसी हालत में कमज़ोर देशों की आजादी हर्गिज क़ायम नहीं रह सकती और इससे दुनियाँ में मारकाट फैलना ज़रूरी है।

मुँह में राम बग़ल में छुरी

पर हम देखते हैं कि इन चेतावनियों और नेक-सलाहों का लड़ाई चाहने वाले देशों पर कुछ भी असर नहीं पड़ रहा है और

वे अपनी हिफ़ाज़त के उपायों और हथियारों के बढ़ाने में ऐसे लगे हुए हैं मानो उन पर कल ही हमला होने वाला है। दूसरी तरफ़ इन देशों के कर्ताधर्ता यह भी कहते जाते हैं कि वे लड़ना पसन्द नहीं करते और उनका इरादा अमन बनाये रखना ही है। जिस जापान को सब से ज़्यादा लड़ाकू बतलाया जाता है और जो अपने पड़ौसी चीन को हमेशा गिद्ध की तरह नोचता रहता है, उसके वैदेशिक मंत्री ने कुछ समय पहले अपने राष्ट्र को शान्ति-मन्दिर का सब से मजबूत पाया बतलाया था। जो हिटलर जर्मनी के हर एक नौजवान को सिपाही बना देने पर तुला है और जिसने देश की तमाम शक्तियों को लड़ाई की तैयारी में लगा दिया है वह भी अपने को शान्ति का पुजारी बतलाता है। रूस की लाल सेना की चारों तरफ़ बड़ी चर्चा है, पर वहाँ के कर्ता-धर्ताओं का कहना है कि वे अमन बनाये रखना ही चाहते हैं, क्योंकि उनकी आर्थिक और सामाजिक तरक्की का प्रोग्राम तभी पूरा हो सकता है जब कि संसार में शान्ति बनी रहे। अमेरिका ने योरोपियन देशों को बहुत सा कर्ज दे रखा है, जिसके वसूल होने की उम्मेद तभी की जा सकती है जब कि वहाँ लड़ाई झगड़ा न फैले। इङ्गलैण्ड का साम्राज्य इतना ज़्यादा बड़ा है और वह अपने घरेलू झमेलों में ही ऐसा उलझा रहता है कि वह लड़ने-भिड़ने की बात कभी पसन्द कर ही नहीं सकता।

बदगुमानी का सबब

इन एक दूसरे से उलटो बातों का मतलब क्या है ? क्या सबब है कि योरोपियन मुल्क लड़ाई की हानियों को जानते हुये भी उसकी तरफ़ बढ़ते चले जाते हैं ? इसका सब से बड़ा सबब उनका एक दूसरे को सन्देह की निगाह स देखना और एक दूसरे से जलना है। हर एक देश अपने मन में यह समझ रहा है कि उसका पड़ोसी छुपे तौर पर लड़ने की तैयारी कर रहा है और उसे बर्बाद करना चाहता है। अगर्चें सन् १९१४ वाले महासमर में हार जाने पर जर्मनी के तमाम हथियार तोड़-फोड़ दिये गये और उनका बनाया जाना भी रोक दिया गया तो भी फ्रांस के मन में बराबर यही बात घुसी रही कि जर्मनी के पास छुपे तौर पर बहुत सी सेना और लड़ाई का सामान मौजूद है। इस लिये वह अपनी फौजी ताक़त को बराबर बढ़ाता रहा और इस काम में उसने अरबों रुपया खर्च कर डाला। यही हालत जापान और रूस की है। सन् १९०४ की रूस-जापान की लड़ाई के बाद से जापान रूस को हमेशा के लिये अपना दुश्मन समझने लग गया है और जैसे ही रूस किसी तरह की तरक्की करता है या अपनी फ़ौज को मज़बूत बनाने की कोशिश करता है वैसे ही जापान के कान खड़े हो जाते हैं। वह जानता है कि रूस दुनिया का सब से बड़ा देश है और उसके पास किसी तरह के सरंजाम की भी कमी नहीं है। इस डर से जापान ने अपनी सारी ताक़त फ़ौजी तैयारी में लगा दी है और इसके लिये इतना
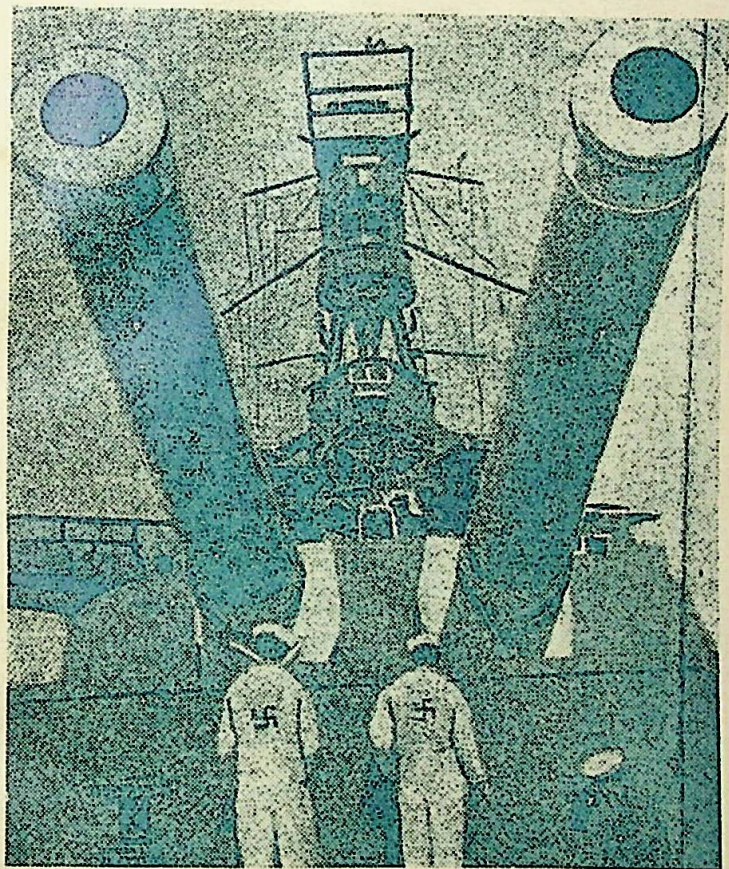
जर्मनी के एक हाल में बने जङ्गी जहाज़ पर ये भयङ्कर तोपें लगाई गई हैं। जर्मनी अब किसी भी प्रकार के हथियारों में दूसरों से पीछे नहीं रहना चाहता।

रुपया ख़र्च कर डाला है कि उसका ख़जाना खाली पड़ा है। इन सब से बुरी हालत मध्य-योरोप और बाल्कान के छोटे-छोटे राज्यों की है। ये हमेशा एक दूसरे से ईर्षा और चढ़ा ऊपरी करते रहते हैं। इनके झगड़ों का तमाम योरोप पर असर पड़ता है और इससे बड़े-बड़े राष्ट्रों में झगड़ा हो जाता है। हमारे पाठक जानते ही हैं कि सन् १९१४ का योरोपीय महायुद्ध इसी बाल्कान प्रायःद्वीप के एक छोटे से मुल्क सर्बिया के सबब से शुरू हुआ था। वहाँ के एक हत्यारे ने छिपे तौर पर आस्ट्रिया के राजकुमार को मार डाला और इस चिनगारी ने योरोप भर में आग लगा दी। आजकल ये छोटे-छोटे देश भी एड़ी से चोटी तक हथियारों से लदे हैं।

इस तरह तमाम छोटे-बड़े मुल्कों को लड़ने के लिये तैयार होते देख इङ्गलैण्ड और अमेरिका के समान बड़े मुल्कों को भी, जो दरअसल शान्ति बनी रहने में ही अपना फ़ायदा समझते हैं लाचार होकर अपनी फ़ौज और हथियार बढ़ाने पड़ते हैं। हालत कहाँ तक बिगड़ गई है इसकी सब से साफ़ मिसाल स्वीजरलैण्ड की है। यह मुल्क योरोप के बीच में बसा है और उसकी नीति हमेशा अमन की रही है। वह सच्चा प्रजातन्त्र-वादी देश है और उसने कभी किसी दूसरे देश पर कब्जा करने की कोशिश नहीं की। पिछले महायुद्ध में भी वह पूरी तरह से अलग रहा था। पर ऐसे मुल्क को भी अब फ़ौजी

ताक़त बढ़ाने की चिन्ता लग गई है। इस बारे में कुछ समय पहले अख़बारों में छपा था :—

"मालूम हुआ है कि फेडलर चैम्बर में जल्दी ही एक बिल पास किया जायगा जिसके मुताबिक १० करोड़ फ्रांक (क़रीब ८॥ करोड़ रु०) स्वीजरलैण्ड की रक्षा के लिये सेना का पुनर्सङ्गठन करने में खर्च किया जायगा। इसका सबब यह है कि थोड़े दिन पहले लासेन के एक अख़बार ने यह ख़बर छापी थी कि जर्मनी के जनरल स्टाफ ने एक स्कीम तैयार की है जिसके मुताबिक जर्मन फ़ौज स्वीजरलैण्ड के रास्ते फ्रांस के किलों पर पीछे की तरफ से हमला करेगी। इस ख़बर पर इन दिनों स्वीजरलैण्ड में बड़ी बहस हो रही है। अगर्चे जर्मन सरकार ने इस ख़बर को ग़लत बतलाया है तो भी स्वीजरलैण्ड वाले अपने बचाव के लिये तैयार हो जाना चाहते हैं।"

हथियारों और फ़ौज की बढ़ती

इस तरह अगली लड़ाई के डर से योरोप और अमरीका के सभी देश ज़ोरों के साथ अपनी फ़ौज और लड़ाई के सामान को बढ़ा रहे हैं। जानकार लोगों का कहना है कि इस वक्त योरोपियन मुल्कों की फ़ौजों की तादाद कुल मिला कर ३ करोड़ है जब कि पिछले महासमर में वह सिर्फ दो करोड़ थी। इसी तरह समुद्री फौज और जहाज़ों की तादाद भी बहुत बढ़ रही है। इस बारे में इङ्गलैण्ड की पार्लामेन्ट में भाषण करते हुये मि० लायड जार्ज ने कहा था :—

"सन् १९१४ में हमारे नाशक जहाजों (डेस्ट्रायर्स) का परिमाण १,३५००० टन था जो इस समय बढ़ कर १,९७००० हो गया है। इसी तरह फ्रांस के नाशक जहाजों का परिमाण ३५००० टन से बढ़ कर १,९८००० टन ; अमरीका का ४०००० टन से बढ़ कर २,५९००० टन और जापान का ४,४७० टन से १,२५००० टन हो गया है। जब हम गोताखोर नावों पर निगाह डालते हैं तो उनकी भी ऐसी ही हालत जान पड़ती है। सन् १९१४ में हमारी समुद्री फौज में गोताखोर नावों का परिमाण ४७००० टन था जो अब ६१००० टन हो गया है। फ्रांस के पास ३३००० टन के बजाय ९७००० टन की गोताख़ोर नावें हैं। अमरीका में उनका परिमाण १६००० टन से ७७००० टन और जापान में ३२६४ टन से ७७००० टन हो गया है। शायद इटली के पास भी इङ्गलैण्ड से ज्यादा गोताख़ोर नावें हैं।"

इस एक बात से इसका कुछ अन्दाज़ लगाया जा सकता है कि पिछले कुछ सालों में योरोपियन देशों में फ़ौजी सामान कितना बढ़ा है। यह हिसाब सिर्फ़ उन चीज़ों का है जिनको छुपाया नहीं जा सकता। पर इन मुल्कों ने कितनी मशीनगनें, बन्दूकें और तोपें बना रखी हैं तथा कितना गोला-बारूद जमा कर रखा इसका तो किसी को पता ही नहीं है। अब जब से जापान और जर्मनी ने राष्ट्रसंघ को छोड़ कर लड़ाई की तैयारी खुल्लम-खुल्ला शुरू कर दी है तब से तमाम मुल्कों के हथियार बनाने वाले कारखाने दिन रात काम कर रहे हैं। हथियार बनाने वाली

कम्पनियों के शेयरों की कीमत दुगनी-तिगुनी हो गई है और बराबर बढ़ती ही जाती है। फ्रांस के तोप बनाने वाले जिस कारख़ाने की पूँजी पहले २ करोड़ ८० लाख फ्रांक थी वह बढ़ कर १८ करोड़ हो गई है। इसी तरह रासायनिक युद्ध की सामग्री (गैस आदि) बनाने वाले कारख़ाने की पूँजी ६० लाख से बढ़ कर ३० करोड़ फ्रांक और हवाई जहाज़ों के एक कारख़ाने की ९० लाख से बढ़ कर ८ करोड़ ८० लाख फ्रांक हो गई है। यही हालत जर्मनी, इङ्गलैण्ड इटली आदि की है। इंगलैण्ड ने तो हाल ही में लड़ाई के सामान की तैयारी के लिये २ अरब पौण्ड ख़र्च करने की स्कीम मंजूर की है जिससे चारों तरफ़ हलचल मच गई है।

जासूसों की कार्रवाइयाँ

लड़ाई का डर पैदा होने के साथ ही तमाम देशों में जासूसों की कार्रवाइयाँ जोरशोर से शुरू हो गई हैं और यह लड़ाई के जल्दी ही होने का एक पक्का सबूत है। फ्रांस में तो जर्मनी के जासूसों का जाल सा फैला है और उनकी तादाद देखकर सरकार घबड़ा उठी है। ये जासूस ख़ास तौर पर फ्रांस की गुप्त किलेबन्दी, जिसे मैगीनाट लाइन, कहते हैं, और नये हथियारों का भेद जानने की कोशिश कर रहे हैं। इस बारे में एक अख़बार में छपा था:—

"पिछले दो एक वर्षों से शत्रु के कान और आँखें बहुत उतावलेपन से काम कर रहे हैं। हाल ही में इन जासूसों की

तादाद इतनी ज्यादा हो गई थी कि उसे देख कर डरना पड़ता है। कुछ ही महीनों में ५१ जासूसों को क़सूर साबित हो जाने पर सख्त क़ैद की सज़ा दी गई।"
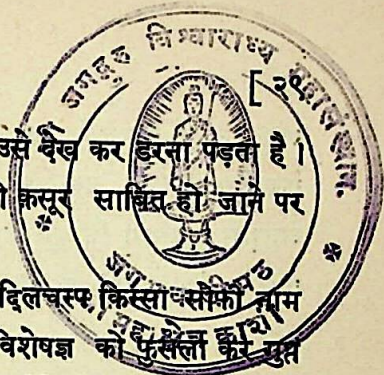
इन जासूसों में ख़ास तौर पर दिलचस्प क़िस्सा सोफ़ी नाम की स्त्री का है। उसने एक फ्रांसीसी विशेषज्ञ को फुसला कर गुप्त किलेबन्दी के एक भाग का पूरा नक़शा देने को राज़ी कर लिया। वह उसे जर्मन जासूसों के बड़े अफसर के पास लेगई जिसने कहा कि अगर वह (विशेषज्ञ) फ्रांस की नई मशीनगन का, जो बहुत ही कारगर बतलाई जाती है, पूरा हाल बतला सकेगा तो उसे ५ हज़ार पौण्ड इनाम दिया जायेगा। थोड़े ही दिनों बाद हथियार-खाने से एक पूरी मशीनगन ही गायब कर दी गई। पर जब ये लोग उसे जर्मनी की सीमा की तरफ़ ले जा रहे थे तो फ्रांस के जासूसों ने उनको रोक लिया और बारह शख़्श गिरफ़ार किये गये।

फ्रांस की सरकार ने हाल ही में बतलाया है कि जर्मनी के जासूसी-महकमे के तीन हजार आदमी बाहरी मुल्कों में काम कर रहे हैं और इनके लिये वहाँ की सरकार तीस लाख पौण्ड खर्च करती है। रूस, फ्रांस, इङ्गलैण्ड और बेल्जियम में इनका जोर बहुत अधिक है। इस महकमे की तरफ से कुछ रकम दूसरे मुल्कों में पढ़ने के लिये जाने वाले नवयुवकों के लिये खर्च की जाती है। ये लोग उस देश के व्यापारिक भेदों को जानने की कोशिश करते हैं। इङ्गलैण्ड ने जब से फौजी तैयारी की नई

स्कीम बनाई है तब से वहां जासूसों की भरमार हो रही है। कहा जाता है कि इनकी तादाद दो हज़ार से कम नहीं है। इन जासूसों के सिवा विदेशी फर्मों में काम करने वाले नौकरों के ज़रिये भी लड़ाई के भेदों का पता लगाने का काम किया जा रहा है।

रूस का जासूसी विभाग संसार में सबसे बड़ा बतलाया जाता है और वहाँ दूसरे मुल्कों के ज़ासूस भी सबसे ज्यादा पकड़े जाते हैं। वहाँ के जासूसी विभाग में वे क्रान्तिकारी रखे गये हैं जो जार के जमाने में बरसों तक पुलिस को चकमा देकर काम कर चुके हैं। उनका दावा है कि हम जासूसों की तमाम चालों से पूरी तरह वाकिफ हैं और हमारे सामने किसी भी देश के जासूसों की दाल नहीं गल सकती।

आबादी बढ़ाने की कोशिश

योरोप के देशों में एक बड़े ताज्जुब की बात यह देखने में आ रही है कि जहाँ कुछ साल पहले राजनीतिज्ञ और नेतागण आबादी को घटा कर एक खास हद के भीतर रखने की कोशिश करते थे वहाँ आज ज्यादा से ज्यादा बच्चे पैदा करने पर ज़ोर दिया जाता है। इटली, जर्मनी और फ्रांस इन तीन देशों में तो इस बारे में होड़ सी हो रही है। तीनों अपने यहाँ के लोगों को तरह-तरह से उत्साहित करके आबादी बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। इस बारे में एक अंग्रेज लेखक ने कहा है :—

"अगर आज हथियारों को बढ़ाने के लिये योरोपियन मुल्कों

में चढ़ाऊपरी हो रही है तो आबादी की बढ़ती में भी चढ़ाऊपरी होना लाजिमी है। लड़ाई में हथियारों का महत्व बहुत माना जाता है पर आदमियों का महत्व उससे भी ज्यादा है। इसलिये योरोपियन मुल्क एक आवाज से कह रहे हैं—'हमको बहुत से बच्चे दो।' वे अपना ख़ज़ाना खाली होने पर भी इस काम के लिये धन खर्च करने को तैयार हैं।

"मिसाल के लिये जर्मनी की देखादेखी फ्रांस ने अपने यहाँ के कारखाने वालों के लिये एक नया क़ायदा बनाया है कि वे बच्चे पैदा करने के लिये अपने मजदूरों को रूपये से मदद करें। इस क़ायदे के मुताबिक़ अलग-अलग शहरों में मदद की रकम कम या ज्यादा रखी गई है। पर मोटे हिसाब से पहले बच्चे के लिये ७॥ शिलिङ्ग (५ रु०) माहवारी देने का क़ायदा है। इसके बाद हर एक बच्चे के लिए यह रकम बढ़ती जायगी। चार बच्चों के बाप को ३७॥ शिलिङ्ग से ५० शिलिङ्ग तक मिल सकेगा। ख़ास हालत में एक बच्चे के लिये ३० शिलिङ्ग माहवारी तक दिया जा सकता है।"

लड़ाई के हिमायती

यह भी एक मजेदार बात है कि जहाँ ज्यादातर सभ्य और भले आदमी लड़ाई को बुरा समझते हैं कुछ लोग ऐसे भी हैं जो लड़ाई को अच्छा बतलाते हैं। कुछ कहते हैं कि इससे दुनिया को बहुत फ़ायदा पहुँचता है। आजकल चारों तरफ़ लड़ाई की सनसनी देखकर ऐसे लोग खुल्लमखुल्ला अपने मत का प्रचार

करने लगे हैं। इनमें से एक 'बङ्गाल लैंसर्स' नामक मशहूर उपन्यास के लेखक मेजर यीट्स ब्राउन हैं। आप एक लेख में जिसका शीर्षक है—"मैं युद्ध में क्यों विश्वास रखता हूं"—कहते हैं:—

"मैं यह नहीं मान सकता कि मनुष्यों में से कभी लड़ने की आदत मिटाई जा सकती है, क्योंकि जिस चैतन्य पदार्थ में लड़ाई का गुण नहीं है वह मरा हुआ अथवा जराजीर्ण माना जाता है। कशमकश अथवा तनातनी का नाम ही जीवन है। ईश्वर ने संसार को जिस तरह बनाया है उसके मुताविक हर एक आदमी, हर एक देश, हर एक विश्व अथवा ब्रह्माण्ड में एक दूसरे के विरुद्ध गुणों का पाया जाना ज़रूरी है। मेरी राय में परमात्मा ने लड़ाई को उसी प्रकार बनाया जिस तरह उसने बिजली और आकर्षण शक्ति की सृष्टि की है। पर उसने मनुष्य को यह ज्ञान और अधिकार दिया है कि वह इन ताक़तों से इस तरह काम ले कि जिससे ये नाश करने के बजाय लाभ पहुँचावें। हम 'लीग आफ़ नेशंस' क़ायम कर सकते हैं पर इससे अहंकारवश हमको यह नहीं समझ लेना चाहिये कि वह परमात्मा की माया से भी ज्यादा ताक़तवर है।............इसके सिवा लोग लड़ाई के ख़तरे को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करते है। अगर तमाम योरोप आपस में लड़ने लग जाय तो भी इससे सभ्यता का नाश नहीं हो सकता जैसा कि हमारे राजनीतिज्ञ अक्सर हमसे कहा करते हैं। सभ्यता का पौधा ऐसा चिमड़ा है कि वह बड़ी-बड़ी कठिनाइयों
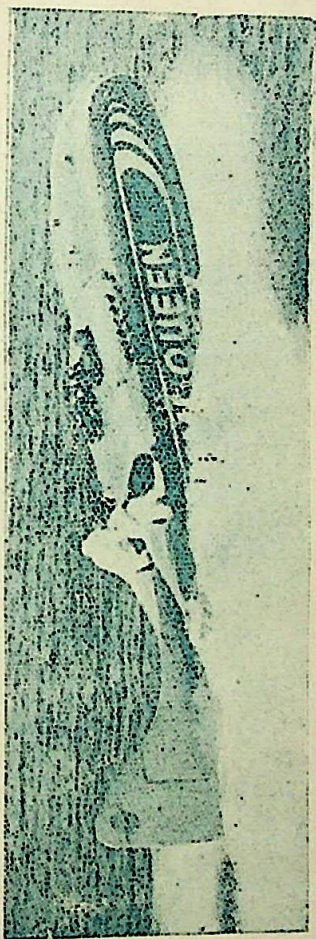
एक नई क़िस्म की टारपेडो

पानी के जहाज़ों को नष्ट करने के लिये टारपेडो काम में लाये जाते हैं। यह नई क़िस्म की ज़ोरदार टारपेडो भारी से भारी जहाज़ के पेंदे में लगते ही बड़ा सा छेद कर देता है, जिससे वह चन्द मिनिटों में डूब जाता है।

को पार कर चुका है।............यह सच है कि पिछले महायुद्ध में बहुत से लोगों को तकलीफ़ उठानी पड़ी पर यह भी सच है कि नये नये कामों के मिलने से लाखों आदमियों को ऐसा आनन्द भी मिल सका जो पहले उनको कभी नहीं मिला था। हम शान्ति की पुकार मचाते हैं, पर उससे हमको क्या मिलेगा? यही कि हम सदा कारख़ानों और आफ़िसों में पिसते हुए मर जायँ।"

जर्मनी के जनरल लुडेनडर्फ की भी ऐसी ही राय है। वे फ़ौजी मामलों के बहुत बड़े जानकार माने जाते हैं और पिछले योरोपियन महायुद्ध में जर्मन फौजों के क्वार्टर-मास्टर-जनरल थे। आजकल भी जर्मनी में उनकी बड़ी इज़्ज़त है और उनके सिद्धान्तों को सभी लोग मानते हैं। उन्होंने हाल ही में एक पुस्तक 'सर्वग्राही युद्ध' (टोटैलिटेरियन वार) नामकी लिखी है। इस पुस्तक का सारांश इन शब्दों में दिया जा सकता है:—

'युद्ध को साधन समझना ठीक नहीं। वह खुद ही एक उद्देश्य है, देश के बड़प्पन को प्रकट करने के लिये सबसे भारी काम है। उसको सिर्फ एक काम या ढङ्ग ही नहीं समझना चाहिये बल्कि वह जाति की हिफ़ाजत के लिये आदमी का बहुत बड़ा फर्ज है। जब कोई जाति इस असूल को पूरी तरह से समझ कर दूसरी जाति के ख़िलाफ़ लड़ाई छेड़ती है, तो उसका कभी ख़ात्मा नहीं होता। वह जीने और मरने का संग्राम होता है। ऐसी लड़ाई का दायरा सिर्फ फौजों तक ही नहीं रहता बल्कि तमाम मुल्क और उसमें रहने वाले सभी छोटे-बड़े आदमी उस

घेरे के भीतर आ जाते हैं। यह लड़ाई दुश्मन के शरीर के खिलाफ़ ही नहीं बल्कि उसकी आत्मा के खिलाफ़ भी होती है। इस लिये उसमें प्रचार-कार्य को भी वैसा ही जरूरी समझना चाहिये जैसा कि जहरीली गैस को। देश भर की तमाम कोशिश लड़ाई की निगाह से ही होनी चाहियें। मुल्क की तमाम चीज़ों और लोगों की शारीरिक और मानसिक ताक़तों को सिर्फ इसी इरादे को पूरा करने के लिये काम में लाना चाहिये। दरअसल किसी भी जाति के लिये लड़ाई ही जीवन की सब से बड़ी सच्चाई है। इस लिये शान्ति के समय भी हम जो कुछ काम करते हैं, उसका उद्देश्य इस सच्चाई अर्थात् लड़ाई के लिये तैयार होना ही समझना चाहिये। युद्ध को नीति का सहायक समझना भूल है, असल में नीति ही युद्ध की सहायक और एक जरिया है।"

हमारे देश में भी ऐसे ख़्यालात के लोगों की कमी नहीं है। किसी ऐसे ही सज्जन ने कुछ दिनों पहले 'लीडर' में एक पत्र छपाया था जिसमें उन्होंने जर्मनी के डिक्टेटर के कार्यों का समर्थन करते हुये लिखा था :—

"मौजूदा उलझन की हालत में एक बात और भी ध्यान देने की है। अब सब मुल्कों में हथियार बनाने की होड़ होने लगेगी। इससे साइंस और कारीगरी की तो तरक्की होगी ही हर एक देश में लाखों वेकार लोगों को रोज़गार मिल जायेगा। अगली लड़ाई की तैयारी शुरू होने से हर एक कारबार जोरों

से चलने लगेगा। पिछले महायुद्ध ने इस बात को ऐसी अच्छी तरह साबित कर दिया है कि अब उसके लिये ज्यादा दलीलें पेश करना बेकार है। इससे दुनिया की माली हालत बहुत सुधर जायगी। सभ्यता के इतिहास में संसार कभी इतना मालदार न था जितना कि सन् १९१४ के आरम्भ में था। मैं तो उस आनन्द के ज़माने को फिर से देखने की इच्छा रखता हूँ।"

———

——इस समय राजनैतिक क्षेत्र की हालत हर रोज बदल रही है और इस सबब से आगे होने वाली घटनाओं के सम्बन्ध में भविष्यवाणी कर सकना बहुत ही मुशकिल है। पर इसमें शक नहीं कि अगर लड़ाई होगी तो वह जर्मनी के चैलेंज के कारण ही होगी, क्योंकि वह मध्य और पूर्वीय योरोप में अपने पहले दर्जे को हासिल करना चाहता है। पर क्या लड़ाई सचमुच होगी ? यह बात खास तौर इङ्गलैण्ड के ऊपर आधार रखती है। अगर जर्मनी को मालूम हुआ कि इङ्गलैण्ड और फ्रांस—खास कर इङ्गलैण्ड इस युद्ध में शामिल न होंगे तो योरोप में लड़ाई का होना ऐसा ही निश्चय है जैसा कि सूरज का निकलना।

—सुभाषचन्द्र बोस

जापान की ख़तरनाक स्कीम—

आजकल अख़बारों में जिस मुल्क की फ़ौजी तैयारियों की सबसे ज्यादा चर्चा है वह जापान ही है। जो जापान आज से ५० साल पहले एशिया का एक बहुत ही मामूली मुल्क समझा जाता था आज उसकी ताक़त इतनी बढ़ गई है कि दुनिया का कोई भी मुल्क अकेला उसका मुक़ाबला करने की हिम्मत नहीं रखता। उसने दुनिया भर के मुल्कों के विरोध की परवाह न करके मंचूरिया पर कब्जा कर लिया और आज संरक्षक के रूप में उसका मालिक बन बैठा है। मंचूरिया के ही सबब से उसका रूस से झगड़ा हो गया। पर इसका उसे कुछ भी ख़्याल नहीं। चीन के सवाल को लेकर इङ्गलैण्ड और अमरीका उससे नाराज़ हैं पर तो भी वह अपनी ही बात पर अड़ा है। उसकी सालाना आमदनी १३॥ करोड़ पौंड है जब कि ख़र्च २२॥ करोड़ तक पहुँच चुका है। इसलिये कई साल से उसे ९ करोड़ पौंड सालाना कर्ज लेकर काम चलाना पड़ता है। अब यह कर्ज ६० करोड़ पौंड से ऊपर पहुँच गया है।

जापान की माली हालत इतनी ख़राब हो जाने का सबब फ़ौज का बढ़ा हुआ ख़र्च और चीन से लड़ाई छेड़ना ही है।

आबादी का सवाल

जापान किस लिये दुनिया भर की मुख़ालफ़त करने को तैयार हो गया है इसके लिये हमको उसकी आबादी पर निगाह डालना चाहिये। इसमें ज़रा भी शक नहीं कि वह दुनिया में सबसे घनी बस्ती वाला मुल्क है। अगर वहाँ की खेती के लायक जमीन का हिसाब लगाया जाय तो मालूम होता है कि एक वर्गमील में २७७४ आदमी बसते हैं। दुनिया का कोई मुल्क इससे ज्यादा घना बसा नहीं है। जापान के बाद हालैण्ड का नम्बर है पर वहाँ एक वर्गमील में सिर्फ १००० आदमी रहते हैं। इटली में ८१९, जर्मनी में ८०६ और अमरीका में सिर्फ २०३ आदमी प्रति वर्गमील बसते हैं।

जापान की आबादी हर साल ७॥ लाख के हिसाब से बढ़ रही है। पिछले १२ बरसों में वहाँ ८० लाख आदमी बढ़ गये हैं। पिछले पचास वर्षों में जापान की आबादी ३॥ करोड़ से बढ़ कर सात करोड़ हो गई है। ऐसी हालत में साफ़ जाहिर है कि या तो अपनी बढ़ती हुई आबादी के लिये जापान को कोई नया मुल्क ढूँढ़ना पड़ेगा या उसको किसी दूसरे तरीके से बर्बाद होना पड़ेगा।

एशियाई सल्तनत का स्वप्न

यह समझना बड़ी भूल होगी कि जापान चीन के कुछ भाग

को लेकर ही राजी हो जायगा। उसके इरादे बहुत बढ़े-चढ़े हैं और वह तमाम एशिया पर अपना सिक्का जमाने का सपना देख रहा है। इन दिनों वहाँ फौज वालों का बोलबाला है जिनका इरादा इटली के फैसिस्ट या जर्मनी के नाजी दल से मिलता है। इस दल का मुखिया जनरल अराकी है, जिसने कुछ दिन हुए अपने पद से स्तीफा दे दिया था। पर उसका असर अब भी ज्यों का त्यों है। वह अपनी नीति के बारे में यहाँ तक कट्टर है कि जो सरकारी हाकिम उसके मुताबिक चलने को राज़ी नहीं होते वे उसके दल के छुपे हत्यारों के हाथों मारे जाते हैं। यह नीति तमाम दुनिया और ख़ास कर एशिया के लिये कैसी ख़तरनाक है इसका अन्दाज इङ्गलैण्ड के 'डेली हेरल्ड' अख़बार में प्रकाशित इस लेख से लग सकता है :—

"जनरल अराकी की नीति 'कोटा' (राजमार्ग) कहलाता है। इसका मतलब है अपने देश में लोगों को दबाना और विदेशों में हमला करना। जनरल अराकी ने इस बात पर ज़ोर दिया था कि जापान की जहाज़ी सेना को तमाम सुलहनामों की शर्तों से छूट जाना चाहिये। उसी ने जापान के 'लीग आफ़ नेशंस' से अलग होने का निश्चय किया था। वह फौज के लिये बराबर ज्यादा खर्च करने पर जोर देता रहता है यद्यपि सरकारी खजाने का दिवाला निकल रहा है। उसका कहना है कि माली हालत की फिक्र करना फिजूल है सिर्फ मचूरिया और जेहोल पर जापान का कब्जा हो जाने से उसका दिल नहीं भरा है बल्कि वह तमाम

एशिया में जापानी सल्तनत क़ायम करने का सपना देखता है। वह कहता है कि गोरे लोगों ने एशिया के पूर्वी देशों को दबा रखा है। पर अब जगा हुआ और मुस्तैद जापान उनकी दाल नहीं गलने दे सकता और न वह उनकी जबर्दस्ती बरदाश्त कर सकता है। वह रूस के साथ लड़ाई छेड़ कर व्लाडीवोस्टक और मङ्गोलिया पर कब्ज़ा करने का इरादा भी रखता है। उसके ख़्याल पागलपन के समझे जा सकते हैं पर वे दुनिया के लिये बड़े ख़तरनाक हैं।"

जापान में 'ब्लैक ड्रैगन सोसाइटी' (काले दैत्यों की सभा), नामकी एक गुप्त-सभा बहुत समय से क़ायम है जिसके मेम्बर जापानी सल्तनत को फैलाने के लिए हमेशा मरने मारने को तैयार रहते हैं। ये लोग अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये इतने कट्टर और अन्धविश्वासी होते हैं कि दूसरे देशों को बदनाम करने की गरज से अपने ही मित्रों को मार डालते हैं। कहा जाता है कि चीन पर इल्जाम लगाने के लिये ऐसी ही कारवाई की गई थी। जापान में कई बार जो नर्म विचारों के राजनीतिक अधिकारियों का खून किया गया था वह भी इन्हीं लोगों का काम बतलाया जाता है। अपनी जान सहज ही में अपने हाथों दे देना तो सभी जापानी जानते हैं पर इस सभा के मेम्बर तो इस निगाह से बड़े ही ख़तरनाक होते हैं और इसलिये उनसे दुनिया के सभी मुल्क डरते हैं।

अपने मतलब को पूरा करने के लिये जापान ने एक एशियाई

राष्ट्र-संघ बनाने का ढोंग रचा है। इस संघ का पहला जलसा कुछ समय पहले मन्चूरिया में हुआ था। कहा जाता है कि उसमें चालीस मुल्कों के प्रतिनिधि इकट्ठे हुए थे। उन लोगों ने एशिया को गोरे लोगों की लूट और जुल्मों से छुड़ाने का प्रस्ताव पास किया। पर सवाल यह है कि अगर जापान की पालिसी ऐसी ही स्वार्थपूर्ण बनी रहेगी और गोरे लोगों के बदले में वह एशिया को लूटने लगेगा तो इससे एशिया वालों का क्या फ़ायदा होगा ?

सल्तनत को फैलाने की कोशिश

जैसा हम बतला चुके हैं अपनी इस साम्राज्यवादी नीति के सबब से जापान ने क़रीब-क़रीब सभी बड़े-बड़े मुल्कों से दुश्मनी पैदा करली है। रूस के साथ तो उसकी इतनी तनातनी हो गई है कि किसी भी समय उन दोनों में छिड़ सकती है। अभी तक तो ये दोनों पूर्वीय मंचूरिया रेलवे को लेकर झगड़ा करते थे। अब उसका झगड़ा ख़त्म हो गया तो मंगोलिया का सवाल उठाया गया है। पर दरअसल ये झगड़े के ऊपरी सबब हैं। असली बात यह है कि अपना राज्य बढ़ाने के लिये जापान को रूस और चीन के सिवा दूसरा कोई मुक़ाम नज़र नहीं आता। एक तरफ़ तो जापान में इतने आदमी भरे हैं कि उनको साँस लेना मुश्किल हो रहा है और दूसरी तरफ़ सामने ही चीन और रूस में सैकड़ों मील लम्बी चौड़ी जमीनें खाली पड़ी हैं। इन दोनों मुल्कों के पास ऐसे साधन नहीं कि जल्दी उनको बसा सकें

पूर्वीय एशिया का युद्ध-चक्र

इस नक्शे से पाठक चीन-जापान युद्ध की स्थिति बहुत कुछ समझ सकेंगे। अगर जापान को वहाँ पर अपने इरादे में सफलता मिली तो वह सहज में अङ्गरेज़ों और अमरीका के अधिकारयुक्त प्रदेश जैसे हांककांग, फिलीपाइन, सिंगापुर और आस्ट्रेलिया आदि की तरफ बढ़ सकेगा यह इससे स्पष्ट है ।

और उनकी तरक्की कर सकें। यह देख कर जापान के मुँह में पानी भर आता है कि क्यों न यह जमीनें मुझे मिल जायँ और मैं इनको थोड़े ही वक्त में अपनी होशियारी और मेहनत से स्वर्ग का बगीचा बना दूँ। इसमें शक नहीं कि जापानी लोग इस वक्त मेहनत अक्लमन्दी, होशियारी और साहस में बहुत बढ़े-चढ़े हैं। पिछले पच्चीस साल में उन्होंने मंचूरिया के उजाड़ मुल्क को जैसा हरा-भरा बना दिया है और वहाँ से व्यापार और कल-कारख़ानों की जैसी तरक्की की है वह उन्हीं का काम है। जहाँ पहले जगली जानवरों की मादें और डाकुओं की खोहें बनी थीं वहाँ अब लाखों आदमियों से भरे शहर, बिजली की रोशनी, चौड़ी सड़कें, बड़े-बड़े पार्क, थियेटर, सिनेमा, मोटरें आदि दिखलाई पड़ते हैं।

पर जापानी बहुत होशियार और तरक्की करने वाले हैं इस लिये कोई उन्हें अपना घर तो नहीं सौंप सकता। वैसे जापानी लोग चाहें तो किसी जगह जाकर बसें और दूसरे लोगों की तरह रोजी पैदा करते हुए वहाँ की तरक्की करें तो इसमें कोई बुराई की बात नहीं। पर जापान को तो इस वक्त अपनी ताक़त का घमण्ड है कि वह जहाँ रहेगा मालिक बन कर ही रहेगा। इस बारे में एक योरोपियन लेखक का कहना है:—

"जापान से जो लोग दूसरे मुल्कों में बसने जाते हैं उनसे इस बात की उम्मेद की जाती है कि वे तमाम चीजें अपनी मातृ-भूमि से ही मँगाएँगे। इस तरकीब से जापानी लोग जहाँ कहीं

जाकर बसते हैं वहीं जापानी व्यापार की जड़ जम जाती है। सच तो यह है कि परदेश जाकर बसने वाले जापानियों से निजी तौर पर यह शर्त सी करा ली जाती है कि वे जापानी व्यापार की भलाई का हमेशा ख्याल रखेंगे। इतना ही नहीं जहाँ कहीं जापानी लोग खेती-बारी अथवा मज़दूरी के लिये भी जाते हैं वहाँ उनके साथ ही जापानी व्यापारियों का एक दल भी पहुँचता है और अपने स्वजातियों की मदद से वहाँ के बाजार पर कब्जा करने की कोशिश करता है।" इस तरकीब से जापान हवाई टापू को जो अमरीका के कब्जे में है एक तरह से अपना उपनिवेश बना चुका है और फिलोपाइन में भी ऐसी ही कोशिश कर रहा है।

इंगलैण्ड से मनमुटाव

रूस और अमरीका से तो जापान की तनातनी बहुत दिनों से चली आती है और कई बार झगड़े की नौबत भो आ चुकी है। पर ताज्जुब की बात यह है कि अब वह इङ्गलैण्ड को भी अपना दुश्मन समझने लगा है। सच पूछा जाय तो जापान को आगे बढ़ाने वाला और मदद देने वाला इङ्गलैण्ड ही है। अगर उसने जापान को अपनी सल्तनत में व्यापार करने का सुभीता न दिया होता और राजनीतिक झगड़ों में वह हमेशा उसकी तरफ़दारी न करता तो जापान शायद ही इस बड़े दर्जे को पा सकता। पर अब जापान का व्यापार इतना बढ़ गया है कि इङ्गलैण्ड से खदबखद उसका मुक़ाबला हो जाता है। उसने तरह-

तरह के मुनासिब और ग़ैरमुनासिव तरीकों से अपने माल को इतना सस्ता कर दिया है कि हिन्दुस्तान और दूसरे उपनिवेशों की तो क्या बात खुद इङ्गलैण्ड में जापानी माल बेहद सस्ता बिक रहा है और अङ्गरेज व्यापारियों के छक्के छुड़ा रहा है। हालत कहाँ तक गम्भीर हो गई है इसका पता लंकाशायर के एक मशहूर फ़र्म के मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर के नीचे लिखे वयान से लग सकता है :—

"जापान ने हमारी सल्तनत के बाजारों पर ही कब्जा करने की कोशिश नहीं की है बल्कि ख़ुद इङ्गलैण्ड के बाजार में हमारी बोलती बन्द कर दी है। अङ्गरेज़ दुकानदार जापानी माल को खरीदना और बेचना हर्गिज नहीं चाहते पर जापानी चीजों का दाम इतना सस्ता कर दिया गया है कि हमको झक मार कर उन्हें लेना पड़ता है। मिसाल के तौर पर इङ्गलैण्ड के बने रबर के खिलौने जहाँ १२ शिलिङ्ग दर्जन के हिसाब बिकते हैं जापानी २ शिलिङ्ग में ही एक दर्जन मिल जाते हैं। तैरनेवाले बड़े खिलौने अंगरेजी १२६ शिलिंग दर्जन और जापानी ३६ शिलिंग दर्जन बिकते हैं। नहाने की रबर की टोपियाँ इङ्गलैण्ड की बनी १०६ शिलिंग दर्जन के हिसाब से बिकती हैं, पर जापान उनको ६ शिलिंग दर्जन के हिसाब से ही भेजता है। जापानियों ने अफ्रीका और भारतवर्ष में २० रू० में बाइसकिल बेचना शुरू किया है। यह बाइसकिल इङ्गलैण्ड की बनी एक मशहूर बाइसकिल की तरह दिखलाई पड़ती है। अंगरेज़ी बाइसकिल

जापानो से करीब दुगने दामों में बेची जाती है। हांगकांग में जापान जो लोहे का चद्दरें भेज रहा है उनका दाम अङ्गरेज़ी चद्दरों से एक चौथाइ कम है। अगर अङ्गरेज़ी कम्पनियों का ख़ास तौर पर मदद नहीं दी जायगी तो जापान के मुक़ाबले में उनका बाजार में टिक सकना नामुमकिन है।"

दूसरे मुल्कों के ख़िलाफ़ प्रचार

इस तरह दुनिया के तमाम मुल्कों से झगड़ा खड़ा करके जापान के राजनीतिज्ञ किन तरकीबों से अपने देश वालों को उनके ख़िलाफ़ भड़का रहे हैं यह ध्यान देने लायक बात है। कुछ वक्त गुजरा हवाई टापू के अमरीकन अफ़सरों ने चिचबूमारू नाम के जापानी जहाज़ से ७७ बक्स बरामद किये थे जिनमें एक पैम्फलेट की हजारों कापियाँ भरी थीं। इसका हैडिङ्ग 'जापान और अमरीका के बीच होने वाले युद्ध का स्वप्न' था। इसका लेखक जापानी समुद्री सेना का एक पेंशनयाफ़्ता लेफ्टिनेण्ट कमाण्डर था और इसको भूमिका जापान की सुप्रीम वार कौंसिल के सदस्य एडमिरल काटो ने लिखी थी। इसे हवाई टापू में रहनेवाले जापानियों में बाँटने के लिये भेजा गया था। इसमें क़िस्से के रूप में बतलाया गया था कि किस प्रकार एक जापानी अफ़सर ने अमरीका के एक लड़ाई के जहाज़ को बिना क़िसी तरह के झगड़े के टारपेडो मार कर डुबा दिया। इसके बाद दोनों मुल्कों में लड़ाई छिड़ गई और जापान ने हवाई टापू पर कब्जा कर लिया। इस पैम्फलेट के बारे में जापानी हाकिमों से

पूछताछ करने पर जवाब मिला कि इसका लेखक सरकारी नौकरी से अलग हो गया है और इस लिये इसकी जिम्मेवारी सरकार पर नहीं है।

इसी तरह के मनमाने इलजाम इङ्गलैण्ड पर भी लगाये जा रहे हैं और कोशिश की जा रही है कि जापान के लोग उसे अपना दुश्मन समझने लगें। पिछले एक-दो वर्षों में इस तरह की कई मिसालें मिल चुकी हैं। 'मैनचेस्टर गार्जियन' के सम्वाद-दाता ने एक जापानी प्रोफेसर डा० सोसन गोरट के भाषण का एक हिस्सा छपने को भेजा था। इसमें यहाँ तक कहा गया था कि "जापान का असली दुश्मन चीन या अमरीका नहीं है बल्कि इङ्गलैण्ड है।" आगे चल कर प्रोफेसर साहब ने रूस-जापान युद्ध; पिछले योरोपीय महायुद्ध और भावी महासमर का असली जिम्मेवार इङ्गलैण्ड को बतलाया था।

इसी तरह लैफ्टिनेण्ट कमान्डर टोटानिशी मारू ने कुछ समय हुआ 'निची ई हिसेन न रोन' (इङ्गलैण्ड और जापान की लड़ाई के निश्चय पर) नाम की किताब लिखी थी। इसमें जापान और इङ्गलैण्ड की व्यापारिक प्रतिस्पर्धा का उल्टा सीधा मतलब निकाल कर जापानियों को भड़काया गया था। इस पुस्तक ने जापान में ऐसी सनसनी पैदा की कि थोड़े ही दिनों में उसके ४० संस्करण बिक गये। ज्यादा न लिख कर उस किताब के कुछ अध्यायों के हैडिङ्ग भर देना काफी है जिससे लेखक महाशय के ख़्यालात का पता लग जायगा—

१—कल के मित्र और आज के दुश्मन ; २—जापान पर इङ्गलैण्ड का दबाव ; ३—क्या जापान इङ्गलैण्ड से लड़ेगा ? ४—अङ्गरेज़ी जहाजी ताक़त का जनाजा ; ५—मेडीटेरियन या पैसफिक ; ६—सिंगापुर का जहाजी अड्डा और उसका उद्देश्य ; ७—इङ्गलैण्ड की कमज़ोरियाँ ; ८—इङ्गलैण्ड से डरने की ज़रूरत नहीं।

हिन्दुस्तान पर निगाह

इङ्गलैण्ड के ख़िलाफ़ जापान का यह प्रचार-कार्य बिना मतलब के नहीं है। एशिया में अभी तक इङ्गलैण्ड की ही धाक सबसे ज्यादा जमी हुई है। ऐशिया के बहुत बड़े हिस्से पर इङ्गलैण्ड का क़ब्ज़ा भी है। ऐसी हालत में जापान अगर एशिया में अपनी सल्तनत क़ायम करना चाहता है तो उसे ज़रूर ही इङ्गलैण्ड से झगड़ा करना पड़ेगा। उसी झगड़े की नींव जापान इन दिनों डाल रहा है। इसका नतीजा आगे चल कर क्या होगा, यह कह सकना मुशकिल है। जानकार लोगों का तो कहना है कि जापान ने चीन में जो लड़ाई छेड़ी है उसका मक़सद हिन्दुस्तान पर क़ब्ज़ा करने का ख़याल भी है। इस बारे में हाल ही में मि० टी० एच० चेन ने, जो चीन की तरफ़ से लीग आफ़ नेशंस में प्रतिनिधि हैं, एक प्रेस रिपोर्टर से कहा था :—

"हम लोग सिर्फ़ चीन को बचाने के लिये जापान से नहीं लड़ रहे हैं, बल्कि हमारा मक़सद एशिया भर में अमन क़ायम

रखना है। चीन हमेशा अमन ही चाहता है और मैं समझता हूँ कि हिन्दुस्तान भी यही पसन्द करता है। पर जापान की नीति दक्खिन दिशा की तरफ़ बराबर क़ब्ज़ा करते जाने की है। जहाँ तक हमको पता लगा है जापान पहले दक्षिण चीन को जीतना चाहता है और फिर मलाया प्रायद्वीप की क्रा नहर के द्वारा हिन्दुस्तान पर क़ब्ज़ा करना चाहता है। इस रास्ते में अङ्गरेज़ों का सिङ्गापुर का ज़हाज़ी अड्डा कुछ भी बाधा न पहुँचा सकेगा। अगर चीन इस समय जापान के आगे बढ़ने को नहीं रोकता तो सबसे पहला देश, जिस पर जापान अपना पञ्जा बढ़ायगा, हिन्दुस्तान ही है।"

क्या जापान जीत सकेगा ?

पर सवाल यह है कि क्या चीन में जापान की जीत हो सकती है ? क्या वह हिन्दुस्तान से भी कहीं ज़्यादा बड़े एक मुल्क को, ऐसे समय में जब कि वहां राष्ट्रीयता के नये ख्यालात फैल रहे हैं, सहज में अपना मातहत बना सकता है ? यह सच है कि जापान की फौजी ताक़त चीन की बनिस्वत ज़्यादा और संगठित है। यह भी सच है कि इस जमाने में न्याय और इंसाफ की लाखों दुहाई देने पर भी कोई मुल्क दूसरे की दिल से मदद नहीं करता। ख़ास कर जबर्दस्त से सब डरते हैं और कमजोर की मदद करके कोई अपने ऊपर ख़तरा लेना नहीं चाहता। यही सबब है कि इङ्गलैण्ड और अमरीका जैसे देश भी जापान के जुल्मों को आँख से देखते हुये सिर्फ जबानी जमाखर्च से उसका विरोध करने

की कोशिश कर रहे हैं। तो भी हम समझते हैं कि चीन जैसे बड़े ग्रास (लुकमे) को निगल जाना जापान के लिये नामुमकिन ही होगा। वह वहां के समुद्र के किनारे बसे शहरों को तहस-नहस कर सकता है; वह हवाई जहाजों से चीन के भीतर बसे शहरों और कस्बों पर गोलावारी करके उन्हें बर्बाद कर सकता है; वह चीन के लड़ाई में भाग न लेने वाले बेकसूर स्त्री-पुरुषों और बालक-बुड्ढों की हत्या करके लोगों के दिलों में आतङ्क का भाव पैदा कर सकता है, पर वह चीन के लोगों को सहज में अपना अनुयायी या अपना भक्त नहीं बना सकता। और इसके बिना चीन जैसे लम्बे चोड़े देश पर हकूमत कर सकना मुशकिल है।

चीन को फतह करने में जापान को जिन बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है या आगे चल कर करना पड़ेगा, उसमें सब से ख़ास यही है कि वहाँ के निवासी जापानियों से स्वभावतः नफरत करते हैं और उनको नीच और छोटा समझते हैं। जिस तरह हिन्दुस्तान के लोग अपनी सभ्यता को सब से ज़्यादा श्रेष्ठ समझते हैं, और विदेशियों द्वारा फतह कर लिये जाने पर भी अपने दिल में अपने को ऊँचा ही मानते हैं, वही हालत चीन की भी है। वहाँ की सभ्यता दरअसल बहुत पुरानी और ऊँचे दर्जे की है और जापान पुराने जमाने में हर एक विषय में उसका शागिर्द रहा है। इस लिये जापानी अब ताक़तवर बन कर चाहे कितना भी जोरजुल्म क्यों न करें, चीनी लोग उनसे प्रभावित होने या उनके रौब में आजाने के बजाय उनको बर्बर और नीच

शङ्घाई के रण-क्षेत्र में चीन और जापान का पहला मोरचा जापानी हवाई जहाज़ों ने इस अवसर पर भयङ्कर बम-वर्षा की थी जिससे चारों तरफ़ धुँआ और गुबार छाया हुआ है। दूसरी तरफ के सिपाही आत्मरक्षार्थ जमीन पर लेट कर गोलियाँ चला रहे हैं। आजकल अधिकांश युद्धों में ऐसा ही दृश्य दिखलाई दिया करता है।

ही समझते हैं। यही सबब है कि चीन के जिन हिस्सों पर जापान का कब्ज़ा हो भी गया है वहाँ भी वह चीन वालों को अपने हुक्म का पाबन्द नहीं बना सका है। सामाजिक मामलों में तो चीन वाले जापानियों से बहुत ही बच कर रहते हैं। अब तक बहुत सी जापानी लड़कियाँ चीन वालों से शादी कर चुकी हैं पर चीन वाले जापानियों को अपनी लड़कियाँ हर्गिज़ नहीं देते।

चीन और जापान की मौजूदा लड़ाई के बारे में जानकार लोगों का ऐसा ख़याल है कि यह धीरे-धीरे बहुत दिनों तक चलती रहेगी और जब दोनों थक जायँगे तब कोई तीसरा उनमें सुलह करा देगा। अगर ऐसा हुआ तो जापान को बेहद नुकसान होगा क्योंकि लड़ाई में उसे जितना ख़र्च करना पड़ रहा है उसका चौथाई भी फायदा वह नहीं उठा सकता। साथ ही अगर जापान चीनी फ़ौजों को पूरी तरह हरा भी दे तो भी वह वहाँ अपनी हुकूमत ज़्यादा दिनों तक क़ायम नहीं रख सकता। क्योंकि अब संसार भर में हलचल मची है, बड़े-बड़े मुल्कों की हालत डांवाडोल होती जाती है, संसार व्यापी महायुद्ध छिड़ने के आसार बढ़ते जाते हैं और दुनिया के लोग दिन पर दिन साम्राज्यवादियों, फ़ौजी डिक्टेटरों और निरङ्कुश हुकूमत करने वालों के खिलाफ़ होते जाते हैं। ऐसी हालत में अब जापान के लिये किसी नये साम्राज्य की स्थापना कर सकना नामुमकिन ही है।

रूस भी डटा है—

इस जापानी खतरे की तरफ़ से रूस बेखबर नहीं है। वह बड़ी तेज़ी से अपनी फौज और हवाई जहाज़ों को बढ़ा रहा है और सब तरह का लड़ाई का सामान इकट्ठा कर रहा है। उसने रूस और मंचूरिया की सरहद पर एक मज़बूत फ़ौज भेज दी है और आस पास के तमाम शहरों और बन्दरगाहों के बचाव का पूरा-पूरा इन्तज़ाम कर रखा है।

पर जब हम रूस सरकार की नई पालिसी पर ध्यान देते हैं तो उसका महत्व इन फौजी तैयारियों की बनिस्वत बहुत ज्यादा ज्ञान पड़ता है। जहाँ आज से पाँच-सात साल पहले योरोप और अमरीका के सभी छोटे-बड़े देश रूस के दुश्मन बने हुए थे और एक तरह से उससे नफरत करते थे; आज उसने ज्यादातर मुल्कों को अपना दोस्त बना लिया है।

रूस के साथ इन मुल्कों के दोस्ती करने का एक सबब तो यह है कि वहाँ पर दूसरे देशों का बना माल बिक सकने की

बहुत गुञ्जायश है, और अपने माल की बिक्री बढ़ाने को ही आजकल सब देश मरे-कटे जाते है। दूसरी बात यह कि अगली लड़ाई के डर से अब बड़े-बड़े मुल्क नये गुट्ट बनाने की कोशिश कर रहे हैं। जापान इस समय रूस और अमरीका दोनों का विरोध कर रहा है, इसलिये इन दोनों में मेल होना तो स्वाभाविक ही है। इधर इङ्गलैण्ड भी इस वक्त योरोप की दलबन्दियों से निकल कर अकेला सा रह गया है। उसने भी इस बढ़ते हुये ताक़तवर मुल्क से नाता जोड़ना फ़ायदेमन्द समझा है। इन बातों से लोग ख़्याल करने लगे हैं कि अगली लड़ाई में इङ्गलैण्ड और अमरीका रूस का साथ देंगे। अगर्चें आज तक की घटनाओं को देखते हुए यह बिल्कुल अनहोनी बात जान पड़ती है पर कूट राजनीति जो न करादे थोड़ा है।

रूस की फौजी तैयारियाँ

जापान से लोहा लेने को रूस अपने देश के भीतर भी बड़ी-बड़ी तैयारियाँ कर रहा है। इस वक्त वहां १५ लाख फ़ौज तैयार है और पौने दो करोड़ लोगों को फ़ौजी तालीम देकर रिज़र्व फौज में रखा गया है। वहाँ 'ओसो विपखिम' नाम की एक संस्था है जिसके मेम्बरों की तादाद एक करोड़ दस लाख है। इसका काम हवाई जहाज़ और जहरीली गैस के हमले से मुल्क का बचाव करना है। उसके तमाम मेम्बरों को निशाना लगाने, मशीनगन चलाने और फ़ौज़ी दावपेचों की शिक्षा दी जाती है।

रूस में वैसे भी फ़ोजी तालीम लाज़िमी है। हर एक कारख़ाने और खेती के फ़ार्म को अपने यहाँ निजी तौर पर फौजी क़वायद का इन्तजाम करना पड़ता है। गाँवों में रहने वाले सभी नौजवानों को जाड़े के मौसम में १५ दिन तक क़वायद परेड करनी पड़ती है। हर एक गाँव में एक फ़ौजी अफ़सर और एक फ़ौजी तालीम देने वाला मास्टर रखे गये हैं।

रूस में हवाई जहाज़ः और हवाई सेना की बहुत तरक्की की गई है। वहाँ हवाई जहाज बनाने वाले पच्चीस, तीस बड़े-बड़े कारख़ाने तैयार किये गये हैं जो पिछले कितने ही सालों से ज़ोरों से काम कर रहे हैं। रूस की हवाई ताक़त दूसरे मुल्कों के मुक़ाबिले में कैसी है इसका जिक्र करते हुये फ़ौजी मामलों के जानकार कप्तान लिडिल हार्ट ने अभी एक अख़बार में लिखा था:—

"इस वक्त रूस की हवाई सेना योरोप में सब से बड़ी है। उसके अगले दल में कम से कम २१०० या ३००० तक हवाई जहाज़ हैं।※ इनमें कम से कम ४०० बड़े आकार के बम बरसाने वाले जहाज़ हैं। रूस की लम्बाई चौड़ाई को देखते हुए ऐसे बड़े और ज्यादा दूर तक जा सकने वाले जहाज़ों का होना जरूरी भी

※ इसी लेखक के लिखने के मुताबिक जर्मनी के हवाई बेड़े के अगले दल (फर्स्ट लाइन) की संख्या १०००, इङ्गलैन्ड की ७००, फ्रांस की १६०० और इटली की १०० है।

है। उसने ऐसे भी बहुत से जहाज़ बनाये हैं जो सेना के साथ रह कर दुश्मन पर ऊपर से निशानेबाज़ी करते रहेंगे। रूस के ज़्यादातर जहाज़ नये ढङ्ग के हैं और उसने जहाज़ों से स्टेशनों का भी बहुत बढ़िया इन्तजाम किया है। इस इन्तज़ाम के बिना हवाई सेना को काम में ला सकना मुशकिल होता है। कहा जाता है कि रूस की इस हवाई सेना और उसकी बढ़ी हुई ताक़त को देख कर ही हिटलर ने जर्मनी की हवाई सेना को बढ़ाने का निश्चय किया है।"

रूस ने जो बड़े जहाज़ बनाये हैं उनमें से कुछ तो इतने भारी हैं कि उनमें ५ टन (१४० मन) बोझा लाद कर ले जाया जा सकता है। इन जहाज़ों को ख़ास कर इसलिये बनाया गया है कि जापान के साथ लड़ाई छिड़ने पर इनके जरिये जल्दी से लड़ाई का ज़रूरी सामान भेजा जा सके। रूसी हवाई सेना की एक ख़ास बात यह भी है कि उसके उड़ाके अपने पास पैराच्यूट नहीं रख सकते। पैराच्यूट उस हवाई छतरी को कहते हैं जिसकी मदद से हवाई जहाज़ के उड़ाके आसमान से जमीन पर कूदते हैं। इसका एक सबब तो यह बतलाया जाता है कि पैराच्यूट पास रहने से जहाज़ चलाने वाले थोड़ा सा भी ख़तरा पैदा होते ही जहाज़ को छोड़ कर कूद पड़ते हैं। दूसरी बात यह कही जाती है कि रूस के हाकिम ऐसा हवाई बेड़ा तैयार करना चाहते हैं जिसके सिपाही मरने से जरा भी न डरते हों।

नया समुद्री रास्ता

योरोपियन रूस से एशियाई रूस के बन्दरगाहों और जापान तक पहुँचने के लिये रूस ने एक नया समुद्री रास्ता भी ढूँढ़ निकाला है। अभी तक रूस के जहाज़ों को अपने एशियाई बन्दरगाहों तक पहुँचने का रास्ता हिन्द महासागर में होकर ही था। यह रास्ता कई हज़ार मील लम्बा है और इसमें जापान का राज्य रास्ते में ही पड़ता है। इसलिये अब रूस अपनी उत्तरी सीमा से लगे आर्किटिक समुद्र में होकर, जिसे संसार की छत कहा जाता है, अपने ख़ास एशियाई बन्दरगाह व्लाडी-वोस्टक तक पहुँचने की कोशिश कर रहा है। यह समुद्र उत्तरी ध्रुव के पास ही है और गर्मियों के कुछ दिनों को छोड़ कर अक्सर जमा ही रहता है। इसका पूरा नक़शा तैयार करने और आने जाने का सहज रास्ता ढूँढ़ने के लिये रूस के कितने ही विशेषज्ञ पिछले दो-तीन बरसों से कोशिश कर रहे थे। अब प्रोफ़ेसर स्मिट नाम के अन्वेषक इस समुद्र के रास्ते व्लाडीवोस्टक तक पहुँच गये हैं। उन्होंने बतलाया है कि अगर मुसाफिरों के जहाज़ों के आगे एक बर्फ़ तोड़ने वाला जहाज़ रास्ता साफ़ करता चले तो इस रास्ते से सफ़र कर सकना नामुमकिन नहीं है। इस समुद्र के रास्ते से अमरीका और रूस का फ़ासला भी थोड़ा ही रह जाता है। इसलिये ऐसा इन्तजाम किया जा रहा है कि जब कभी जापान से लड़ाई छिड़े तो रूसी फ़ौज के लिये

खाने-पीने और लड़ाई का सामान इसी समुद्र में होकर अमरीका से लाया जाय।

इस काम को पूरा करने की कोशिश करते-करते रूस ने एक अनहोना काम करके दिखला दिया है। उसने हवाई जहाज़ के जरिये उत्तरी ध्रुव को पार करके अमरीका जाने का रास्ता निकाल लिया है। जिस उत्तरी ध्रुव तक दस-बीस साल पहले पहुँचना नामुमकिन समझा जाता था और जिस तक पहुँचने के लिये सैकड़ों साहसी लोगों ने अपने जान गंवा दी थी उसी उत्तरी ध्रुव को रूस के उड़ाकों ने अपना हवाई स्टेशन बना लिया है। इस रास्ते से रूस और अमरीका का फ़ासला बहुत थोड़ा रह जाता है और लड़ाई छिड़ने पर एक दूसरे की काफी मदद कर सकते हैं।

रूस की शान्तिपूर्ण नीति

पर इन बातों से यह समझ लेना ठीक न होगा है कि रूस लड़ाई के लिये उतावला हो रहा है या उसे लड़ने का शौक़ है। रूस की मौजूदा सरकार की नीति बराबर दुनिया में शान्ति बनाये रखने की रही है। निःशस्त्रीकरण कान्फरेंस में उसने हमेशा इस बात पर ज़ोर दिया कि सब मुल्क अपने हथियारों और लड़ाई के दूसरे सामान को एक दम नष्ट करदें। पर लड़ाई के मतवाले लोग ऐसी बातों पर कब ध्यान देने लगे। इस लिये अब रूस जो कुछ फौजी तैयारी कर रहा है उसका मतलब अपनी हिफाजत

ही समझना चाहिये। रूस अब भी भरसक लड़ाई से बचने की कोशिश कर रहा है और अपने विरोधियों की कितनी ही ज्यादतियों को तरह दे जाता है।

पर इसके ख़िलाफ़ जापान और उसके साथ इटली और जर्मनी रूस को नेस्तनाबूद करने की ज्यादा से ज्यादा कोशिश कर रहे हैं और दूसरे मुल्कों को भी अपनी साजिश में शामिल करना चाहते हैं। हाल ही में मुसोलिनी की जर्मन यात्रा के समय दुनिया के इन दोनों निरंकुश डिक्टेटरों ने रूस के खिलाफ़ खूब जहर उगला था। मुसोलिनी ने कहा कि "पहले हमने बोलशेविज्म का विरोध शब्दों से किया। पर जब उसका असर न पड़ा तो हमने उसकी मुख़ालफ़त हथियारों से की।" इसी तरह जापान भी रूस की पर्वा न करके चीन को हड़पता जा रहा है और रूस को नुकसान पहुँचाने के लिये मजबूत संगठन कर रहा है। इस तरह दोनों तरफ भयंकर दुश्मनों से घिरे होने से रूस की हालत ख़तरनाक जरूर हो गई है पर लोगों को यह जान रखना चाहिये कि रूस भी संसार में एक पहेली की तरह रहा है। आज तक कोई बाहरी दुश्मन उसको पूरी तरह जीत नहीं पाया। दुनिया को जीतने वाले नैपोलियन की ताक़त को रूस ने ही नीचा दिखाया था और उसी के फल से अख़ीर में नैपोलियन का ख़ात्मा हो गया। देखना है कि जिस काम को नैपोलियन पूरा नहीं कर सका क्या उसे हिटलर और मुसोलिनी पूरा कर सकते हैं। रूस के डिक्टेटर स्टैलिन ने तो साफ लफ्ज़ों में कह दिया है कि "यद्यपि हम चारों
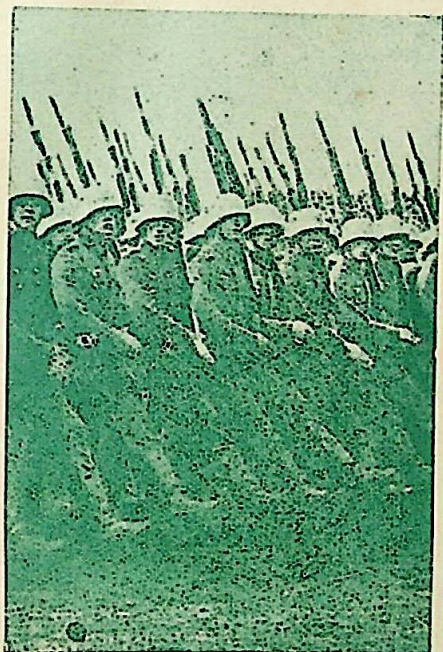
जर्मनी के नवयुवक सैनिक, जिनकी नसों में युद्ध का जोश भरा हुआ है। हिटलर के अनुयाइयों ने जर्मनी के प्रायः सभी नौजवानों को ऐसा ही कट्टर लड़ने वाला बना दिया है। योरोप के सभी देश जर्मनो की इस जबर्दस्त फ़ौज से दहशत खाते हैं।

तरफ़ दुश्मनों से घिरे हैं पर वे याद रखें कि यदि रूस पर किसी ने हमला किया तो हम उसकी गर्दन तोड़ देंगे।" इसका मतलब यही समझना चाहिये कि रूस जानबूझ कर किसी से लड़ना पसन्द नहीं करता और सब तरह से लाचार हो जाने पर ही लड़ाई के मैदान में उतरेगा।

आपस का झगड़ा

पर इन दिनों रूस के लिये सब से ज़्यादा नुक़सान पहुँचाने वाली बात यह हो गई है कि वहाँ आपस के झगड़े बहुत बढ़ गये हैं। इसका नतीजा यह हुआ है कि वहाँ अक्सर बड़े-बड़े हाकिमों को राजद्रोह और देशद्रोह के कसूर में मौत की सजा मिलती रहती है। कहा जाता है कि ये हाकिम रूस के मौजूदा प्रधान स्टैलिन के मुख़ालिफ़ ट्राटस्की के दल में मिल गये हैं और मौजूदा सरकार को बर्बाद करने के लिये षड्यंत्र रचा करते हैं। ऐसा जान पड़ता है कि इसमें रूस के दुश्मन जर्मनी और जापान भी छुपे तौर पर कोशिश और मदद कर रहे हैं। हालत यहाँ तक ख़राब हो गई है कि अगर किसी वक्त यह झगड़ा घरेलू लड़ाई का रूप धारण कर ले तो कोई ताज्जुब की बात नहीं। अगर ऐसा हुआ तो रूस के दुश्मनों की चढ़ बनेगी और एक बार फिर रूस की कायापलट हो जायगी।

बहुत गुञ्जायश है, और अपने माल की बिक्री बढ़ाने को ही आजकल सब देश मरे-कटे जाते है। दूसरी बात यह कि अगली लड़ाई के डर से अब बड़े-बड़े मुल्क नये गुट्ट बनाने की कोशिश कर रहे हैं। जापान इस समय रूस और अमरीका दोनों का विरोध कर रहा है, इसलिये इन दोनों में मेल होना तो स्वाभाविक ही है। इधर इङ्गलैण्ड भी इस वक्त योरोप की दलबन्दियों से निकल कर अकेला सा रह गया है। उसने भी इस बढ़ते हुये ताक़तवर मुल्क से नाता जोड़ना फायदेमन्द समझा है। इन बातों से लोग ख़्याल करने लगे हैं कि अगली लड़ाई में इङ्गलैण्ड और अमरीका रूस का साथ देंगे। अगचें आज तक की घटनाओं को देखते हुए यह बिल्कुल अनहोनी बात जान पड़ती हैं पर कूट राजनीति जो न करादे थोड़ा है।

रूस की फौजी तैयारियाँ

जापान से लोहा लेने को रूस अपने देश के भीतर भी बड़ी-बड़ी तैयारियाँ कर रहा है। इस वक्त वहां १५ लाख फ़ौज तैयार है और पौने दो करोड़ लोगों को फ़ौजी तालीम देकर रिज़र्व फौज में रखा गया है। वहाँ 'ओसो विपखिम' नाम की एक संस्था है जिसके मेम्बरों की तादाद एक करोड़ दस लाख है। इसका काम हवाई जहाज़ और जहरीली गैस़ के हमले से मुल्क का बचाव करना है। उसके तमाम मेम्बरों को निशाना लगाने, मशीनगन चलाने और फ़ौज़ी दावपेचों की शिक्षा दी जाती है।

फ्रांस, जर्मनी और इटली—

इस वक्त जितने मुल्क लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं उनमें शायद सबसे ज्यादा बढ़ी-चढ़ी और ज़ोरदार तैयारी फ्रांस की है। इसके लिये खर्च भी वह बहुत ज्यादा करता है। पिछली योरोपियन लड़ाई में मित्र राष्ट्रों की जीत होने से सबसे ज्यादा लाभ भी उसी ने उठाया। लड़ाई के ख़त्म होते ही वह अपनी फौज को मज़बूत बनाने में लग गया था। इस काम में उसने जितना रुपया ख़र्च किया है उसका हिसाब लगाना भी मुशकिल है। इस वक्त उसके पास बहुत बड़ी तादाद में हवाई जहाज़, तोपें और मशीनगनें हैं। उसकी फ़ौज में मोटरों की तादाद भी सब से ज्यादा है।

तिलस्मी क़िलेबन्दी

फ्रांस की तैयारियों में सबसे अनोखी चीज़ उसकी वह क़िलेबन्दी है जो उसने जर्मनी की हद के पास की है। क्योंकि जर्मनी को सब तरह से कमजोर और निहत्था कर देने पर भी फ्रांस

को उसकी तरफ़ से डर बना ही रहता है। इस डर को हमेशा के लिये मिटा देने के इरादे से जितनी दूर तक उसकी हद जर्मनी से मिली हुई है उतनी दूरी में उसने ऐसे मजबूत क़िलों की कतार तैयार की है जिन पर लड़ कर क़ब्जा कर सकना किसी तरह मुमकिन नहीं। इन किलों का जो थोड़ा सा हाल अख़बारों में छपा है उसके पढ़ने से ऐसा जान पड़ता है कि हम किसी तिलस्म का हाल पढ़ रहे हैं।

यह किलों की क़तार क़रीब दो सौ मील तक फैली है और इसमें एक-एक मील से भी कम दूरी पर सिपाहियों के रहने और तोपें चलाने के मुक़ाम बनाये गये हैं। ये मकान जमीन के ऊपर नहीं बल्कि ६० से १०० गज तक ज़मीन के नीचे बने हैं। जमीन के ऊपर कहीं-कहीं छोटे चबूतरे ही दिखलाई पड़ते हैं। इन चबूतरों में मशीनगनें और तोपें ऐसी हिकमत से छुपा कर रखी गई हैं कि बाहरी आदमी उनका पता पा ही नहीं सकता। ये मकान और चबूतरे कंक्रीट और लोहे के बहुत ही मज़बूत बनाये गये हैं। एक-एक चबूतरे का बोझ कम से कम ३६ टन (१ टन=२८ मन) है। ऐसे छुपे हुये मुकामों की तादाद क़रीब ३०० है और हर एक में बेशुमार गोला-बारूद और लड़ाई का सब तरह का सामान भरा है।

इस क़तार के बीच-बीच में बड़े किले भी बनाये गये हैं जो इतने मजबूत हैं कि दुनिया की कोई भी तोप या बम उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। ये किले भी जमीन के अन्दर बने हैं और

उनमें जाने के लिये लिफ्ट (बिजली के खटोले) द्वारा एक बड़े गहरे कुँये में उतरना पड़ता है। जब उतरने वाला नीचे पहुँचता है तो उसे एक सुन्दर शहर सा बसा दिखलाई पड़ता है जिसमें बड़ी-बड़ी सड़कें बिजली की रोशनी, होटल, सिनेमा आदि सब तरह की आराम की चीजें दिखलाई पड़ती हैं। इन किलों में ऐसा इन्तजाम किया गया है कि लाखों फौज महीनों तक भीतर ही रह कर भारी से भारी दुश्मन का मुक़ाबला कर सकती है।

ये तमाम किले और चौकियाँ सुरङ्गों के ज़रिये एक दूसरे से मिले हैं। इन सुरङ्गों में बिजली की रेल चलती है। इसके जरिये कुछ ही मिनटों में सिपाहियों को जमीन के नीचे ही नीचे दूर-दूर के मुक़ामों तक पहुँचाया जा सकता है। लड़ाई करने के लिये भी सिपाहियों को बाहर निकलने की ज़रूरत न पड़ेगी। वे जमीन के नीचे से ही बिजली का बटन दबा कर तोपों और मशीनगनों को जिस तरफ़ चाहें चला सकते हैं। क़िलों में ऐसा भी इन्तज़ाम किया गया है कि अगर दुश्मन किसी तरह भीतर पहुँच जाय तो जिन्दा बाहर नहीं आ सकता। इसके लिये कई मुक़ाम ऐसे बनाये गये हैं जहाँ अनजान आदमी धोखे में आकर बहुत नीचे गिर जाता है। दूसरी तरकीब यह है इन तमाम क़िलों को १५ मिनट में पानी से भर दिया जा सकता है।

हवाई हमले से बचाव

इस तरह इस किलेबन्दी को करके फ्रांस खुश्की द्वारा जर्मनी के हमले से बहुत कुछ निश्चित हो गया है। पर हवाई जहाजों

और जहरीली गैस का मुक़ाबला कैसे किया जाय इसकी फ़िक्र उसे लगी रहती है। अगर्चे उसके पास हवाई जहाज़ बहुत ज्यादा हैं, पर हर रोज नई-नई ईजादें होते रहने से वे अब पुराने समझे जाने लगे हैं। इस लिये अभी हाल में वहां की सरकार ने नियमित फौजी बजट के अलावा २ करोड़ २७ लाख पौन्ड की रक़म मंजूर की थी। इस रक़म से फ्रांस की हिफ़ाज़त के उपायों में जरूरी बदलाव करके उनको बिल्कुल नये ढङ्ग का बना दिया गया है।

फ्रांस ने अपनी रैयत के लोगों को बचाने का भी बहुत इन्तज़ाम कर रखा है। वहाँ १८ हज़ार मुक़ाम ऐसे बनाये गये हैं जहाँ लोग जहरीली गैस से बचने को छुप सकते हैं। पुलिस, आग बुझाने वाले, और एम्बुलेंस वालों के लिये, जिनको हमले के वक्त बाहर निकल कर काम करना पड़ता है, बहुत बड़ी तादाद में गैस से बचाने वाली मास्क और फौलादी टोपियाँ बनाई गई हैं। इनके लिये करोड़ों पौंड ख़र्च किया जा चुका है।

हवाई हमले को रोकने के लिये यह भी निश्चय किया गया है कि लड़ाई के जमाने में बड़े-बड़े नगरों के चारों तरफ़ लोहे के जाल लगा दिये जाँय। ये जाल जरूरत के मुताबिक जमीन से से आधा मील या एक मील ऊपर गुब्बारों के सहारे आसमान में अधर लटके रहेंगे। पिछले महायुद्ध के वक्त भी फ्रांस ने पेरिस की हिफ़ाज़त के लिये इस तरकीब से काम लेना चाहा था, पर उस समय गुब्बारे एक जगह ठहर नहीं सकते थे, हवा के चलने

से इधर-उधर चले जाते थे। पर अब ऐसी तरकीब निकाल ली गई है जिससे इन गुब्बारों और उनसे लटके हुये जालों को मनमाने ढङ्ग से चाहे जिस जगह क़ायम रखा जा सकता है।

फ्रांस की काली फ़ौज

फ्रांस अपनी फौजी ताक़त बढ़ाने की कहाँ तक कोशिश कर रहा है इसका अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उसने अपने मातहत मुल्कों में रहने वाले काले लोगों को भी उसी तरह की फौजी तालीम दी है जैसी वह अपने मुल्क के लोगों को देता है। यह बात योरोपियन मुल्कों की पुरानी नीति के खिलाफ़ है पर फ्रांस इसकी पर्वाह नहीं करता। वह हर तरह से अपनी ताक़त बढ़ाना चाहता है। उसकी यह फौज वक्त पड़ने पर बड़ा काम देती है और पिछले महायुद्ध में उसके एक लाख काले सिपाही जर्मनी से लड़े थे। तब से इनका महत्व उसकी निगाह में और भी बढ़ गया है और सन् १९३२ से फ्रांस के मातहत तमाम मुल्कों में अनिवार्य (लाजिमी) सैनिक शिक्षा जारी कर दी गई है। अमन के समय भी ७० हज़ार काली फौज फ्रांस में रखी जाती है और उसे ख़ास कर जर्मनी की हद के पास तैनात किया जाता है। इसका मतलब शायद यह हो कि लड़ाई का काम जहाँ तक मुमकिन हो बाहर के लोगों से चलाया जाय और फ्रांसीसी नागरिकों को आगे के लिये बचाकर रखा जाय।

जर्मनी का जवाब

फ्रांस की इन तैयारियों के जवाब में जर्मनी ने जो तैयारी की है उसका पूरा हाल अभी तक बाहरी लोगों को मालूम नहीं हो सका है। क्योंकि वर्सेलीज के सुलहनामे के मुताबिक उसका फौजी संगठन और लड़ाई का सामान बिल्कुल ख़त्म कर दिया गया था। साथ ही उससे यह भी वायदा करा लिया गया था कि वह लड़ाई के लिये नये हथियार भी नहीं बनायेगा। ऐसी हालत में अब से तीन चार साल पहले तक जर्मनी ने जो कुछ तैयारी की थी वह छुपे तौर पर ही की थी। इन दिनों नाजी दल की हकूमत क़ायम हो जाने पर उसने संधि की शर्तों को ठुकरा ज़रूर दिया है और मौक़ा आने पर कई बार बड़े-बड़े मुल्कों को ललकारा भी है तो भी अभी तक उसकी तैयारी इतनी ज़्यादा नहीं समझी जा सकती कि वह अकेला इङ्गलैंड, फ्रांस आदि का मुकाबला अच्छी तरह कर सके। इसलिये उसने इटली और जापान जैसे दो जबर्दस्त मुल्कों से दोस्ती कर ली है। साथ ही उसने साइंस की मदद से लड़ने की नई-नई तरकीबें भी निकाली हैं, जिनका भेद बहुत छुपा कर रखा गया है। इनके बारे में हम जो कुछ जानते हैं वह सुनी हुई बातों के आधार पर ही है। तो भी जो बातें जाहिर हुई हैं वे मनुष्य को डर और ताज्जुब के समुद्र में डुबा देने वाली हैं।

वैज्ञानिक युद्ध की तैयारी

वर्सेलीज की सन्धि से लाचार होकर जब जर्मनी ने देखा

कि वह तोप, बन्दूक और जहाज़ों को नहीं बना सकता तो उसने साइन्स की तरकीबों से काम लेने का निश्चय किया। बरसों तक जर्मनी के बड़े-बड़े वैज्ञानिक लूनेबर्ग की प्रयोगशाला में बैठ कर इस समस्या को हल करने की कोशिश करते रहे और शायद अब भी कर रहे हैं। कहा जाता है कि उनको अपने इरादे में काफी कामयाबी हुई है। उन्होंने बिजली की ताक़त से दुश्मनों का मुकाबला करने की तरकीब ढूँढ़ निकाली है। उन्होंने जो नई ईजादें की हैं उनमें ख़ास तौर पर कारगर (१) मृत्यु-तरङ्ग (२) मृत्यु-किरण (३) मृत्यु-ध्वनि (४) और एक बहुत ही तेज गैस बतलाई जाती हैं। यह भी कहा जाता है कि उसने नकली तौर पर भयङ्कर बीमारियों के कीड़े भी पैदा किये हैं जिनको किसी मुल्क में फेंकने से फौरन ही भीषण महामारी फैल सकती है। वहाँ पर लाखों की तादाद में चूहे पाले गये हैं। लड़ाई के समय इनमें प्लेग के कीड़े डाल कर इनको दुश्मन के मुल्क और सेना में छोड़ दिया जायगा। इस तरह बिना एक भी गोली-गोला चलाये अनगिनती लोगों का ख़ात्मा किया जा सकेगा। बेलजियम के एक फौजी अफ़सर का कहना है कि उसने एक दिन अनाचक आसमान में एक जर्मन हवाई जहाज़ देखा जो जमीन से सिर्फ १२० फीट की ऊँचाई पर था और घन्टे में १८० मील की चाल से जा रहा था, पर उसके चलने से किसी तरह की आवाज़ नहीं सुनाई देती थी। यह बात कहाँ तक सच है यह कहना मुशकिल है, क्योंकि इङ्गलैण्ड के हवाई

जर्मनी का युद्ध-देवता हर हिटलर

जिसकी लड़ाई की भीषण तैयारियों से बड़े बड़े राष्ट्र कांप रहे हैं ।

जहाज़ों के विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा जहाज़ बन सकना नामुमकिन है।

लड़ाई का नया जोश

जर्मनी अपने मुल्क के नौजवानों में लड़ने और मरने-मारने का जो भाव भर रहा है उसकी मिसाल कहीं और मिल सकना कठिन है। वैसे तो जर्मनी के लोग पहले ही से फौजी रंग में रंगे थे और क़ैसर के ज़माने में ही वहाँ के सिपाही बहादुरी और अनुशासन (डिसिप्लिन) में अद्वितीय थे, पर जब से जर्मनी में हिटलर-राज क़ायम हुआ है तब से इस सम्बन्ध में जिन तरकीबों से काम लिया जा रहा है उसका हाल जान कर तमाम योरोप डरने लगा है। इस समय वहाँ तमाम बड़ी उम्र के लड़कों और नौजवानों को साल में कुछ महीने फौजी तालीम हासिल करनी पड़ती है और बारकों में ऐसी सख़्त जिन्दगी बितानी पड़ती है कि फिर वे कड़ी से कड़ी तकलीफ और डर का सामना करते हुये भी नहीं हिचक सकते। इन नवयुवकों को आजादी भी बहुत दी जाती है जिससे उनका स्वभाव बहुत ही लड़ाकू हो जाता है। इतना ही नहीं जर्मनी के हाकिम वहाँ के हर एक छोटे लड़के और लड़की में भी यही फौजी भाव भरना चाहते हैं और इसके लिये आजकल वहाँ उनको सिर्फ ऐसे ही खिलौने दिये जा रहे हैं जिससे उनके भीतर लड़ाई के ख़्यालात शुरू से ही पैदा हो जायँ। इस बारे में एक अंगरेज़ रिपोर्टर ने लिखा था :—

"आजकल जर्मनी की नाजी सरकार अपने देश में जिन खिलौनों को फैला रही है वे सब लड़ाई से ताल्लुक रखने वाले हैं। उनमें सिपाहियों को दुश्मन पर आग बरसाते हुये, घावों पर पट्टी बाँधे हुये, लड़ाई के मैदान में तड़प कर मरते हुये दिखलाया जाता है। इन खिलौनों में छोटे-छोटे 'टैंक' भी है जो ऊँची-नीची जमीन पर चलते हैं और बड़े ज़ोर से दुश्मनों पर पटाखे छोड़ते जाते हैं। बड़ी तोपों के नमूने पर खेलने की तोपें बनाई गई हैं जिनसे ज़ोरदार शब्द होता है। नाजी सिपाहियों को बहादुरी के साथ कूच करते और उनके आगे-आगे अफ़सरों को नाजी झण्डा लेकर चलते हुए दिखलाया गया है। नर्सें (दाइयाँ) नाजी सिपाहियों के हाथ और पैरों में लगे बड़े-बड़े लाल घावों पर पट्टियाँ बाँधते दिखलाई गई हैं। नये ढङ्ग की लड़ाई की शायद ही कोई ऐसी बात हो जो इन खिलौनों द्वारा बालकों को न सिखलाई जाती हो। कहीं पर सिपाही कैंचियाँ लिये काँटेदार तारों को काट रहे हैं, कहीं वे मशीनगनों के पीछे उकडू बैठे हैं और कहीं दुश्मन के सिपाहियों पर भयङ्कर रूप से सङ्गीनों से हमला कर रहे हैं।" शायद कुछ लोग इन बातों को फिजूल समझें और अपने मन में कहें कि लड़ाइयाँ खिलौनों से नहीं जीती जा सकतीं। पर उनको सोचना चाहिये कि जहाँ के बच्चे शुरू से ही ऐसे खिलौनों से खेलेंगे, जिनको शुरू से ही लड़ाई की कहानियाँ और क़िस्से सुनाये जायँगे, स्कूल में जाते ही फौजी क़वायद कराई जायगी और कुछ बड़े

होते ही जबर्दस्ती सख्त से सख्त फौजी तालीम दी जायगी, वे कैसे पक्के और मरने-मारने के लिये तैयार सिपाही होंगे।

जर्मनी का नया प्रोग्राम

इस समय जर्मनी के सामने दो प्रोग्राम हैं। एक अपने उपनिवेशों को हासिल करना और दूसरा अपने खोये हुये प्रदेशों को मिला कर एक बड़े जर्मन राष्ट्र की स्थापना। पर हम जहाँ तक समझते हैं अब वह योरोप के बाहर उपनिवेश हासिल नहीं कर सकता। क्योंकि इस काम में उसका विरोध इङ्गलैण्ड से होता है जिसे वह पसन्द नहीं करता। सन् १९१४ वाले युद्ध में इङ्गलैण्ड के साथ उसकी मुठभेड़ होने का एक ख़ास सबब उपनिवेशों का सवाल भी था। इस लिये अब अगर्चे दुनिया को दिखलाने और इङ्गलैण्ड पर दबाव डालने की गरज से जर्मनी के कर्ताधर्ता समय-समय पर उपनिवेशों की माँग पेश करते रहते हैं पर दरअसल उनकी मंशा आस-पास के प्रदेशों पर कब्जा करके अपने राष्ट्र को फैलाना ही है। योरोप के जिन मुकामों पर इस समय जर्मनी की निगाह है उनकी फेहरिस्त एक जानकार ने इस तरह बतलाई है :—

(१) आस्ट्रिया (२) मेमल—जिस पर इस समय लिथूनिया का कब्जा है। (३) डैनजिग—जिसे लीग आफ नेशंस की हकूमत में स्वतंत्र नगर बना दिया गया है। (४) जैकोस्लोविका का वह भाग जिसमें ३५ लाख जर्मन बोलने वाले लोग बसते हैं।

(५) पोलैण्ड से मिला प्रदेश और सिलीशिया की कोयले की खानों का प्रदेश जिस पर महायुद्ध के बाद से पोलैण्ड का कब्जा है। (६) रूस के उक्रेन प्रदेश का एक हिस्सा जहाँ अनाज बहुत पैदा होता है। (७) स्वीजरलैण्ड और इटली के वे हिस्से भी जिनमें जर्मन भाषा बोलने वाले बसते हैं।

यह साफ जाहिर है कि ऊपर लिखे प्रदेश जिन मुल्कों के कब्जे में हैं वे अपनी राजी से उनको कभी जर्मनी के हवाले नहीं कर सकते। इसीलिये जर्मनी इन दिनों सब प्रकार की सेनाओं को बड़ी तेजी से बढ़ा रहा है। लड़ाई के समय उसे सब चीजें अपने ही देश में मिल सकें इसके लिये उसने एक चार साल की योजना बनाई है। इसके मुताबिक जो चीजें अभी तक जर्मनी में पैदा नहीं होती और बाहर से ही मिलती हैं, उनको या तो जर्मनी में ही पैदा करने की कोशिश की जा रही है या उनका काम किसी दूसरी चीज से निकालने की तरकीब ढूँढ़ी जा रही है।

इस तैयारी के साथ ही जर्मनी, इङ्गलैण्ड और फ्रांस को इस बात के लिये राजी करने की जी जान से कोशिश कर रहा है कि जब वह ऊपर लिखे प्रदेशों को हथियाने के लिये लड़ाई छेड़े तो वे उसमें शामिल न हों। इसके लिये उसने अपने देश वालों के सामने 'पूर्व की ओर बढ़ो' का नारा बुलन्द किया है। इसका मतलब यह है कि जर्मनी पश्चिम की तरफ़ अर्थात् फ्रांस, इङ्गलैण्ड की तरफ़ बढ़ना नहीं चाहता। वरन् पूरब की ओर अर्थात् पोलैण्ड और रूस वगैरह

पर हमला करके वह अपना उद्देश्य सिद्ध कर लेगा और उसी से सन्तुष्ट हो जायगा। इतना ही नहीं उसने कम्यूनिज्म और बोलशेविज्म के खिलाफ़ जो जेहाद बोल रखा है उसका एक सबब यह भी है कि इङ्गलैण्ड और फ्रांस के पूंजीपति तथा बड़े आदमी जर्मनी से हमदर्दी रखने लगें। उसे अपनी इस कोशिश में बहुत कुछ कामयाबी भी हुई है। अगर किसी 'तरह जर्मनी इस काम को पूरा कर सका और उसे फ्रांस तथा इङ्गलैण्ड की तरफ़ से यह भरोसा मिल गया कि वे उसके और पूर्वीय योरोप के झगड़े में दस्तन्दाज़ी न करेंगे, तो योरोप में लड़ाई छिड़ने में ज़रा भी देर न लगेगी। अगर्चे इस समय यह एक असम्भव कल्पना अथवा शेखचिल्ली का सा इरादा जान पड़ता है, पर इङ्गलैण्ड की नीति इस वक्त जैसी डाँवाडोल हो रही है उससे कुछ भी ठीक-ठीक कह सकना मुशकिल है।

इटली की कायापलट

पुराने जमाने में इटली की धाक तमाम दुनिया में जमी हुई थी। वह तमाम योरोप और एशिया के भी कितने ही देशों का मालिक बना हुआ था। पर इधर सैकड़ों बरसों से उसकी हालत बहुत गिर गई थी। बहुत समय तक उसे फ्रांस, आस्ट्रिया आदि दूसरे मुल्कों के मातहत रहना पड़ा और उस पर तरह-तरह के अन्याय, अत्याचार किये गये। पिछले योरोपीय महा-समर में उसने मित्र-राष्ट्रों (इङ्गलैण्ड, फ्रांस आदि) का साथ दिया था, पर कमज़ोर होने के सबब से लड़ाई के खत्म होने पर

उसे लूट के माल में से बहुत थोड़ा हिस्सा मिल सका। यह देख कर वह अपनी ताक़त बढ़ाने में लगा।

सन् १९२२ में वहाँ की हुकूमत की बागडोर मुसोलिनी के हाथों में आई और तब से उसकी कायापलट होने लगी। मुसोलिनी ने फ़ौरन समझ लिया कि इस समय यारोप में ताक़त का ही बोलबाला है और 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली मसल पूरी तरह काम में आ रही है। इसलिए वह जी जान से फ़ौजी ताक़त बढ़ाने में जुट गया और आज छोटे-बड़े सभी मुल्क उससे डरने लगे हैं। अमरीका के फ़ौजी विशेषज्ञों की राय में वहाँ इस समय ६२,९४,३९५ सिपाही इकट्ठे किये जा सकते हैं जिनमें से १३। लाख तो फ़ौज में बाक़ायदा नौकर हैं। उसकी फ़ौज में हवाई जहाज़, फ़ौजी मोटरें और दूसरी नई तरह की मशीनें काफी तादाद में हैं। गोताखोर नावें उसके पास बहुत ज़्यादा हैं, जिनसे वह समुद्री रास्तों को जब चाहे रोक सकता है।

इन दिनों मुसोलिनी का ध्यान ख़ास तौर पर भूमध्यसागर (मेडीटेरेनियन समुद्र) की तरफ़ गया है। कुदरती तौर पर इस पर इटली का ही हक़ सबसे ज़्यादा है और पुराने ज़माने में वह उसका सोलह आने मालिक था। पर इन दिनों फ़्रांस की मदद से इङ्गलैण्ड ने इस समुद्र पर अपना प्रभाव जमा रखा है।

भूमध्यसागर का सवाल सिर्फ़ इटली की इज़्ज़त से ही ताल्लुक नहीं रखता बल्कि वह उसके जीने मरने का सवाल

है। कोयला, लोहा, तेल, ऊन, रूई वग़ैरह कच्चे माल के लिये इटली ज़्यादातर दूसरे मुल्कों पर आधार रखता है। यह सब चीज़ें भूमध्य-सागर में होकर ही वहाँ पहुँच सकती है। और इसी रास्ते से वह अपना बना माल बाहर भेजता है। पर इस समुद्र के दोनों दरवाज़े अर्थात् स्वेज की नहर और जिब्राल्टर का मुहाना इङ्गलैंड क़ब्ज़े में हैं। ऐसी हालत में अगर उसकी इंगलैंड से लड़ाई छिड़ जाय तो वह सहज में इटली के व्यापार को चौपट कर सकता है और उसे भूखों मार सकता है।

अपनी इस कमजोरी को समझ कर इटली वरसों से अपनी हवाई और समुद्री सेना को मज़बूत कर रहा था। तो भी जल्दी ही इन बातों में इङ्गलैण्ड का मुकाबला कर सकना उसके लिये मुशकिल है। यह देख कर मुसोलिनी ने एक नई चाल चली। उसने स्पेन में आपस का झगड़ा खड़ा करके अपनी स्थिति को मजबूत बनाने की तरकीब सोची है। अगर स्पेन पर इटली के दल वालों का क़ब्ज़ा हो जाय तो वह ख़ुश्की के रास्ते से इङ्गलैण्ड के घेरे को बेकार कर सकता है। स्पेन में होकर वह दूसरे मुल्कों से मज़े में व्यापार कर सकता है और साथ ही जिब्राल्टर के अड्डे को तथा अङ्गरेज़ी व्यापारी जहाजों को बहुत नुक़सान पहुँचा सकता है।

इस तरह आज कल अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इटली का असर दिन पर दिन बढ़ता जाता है और वह चारों तरफ़ अपना जाल

बिछा रहा है। जर्मनी को उसने अपना पक्का दोस्त बना लिया है। हाल में मुसोलिनी जर्मनी में हिटलर से मिलने गया था। वहाँ दोनों में ख़ूब सलाह मशविरा हुआ। योरोप के लोग इसे लड़ाई की तैयारी का एक बड़ा चिन्ह समझ रहे हैं।

——मैं यह भविष्यवाणी तो नहीं कर रहा हूँ कि योरोप जल्दी ही जल कर खाक हो जायगा, पर मैं सच्ची हालत की तरफ़ से आँखें बन्द नहीं कर सकता। मैं कहना चाहता हूँ कि अगर नाश करने वाले गोले बारूद सब जगह जमा होते रहेंगे तो इनके भयङ्कर धड़ाके से योरोप ऐसा मटियामेट हो जायगा जैसा पहले कभी नहीं हुआ।

—लायड जार्ज

——दुनिया आज ऐसे महायुद्ध की ओर तेजी से चली जा रही है जैसा पहले कभी नहीं हुआ था। इसमें क़रीब-क़रीब सभी मुल्क घसीटे जायेंगे। विज्ञान लड़ाई के साधनों को बढ़ा रहा है और साहित्य उसे बढ़ावा दे रहा है।

—माननीय श्रीनिवास शास्त्री

(रंगून के भाषण में)

रणोन्मत्त मुसोलिनी

जिसने संसार भर में लड़ाई की आग भड़काने के लिये अपनी पूरी ताक़त लगा दी है।

इङ्गलैण्ड की नीति—

एक बहुत बड़ा सवाल यह है कि इस दुनिया भर में फैली उथल-पथल और अगली लड़ाई में इङ्गलैण्ड का रुख क्या रहेगा ? क्योंकि दुनिया में वही सब से बड़ी सल्तनत का मालिक है और बहुत से झगड़े-टंटों के होते हुये भी सबसे ज्यादा ताक़त और सामान उसी के पास है। इस लिये ख़ुदबख़ुद हर एक मुल्क उसका रुख देखा करता है और अन्दाज लगाया करता है कि ऐसे मौक़े पर उसकी नीति क्या होगी ?

एक ज़माना था जब बहुत से लोग इङ्गलैण्ड को दुनिया भर के लड़ाई झगड़ों की जड़ बतलाया करते थे। उनका कहना था कि वह दूसरों का लड़ा कर अपना काम बनाता है। शायद उस समय यह बात किसी हद तक सच रही हो। पर आजकल तो इङ्गलैण्ड की हालत इससे उल्टी जान पड़ती है। इस वक्त़ अगर कोई मुल्क दुनिया में और ख़ास कर योरोप में शान्ति बनाये

रखने की कोशिश करता दिखाई पड़ रहा है तो वह इङ्गलैण्ड ही है। कुछ समय पहले उसके राजनीतिज्ञ योरोप की एक राजधानी से दूसरी राजधानी का चक्कर लगाते फिर रहे थे कि किसी तरह उनमें समझौता हो जाय और हथियारों को बढ़ाने की होड़ शुरू न हो। फिर इटली-अबीसीनिया के मामले में भी उसने झगड़े को बार-बार बचाया और अखीर में बहुत कुछ बदनामी सह कर भी इटली पर से दण्डाज्ञाओं (सैंकशंस) को उठाने का ऐलान कर दिया। स्पेन और चीन के मामले में भी वह हद दर्जे की सहनशीलता दिखला रहा है और बार-बार इटली, जर्मनी और जापान से दब जाता है।

इङ्गलैण्ड इस वक्त लड़ाई को रोकने और अमन बनाये रखने की इतनी ज्यादा कोशिश क्यों कर रहा है इसका भेद समझ सकना मुशकिल नहीं है। सच पूछा जाय तो वह यह काम परोपकार की खातिर नहीं बल्कि अपने ही फ़ायदे की निगाह से करता है। पहली बात तो यह है कि इटली, जर्मनी जापान आदि की तरह इङ्गलैण्ड की रैयत लड़ाई के लिये तैयार नहीं है और न सहज में उसे तैयार किया जा सकता है। योरोप के ज्यादातर देशों में डिक्टेटरशिप क़ायम हो जाने पर भी इङ्गलैण्ड में जनता की राय का काफी असर है और इस लिये अधिकारी लोग जल्दी उसके ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई करने की हिम्मत नहीं रखते। दूसरी बात यह है कि इङ्गलैण्ड की सल्तनत अब बहुत ज्यादा बड़ी हो गई है और उसमें कहीं न कहीं कोई

झगड़ा लगा ही रहता है। इस लिये इङ्गलैण्ड का भला इसी में है कि जो कुछ उसके पास है उसी को सँभाले रहे। दूसरों से झगड़ा मोल लेने की न उसे फुर्सत है और न इसमें सिवाय नुकसान के उसका कुछ फ़ायदा हो सकता है। इङ्गलैण्ड की यह मनोवृत्ति मि० लायड जार्ज के नीचे लिखे बयान से साफ मालूम हो जाती है :—

"योरोपियन देशों के झगड़ों की इन तैयारियों की और विरोधियों द्वारा उनको बेकार करने की कोशिश की बातें सुनते-सुनते इङ्गलैण्ड वाले ऊब उठे हैं। हम हिटलर के दल वालों की अन्धी राष्ट्रीयता और यहूदियों पर किये गये जुल्मों को बहुत नापसन्द करते हैं, पर जर्मनी का विरोध करने के लिये किसी दल में शामिल होना नहीं चाहते।

"इसी तरह हम फ्राँस की हिफ़ाजत की तैयारियों से हमदर्दी रखते हैं, पर इसके नाम पर फ्राँस जो अपने हथियार दिन पर दिन बढ़ाता जा रहा है इसे सन्देह की निगाह से देखते हैं। हम राष्ट्र-संघ का भी भला चाहते हैं, पर उसके खोखलेपन की तरफ़ से आँखें नहीं बन्द कर सकते। पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी योरोप में छोटे-छोटे गिरोहों (माइनोरिटीज) पर होने वाले जुल्मों और बाल्कन के लड़ाई झगड़ों का हाल सुनकर हमको तकलीफ जरूर होती है, पर हम यह भी समझते हैं कि मौजूदा हालत में दूसरे देशों की दस्तन्दाजी से इन ख़राबियों का दूर हो सकना मुमकिन नहीं। हमारा इन झगड़ों से इतना ही

ताल्लुक है कि इनके सबब से दुनिया की माली हालत और भी ख़राब होती जा रही है।"

इस तरह इङ्गलैण्ड योरोप के झगड़ों से दूर रहने की कोशिश करता रहा है और आगे चल कर भी उसकी यही नीति रहेगी। वह है भी सबसे अलग समुद्र के बीच में। पर इसमें शक है कि वह आखीर तक ऐसा कर सकेगा। इस बारे में भारतीय यूनी-वर्सिटी के एक प्रोफेसर ने, जिनका जिक्र हम पीछे कर चुके हैं, जो कुछ कहा है वही हमको बहुत कुछ सच जान पड़ता है। अगली बड़ी लड़ाई का जिक्र करते हुये उन्होंने कहा था :—

"इङ्गलैण्ड इससे अलग रहने की कोशिश करेगा और इसका सबब साफ़ जाहिर है। वह अभी बहुत सी उलझनों में फँसा हुआ है और इस लिये वह हर तरह से इस नाश करने वाली लड़ाई से बचने की कोशिश करेगा। पर उसे जबर्दस्ती लड़ाई में घसीटा जायगा और लाचार होकर उसे किसी न किसी तरफ़ शामिल होना पड़ेगा।"

इङ्गलैण्ड के बहुत से राजनीतिज्ञ भी इस बात को मुमकिन समझते हैं और इस लिये पार्लियामेन्ट में बार-बार सरकार पर जल्दी से फौजी तैयारियां न करने का इल्जाम लगाया जाता है। इस बात में सबसे बढ़ कर मि० चर्चिल हैं। और भी कितने ही लोग ऐसे ही ख्यालात रखते हैं और आजकल इङ्गलैण्ड के अखबारों में इस बारे में काफी लिखा-पढ़ी हुआ करती है। मि० राबर्ट ब्लैकफोर्ड नामक मशहूर राजनैतिक लेखक ने, जिसने

पिछले महायुद्ध की भविष्यवाणी कई बरस पहले कर दी थी, अगली लड़ाई की सूचना देते हुये आज से चार साल पहले लिखा था :—

"एडमिरल सर चार्लस मैडन का यह कहना बिल्कुल सच है कि दूसरे देश हमारी समुद्री-सेना को ईर्षा की निगाह से देखते हैं। पिछले महायुद्ध के खत्म होते ही अमरीका हमारे बराबर जल-सेना रखने का दावा करने लगा था। आखिर उसकी बात मानी गई। सब की राय से लड़ाई के जहाज़ों की तादाद घटाई गई और क्रूजरों तथा तोपों का आकार तय कर दिया गया।

"इस समझौते पर अमल सिर्फ इङ्गलैण्ड ने ही किया, बाकी तमाम देश चालाकी से इसके खिलाफ़ चलते रहे। पिछले महायुद्ध में हमारी समुद्री-सेना संसार में सबसे ज्यादा ताक़तवर थी। आज क्रूजरों की निगाह से उसका नम्बर दूसरा है और गोताखोर नावों तथा नाशक जहाज़ों (डेस्ट्रायर) की निगाह से पाँचवा।"

पर अब सभी मुल्कों को लड़ाई के लिये तैयार होते देखकर इङ्गलैण्ड को भी डर लगने लगा है कि न मालूम कब दुनिया में मारकाट शुरू हो जाय और उसमें उसे भी फँसना पड़े। इस लिये अब वह भी सुस्ती छोड़ कर तेजी से लड़ाई की तैयारी करने लगा है। इस बारे में वहां की पार्लामेण्ट में सर टामस इन्सकिप ने सरकार की तरफ़ से एलान किया था :—

"अगर तूफान एकाएक हमारे सिर पर आजायगा तो

हथियारों की तैयारी के लिये हमको मौक़ा ही न मिलेगा। इस लिये लड़ाई का सामान तैयार करने के लिये हमको ऐसा इन्तज़ाम करना चाहिये कि २४ घण्टे पहले ख़बर मिलने पर भी आधुनिक ढङ्ग की लड़ाई की ज़रूरतें पूरी की जा सकें। जो कारख़ाने इस समय शान्ति-काल में काम आने वाली चीजें बना रहे हैं, उन्हें लड़ाई का सामान बनाने के लिये पूरी तरह तैयार कर दिया गया है। इस निगाह से ४०० कारख़ानों की पूरी जाँच की जा चुकी है और ५०० कारख़ानों को अलग-अलग हिस्सों में बाँट कर अलग-अलग तरह की चीजें बनाने का काम उनके सुपर्द किया गया है।......हवाई जहाज़ों के रखने के लिये भी इन्तज़ाम किया जा रहा है। कितनी ही मोटर कम्पनियों को सरकारी ख़र्चे पर मकान बनाने को कहा जायगा। यह सरकार की ही मिलकियत रहेंगे। इसका नतीजा यह होगा कि एक तरफ़ तो व्यापार में खलल न पड़ेगा और दूसरी तरफ़ सब चीजें सरकार को समय पर ठीक-ठीक मिल सकेंगी। लड़ाई का सामान तैयार करने में नाजायज फ़ायदा उठाने की जो सम्भावना रहती है उसे दूर करने का उपाय भी किया जायगा। सर बिलियम बेहरिज की मातहती में एक कमेटी इस बात पर विचार करने के लिये बनाई गई है कि लड़ाई के वक्त इङ्गलैंड की जनता को खाने का सामान बिना दिक्कत के किस तरह मिल सकता है। व्यापारी जहाज़ों, मुसाफ़िरी के हवाई जहाज़ों और आम लोगों की हिफ़ाज़त के सवाल पर भी ग़ौर किया जा रहा है।"

इटली को खुश रखने की कोशिश

लड़ाई के लिये तैयार हो जाने पर भी इङ्गलैण्ड जी जान से यह कोशिश कर रहा है कि जहाँ तक मुमकिन हो उसे अगले महायुद्ध में शामिल न होना पड़े। इस वक्त योरोप में उसका सब से बड़ा मुख़ालिफ़ इटली ही है। अबीसीनिया की लड़ाई के वक्त उसने इटली के रास्ते में रोड़ा अटकाने की कोशिश की थी, पर उसे फ़ौरन ही मालूम हो गया कि इटली ने हर एक बात के लिये इंतजाम करके यह लड़ाई छेड़ी है। तब से इङ्गलैण्ड बराबर उसे खुश रखने की कोशिश कर रहा है। इस बारे में हिन्दी-संसार के सुप्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय विषयों के लेखक पं० कृष्णकान्त जी मालवीय ने लिखा था :—

"इङ्गलैण्ड महीनों से इटली को खुश करने की जी जान से कोशिश कर रहा है। वह मेडीटेरेनियन समुद्र में इटली के स्वार्थों को मानने को तैयार है। इङ्गलैण्ड अबीसीनिया को इटली का मातहत देश मानने को तैयार है। इङ्गलैण्ड अबीसीनिया को राष्ट्र-संघ से निकालने और उसकी अन्त्येष्टि क्रिया करने को तैयार है। पर इच्छा होते हुये भी वह खुल्लमखुल्ला कुछ कर नहीं रहा है।

"इङ्गलैण्ड चीन की मदद करने को लालायित है। वह जापान से लोहा लेना भी चाहता है, पर यह सब करने का साहस उसमें नहीं है। वह इटली से डरता है, जर्मनी से भी डरता है।

वह जानता है कि अगर उसने चीन की जरा भी मदद की तो इटली और जर्मनी फौरन जापान का साथ देंगे और संसार-व्यापी महाभारत छिड़ जायगा। इङ्गलैण्ड इसी सबब से इस समय किसी भी मूल्य पर इटली की मित्रता खरीदने को तैयार है।"

दुरंगी नीति

इङ्गलैण्ड इन दिनों जैसी ढिलमिल नीति से काम ले रहा है उसका दूसरा सबब साम्यवाद या पूंजीवाद का सवाल है। इस वक्त जर्मनी, इटली और जापान पूंजीवाद के तरफ़दार हैं। वे खुल्लम-खुल्ला पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि वे कम्यूनिज्म या बोल्शेविज्म का ख़ात्मा करने को ही लड़ रहे हैं। इङ्गलैण्ड भी दरअसल पूंजीवाद के ही पक्ष में है। इसलिये इटली जर्मनी वगैरह से स्वार्थों का विरोध होने पर भी वह एकाएक इनसे झगड़ा करना नहीं चाहता। यही सबब है कि उसने अपना फ़ायदा होने पर भी स्पेन की साम्यवादी सरकार को कुछ मदद नहीं दी है। वह स्थिति से लाचार होकर फ्रांस, रूस आदि से दोस्ती कर रहा है, पर उसकी आत्मा इटली, जर्मनी के ही पक्ष में है। इसीलिये लोग अब तक यह निश्चय नहीं कर सके हैं कि दरअसल इङ्गलैण्ड का रुख क्या है और वह अख़ीर में किस तरफ़ झुकेगा ?

उपनिवेशों और हिन्दुस्तान का रुख

इङ्गलैण्ड के सामने इन दिनों एक मुश्किल यह भी खड़ी

हो गई है कि उसके उपनिवेश, और किसी हद तक हिन्दुस्तान भी पहले से ज्यादा आज़ाद हो गये हैं और लड़ाई के मामले में आँखें बन्द करके उसका साथ देना नहीं चाहते। सन् १९१४ की जर्मनी की लड़ाई में तमाम उपनिवेशों ने रुपये और सिपाहियों से इंगलैण्ड की दिल खोल कर मदद की थी। हिन्दुस्तान ने तो उस समय अपना सब कुछ साम्राज्य को बचाने के लिये समर्पित कर दिया था। उसने अपनी हैसियत से कहीं ज्यादा रुपया इङ्गलैण्ड की मदद और अपनी फौज के खर्च के रूप में दिया था। यहाँ के गाँव-गाँव से लाखों रङ्गरूट भरती होकर योरोप में लड़ने गये थे। पर अब यह हालत बहुत बदल चुकी है। कनाडा, दक्षिणी अफ़रीका, आस्ट्रेलिया वगैरह सभी ख़ास-ख़ास उपनिवेशों ने कितने ही मौकों पर साफ़ लब्ज़ों में कह दिया है कि वे अगली लड़ाई में अपनी खुशी से ही हिस्सा लेंगे। अगर इङ्गलैण्ड उनकी मर्जी के खिलाफ़ या उनसे बिना सलाह लिये किसी से लड़ाई छेड़ देगा तो वे उसकी कुछ भी जिम्मेदारी अपने ऊपर न लेंगे। रहा हिन्दुस्तान उसको अगर्चे अभी अख्तियार तो बहुत कम हैं, और उसमें इतनी ताक़त भी नहीं आई है कि अपनी बात को ज़ोर देकर मनवा सके, तो भी हमारी राष्ट्रीय कांग्रेस और राजनैतिक कांफरेन्सों ने एक नहीं कई बार इस बात के प्रस्ताव पास किये हैं कि हम इङ्गलैण्ड के किसी भी साम्राज्यवादी युद्ध में हिस्सा न लेंगे।

नाश के नये साधन—

लड़ाई का असली मतलब दुश्मन के ऊपर अपनी धाक जमा देना और उसे अपना हुक्म मानने को लाचार कर देना होता है। इस ख्याल से आज कल हर एक मुल्क ऐसे हथियार बनाने की कोशिश कर रहा है जो दूसरे मुल्कों के हथियारों से ज़्यादा कारगर हों। क्योंकि अब दिन पर दिन लड़ाई का दारमदार आदमियों के बजाय हथियारों और तरह-तरह की मशीनों पर अधिक होता जाता है। मिसाल के लिये अगर किसी मुल्क के पास हवाई जहाज़ न हों, तो दूसरा मुल्क जिसके पास बहुत से हवाई जहाज़ हैं, छोटा होने पर भी उसको हरा सकता है। इस बात की सचाई चीन-जापान तथा अबोसीनिया-इटली की लड़ाइयों में देखी जा चुकी है।

यही सबब है कि इन दिनों योरोप के तमाम मुल्क और अमेरिका, जापान बगैरह मौजूदा हथियारों की तरक्की करने और नये-नये हथियारों के बनाने में लगे हैं। उनका इरादा ऐसी तैयारी

करना है जिससे वे लड़ाई छिड़ते ही दुश्मन के सर पर जाकर पहुँच जायँ और उसे मुक़ाबला करने का मौक़ा ही न दें। इस बारे में जर्मनी के एक सेनापति का कहना है :—

"जैसे ही लड़ाई करने का फ़ैसला हो जायगा हर एक लड़ने वाला मुल्क, जिसके पास नये ढङ्ग के हथियार होंगे, अपने हवाई जहाज़ों, मोटरों और लम्बी मार की तोपों द्वारा यह कोशिश करेगा कि जहाँ तक मुमकिन हो जल्दी दुश्मन के मुल्क में पहुँच कर उसकी राजधानी और ख़ास-ख़ास मुकामों पर हमला करे। यह कहना तो मुशकिल है कि इन शुरू के ही हमलों से लड़ाई का फ़ैसला हो जायगा, पर इतना ज़रूर है कि हर एक लड़ने वाला मुल्क पहले ही झपट्टे में दुश्मन को इतना नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेगा जिससे उसका तमाम इन्तजाम गड़बड़ हो जाय। वह यह भी कोशिश करेगा कि लड़ाई दुश्मन की जमीन पर हो। इस तरह कोई ताज्जुब नहीं कि पहले हमले में ही इन मुल्कों के ख़ास-ख़ास फौजी अड्डे नष्ट हो जायँ।"

नये हथियारों की ताक़त

इस तरह के हमले में कामयाबी उसी मुल्क को मिल सकती है जिसने अमन के जमाने में ही लड़ने की ज्यादा से ज्यादा तैयारी कर रखी होगी। क्योंकि आजकल जैसे वैज्ञानिक हथियार ईजाद हो रहे हैं और उनसे काम लेने को जैसे सीखे हुये होशियार सिपाहियों की ज़रूरत है वे जल्दी ही तैयार नहीं किये जा सकते।

लड़ाई छिड़ने के वक्त जिस मुल्क के पास नये ढङ्ग की युद्ध-विद्या के जानकार लोगों की तादाद जितनी ही ज्यादा होगी और लड़ाई का सामान जितना ही बढ़िया होगा उतनी ही ज्यादा कामयाबी उसे पहले हमले में मिल सकेगी। और अगली लड़ाई में यह पहला हमला इतना महत्वपूर्ण होगा कि अगर उसी से हार-जीत का फ़ैसला हो जाय तो कोई ताज्जुब नहीं। क्योंकि आजकल जो वैज्ञानिक हथियार बनाये गये हैं उनकी ताक़त पिछले महायुद्ध में काम लाये गये हथियारों से सैकड़ों गुना बढ़ गई है। उस समय के हवाई जहाज़ आजकल के हवाई जहाज़ों के मुकाबले में खिलौनों की तरह थे और यही बात जहरीली गैस के बारे में भी कही जा सकती है। बिजली से मारने वाले हथियारों का तो उस वक्त पता ही नहीं था। इन्हीं तमाम बातों को समझ कर आजकल कोई मुल्क अपनी फ़ौज़ी तैयारी को रोकना नहीं चाहता, अगर्चे निःशस्त्रीकरण कानफरेंसों में बार-बार इस पर ज़ोर दिया जाता है।

अगर ऊपर लिखी बातें सच हैं तो इसका नतीजा यह होगा कि अगली लड़ाई बहुत थोड़े दिनों में खत्म हो जायगी। आज-कल कितने ही युद्ध-विद्या के जानकार ऐसी राय जाहिर भी कर रहे हैं। कप्तान लिडिल हार्ट ने, जो सैनिक इतिहास के बहुत बड़े विद्वान् माने जाते हैं, अगली लड़ाई के बारे में लिखते हुये 'फिलीपाइन हेरल्ड' नामक पत्र में बतलाया था :—

"लड़ाई का ऐलान होने पर जैसे ही फ़ौजें इकट्ठी होने लगेंगी वैसे ही उनको लकवा मार जायगा। अगर वे किसी तरह एक दूसरे के मुकाबले में पहुंच भी गई तों उनको फ़ौरन ही खाइयाँ खोदकर जमीन के भीतर छुप जाना होगा। उनके लिये बाहर रहना खुदकुशी करने के बराबर होगा। खुश्की की फौज का हमला करना नामुमकिन सा होगा। लड़ने वाले देश या तो शुरू में ही लाचार हो जायँगे या ऐसी हालत में पड़ जायँगे कि आगे बढ़ना अपने पैरों में आप ही कुल्हाड़ी मारना होगा।"

नये हथियारों की ताक़त देखते हुये यह ख्याल ग़लत नहीं कहा जा सकता। पर इसमें कुछ रुकावटें भी हैं। आजकल तमाम मुल्कों में लड़ाई के नये-नये आविष्कारों के लिये जैसी सिरतोड़ कोशिश की जा रही है उसके सबब से नये हथियार थोड़े ही दिनों के लिये कारगर होते हैं। आज अगर एक देश घन्टे में दो सौ मील जाने वाला हवाई जहाज़ बनाता है तो कल दूसरा देश ढ़ाई सौ मील की चाल का जहाज़ तैयार कर लेता है। अगर कोई मुल्क बहुत तेज़ जहरीली गैस तैयार करता है तो दूसरा ऐसी नकाब (मास्क) ढूँढ निकालता है जिस पर उसका कुछ असर ही न हो। यही बात दूसरे आविष्कारों की है। ऐसी हालत में अगर कोई मुल्क पहले से ही लड़ाई का बहुत ज्यादा सामान तैयार करके रखले तो उसे नुकसान के सिवा फ़ायदा की उम्मेद बहुत कम है। मान लीजिये आज किसी मुल्क ने लकड़ी और अलूमीनियम या किसी दूसरी हल्की धातु के बने

हजार, दो हजार हवाई जहाज बना कर रख लिये। इसके बाद कोई ऐसा आविष्कार हुआ जिससे फौलाद के हवाई जहाज़ बनने लगे और उनकी चाल भी काफी तेज़ हुई। ऐसी हालत में अगर दूसरा देश नये ढङ्ग के सौ हवाई जहाज़ भी बना लेगा तो वे पहले देश के हजारों जहाजों को नष्ट करने को काफ़ी होंगे।

इस मिसाल से हम समझ सकते हैं कि इस ज़माने में कोई मुल्क पहले से ही लड़ाई की पूरी तैयारी नहीं कर सकता। इसके लिये लड़ाई का सामान तैयार करने के बजाय अपने यहाँ के कारखानों का ऐसा इन्तज़ाम करना पड़ेगा कि लड़ाई का निश्चय होते ही जल्दी से जल्दी नये ढंग के हथियार, हवाई जहाज़, लड़ाई की मोटरें, गैस बगैरह तैयार हो सकें। इस निगाह से सोचा जाय तो लड़ाई का ज़्यादा दिनों तक चलना नामुमकिन नहीं। ख़ास कर जब कि लड़ने वाले सभी मुल्कों के पास बराबरी के वैज्ञानिक हथियार होंगे और बचाव की तरकीबें भी उनको मालूम होंगी तो थोड़े ही अर्से में वे एक दूसरे के मुक़ाबले में टूट-फूट कर बेकार हो जायेंगे। इसके सिवा इन नये हथियारों के काम में लाने में बहुत ज्यादा तादाद में पैट्रोल, गैसोलीन और दूसरे मसालों की जरूरत होगी। इसलिये जब लड़ने वाले मुल्कों में इन चीज़ों के गोदाम खाली हो जायेंगे तो इन वैज्ञानिक हथियारों से काम नहीं लिया जा सकेगा। ऐसी हालत में फिर सबको पुराने तरीके से बन्दूक, तलवार वगैरह का ही सहारा लेना पड़ेगा और लड़ाई बरसों तक चल सकेगी।

लड़ाई की व्यापकता

अगली लड़ाई में हर एक मुल्क इस बात की कोशिश करेगा कि जहाँ तक मुमकिन हो दुश्मन के कारखानों और ऐसी चीज़ों को बर्बाद कर दिया जाय जिनसे लड़ाई की तैयारी में मदद मिलती है। मिसाल के लिये अगर वह दुश्मन की कोयले की खानों को हवाई जहाजों से बम गिरा कर बर्बाद कर दे तो रेलों का चलना मुशकिल हो जायगा। उनके बिना फौजों को किस तरह एक जगह से दूसरी जगह भेजा जा सकेगा? अगर पैट्रोल की टंकियों और मिट्टी के तेल के कुओं को जला दिया जाय तो हवाई जहाज़ और मोटरें रखी ही रह जायँगी। अगर बिजलीघरों को उड़ा दिया दिया जाय तो बहुत से कारख़ाने रुक जायँगे। इसी तरह गैस और गोली बारूद के कारख़ानों को नष्ट करके भी दुश्मन को बड़ी मुश्किल में डाला जा सकता है। पर चूंकि ये तमाम चीजें शहरों में या शहरों के आसपास ही होती हैं इस लिये उन पर हवाई जहाज़ों या लम्बी मार की तोपों द्वारा गोलाबारी करने से आम रैयत के लाखों आदमियों का मारा जाना निश्चित ही है।

इतना ही नहीं दुश्मन के लड़ाई का सामान बनाने वाले कारख़ानों, फ़ौज को ले जाने वाली रेलों, कोयले और लोहे की खानों आदि में जितने आदमी काम करते हैं एक निगाह से वे सब लड़ने वाले ही माने जायँगे। क्योंकि उनकी मदद के बिना

लड़ाई का काम नहीं चल सकता। इस विचार-धारा को अगर कुछ बढ़ाया जाय तो यह भी कहा जा सकता है कि जो लोग फौजों के लिये अनाज और दूसरी चीज़ें पैदा करते हैं या उनके लिये कपड़े और जूते वगैरह तैयार करते हैं वे भी लड़ाई में शामिल हैं क्योंकि इन चीजों के बिना किसी फौज का काम एक दिन भी नहीं चल सकता। इस लिये कोई भी लड़ने वाला देश दुश्मन के शहरों और गाँवों पर गोलावारी करने या उनमें रहने वालों को जहरीली गैस वगैरह से मारने में आगापीछा न करेगा। बल्कि इस बात की कोशिश करेगा कि वह पहले ही हमले से ज्यादा से ज्यादा नुकसान पहुँचा कर दुश्मन को तैयार होने से रोके।

लड़ाई फ़ौजों में नहीं बल्कि मुल्कों में होगी

इन बातों से साफ़ जाहिर है कि अब वह जामाना सदा के लिये चला गया जब कि दो फौजें लड़ाई के मैदान में आमने-सामने खड़ी होती थीं और उनमें से जो दूसरी को भगा देती थी उसी की जीत हो जाती थी। अब एक निगाह से लड़ाई के मैदान शब्द का कुछ मतलब ही नहीं रह गया है। युद्ध-क्षेत्र के अगले भाग (फ्रंट) और पिछले भाग (रियर) का भी अब कोई मतलब नहीं रहेगा। हवाई जहाज़ों के सबब से शुरू से ही सारा मुल्क लड़ाई का मैदान बन जायगा और उसमें रहने वाला हर एक प्राणी किसी न किसी निगाह से उसमें शामिल
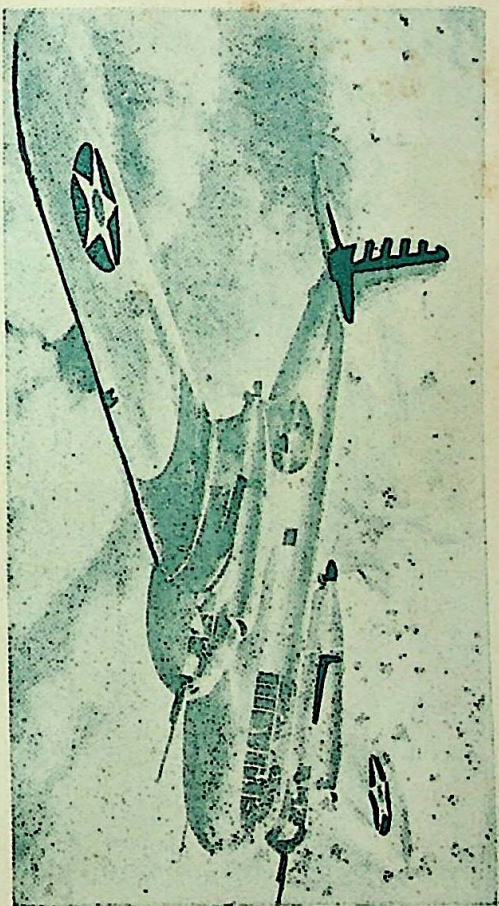
लड़ाई के लिये जो हवाई जहाज़ बनाये जा रहे हैं उनमें अमरीका का यह नया जहाज़ बड़ा ही ज़ोरदार और अद्भुत है। इसमें तीन जहाज़ एक साथ जुड़े हैं। उनके सामने हल्की तोपें लगी हुई हैं। यह जहाज़ दुश्मन के पुरानी चाल के जहाजों को सहज में नष्ट कर सकता है।

समझा जायगा। इस तरह अगली लड़ाई युद्ध के तरीक़े को एक दम बदल देगी। जिन दाव-पेंचों से आजकल लड़ाइयों में काम लिया जाता है वे बिल्कुल बेकार हो जायँगे।

बहादुरी और ताक़त का महत्व जाता रहेगा

अगली लड़ाई में एक ख़ास बात यह भी होगी कि उसमें भाग लेने वालों के लिये बहादुरी और ताक़त जैसे गुणों को ज्यादा महत्व का न समझा जायगा। इन बातों की क़दर उसी वक्त थी जब कि दुश्मन के सामने पहुँच कर हाथ से चलाये जाने वाले हथियारों से काम लिया जाता था। उस ज़माने में जो आदमी घायल होकर भी पीठ नहीं दिखलाता था और दुश्मन के मुक़ाबले में डटा रहता था वही सबसे बड़ा बहादुर समझा जाता था। पर अब ऐसी बहादुरी की कुछ भी क़ीमत नहीं समझी जाती। अब बख़्तरदार मोटर में बैठे हुए चार कमज़ोर आदमी ऐसे सैकड़ों बहादुरों को, अगर उनके पास भी नये ढङ्ग के हथियार न हों तो, चन्द मिनटों में ख़त्म कर सकते हैं। अगर इस मोटर में बैठे हुये आदमियों में से कोई डरपोक भी हो, लड़ाई को देख कर मरने से डर जाय, तो भी कोई नुक़सान नहीं, क्योंकि उसके लिये निकल भागने का कोई रास्ता ही नहीं होता। इसी तरह जो आदमी जमीन के भीतर पचास गज नीचे सुरङ्ग में बन्द होकर बिजली के बटन को दबा कर तोपें चलाते हैं उनको भी बहादुर होने की जरूरत नहीं

है, अगर्चे वे हज़ारों ताक़तवर आदमियों को यमलोक पठा सकते हैं। बिजली की लड़ाई तो और भी अजीब होगी। वह बीसियों कोस की दूरी से लड़ी जायगी और उसके लड़ने वाले छः फीट लम्बे, हट्टे-कट्टे सिपाहियों के बजाय शायद दुबले-पतले, चश्मा लगाये हुये और एक ही थप्पड़ में गिर जाने वाले वैज्ञानिक होंगे, जो बड़ी से बड़ी फ़ौजों को पलक मारते-मारते जमीन पर सुला देंगे।

हमारे यहाँ के पुराने ख्यालों के लोग ऐसी लड़ाई का हाल सुन कर हँसते हैं और उसे औरतों की लड़ाई के नाम से पुकारते हैं। उनको जान लेना चाहिये कि अब लड़ाई का मतलब बहादुर कहलाना या वाहवाही हासिल करना नहीं रह गया है; बल्कि किसी भी तरकीब से दुश्मन को ख़त्म कर देना माना जाता है। इसमें हँसने की अथवा निन्दा की कोई बात नहीं है। दुनिया की शुरूआत के वक्त से आदमी की यही ख्वाहिश रही है कि जितना बन सके दूर ही से अपने दुश्मन को मार दिया जाय। अगर ऐसा न होता तो तलवार के बजाय तीर कमान का आविष्कार न होता। तीर कमान भी एक तरह को बन्दूक़ ही है जिससे दुश्मन को सैकड़ों गज की दूरी से, छुप कर भी, मारा जा सकता है। फिर हम को उन 'दिव्य' अस्त्रों की बात भी याद करना चाहिये जिनसे अयोध्या में बैठे-बैठे लंका की ख़बर ली जा सकती थी, या जिनके द्वारा रामचन्द्रजी अपने कैम्प में बैठ कर ही रावण के छत्र को काट कर गिरा सकते थे। दुश्मनों को बेहोश करके

नागपाश में बाँधने की बात भी रामायण और पुराणों में जगह-जगह मिलती है। अगर इन कथाओं में कुछ भी सचाई है तो हमको मानना ही पड़ेगा कि पुराने जमाने में हमारे पुरखे भी वैज्ञानिक हथियारों से काम लेते थे, चाहे उनके बनाने और काम में लाने की तरकीब आजकल से बिल्कुल ही अलग क्यों न हो।

गति (चाल) की प्रधानता

इससे साबित होता है कि लड़ाई में कामयाबी हासिल करने का सबसे बड़ा जरिया गति या चाल ही है और इसी पर आजकल सब देश जोर दे रहे हैं। जिसका हथियार पहले पहुँच कर दुश्मन को मार सकता है उसी के जीतने की ज्यादा उम्मेद है। दूसरी बात अपने को और अपने हथियार को ऐसी चीज़ से ढक कर रखना है जिससे दुश्मन के बार का असर न हो। यहाँ पर हथियार का मतलब सिर्फ तोप, बन्दूक या बम आदि से नहीं है, बल्कि जिन चीजों के जरिये इनको काम में लाया जाता है उनकी गिनती भी हथियारों में ही है। जैसे हवाई जहाज़ या 'टैंक' (बख्तरदार मोटरगाड़ी) द्वारा आदमियों को मारा नहीं जाता पर बम और मशीनगनों को उन्हीं में रखकर ऐसी जगह ले जाया जाता है जहाँ से उनको दुश्मन पर फेंका जा सके। इस लिये आजकल हर एक मुल्क हवाई जहाजों और मोटरों की चाल को तेज करने तथा उनके ऊपरी ढकने (बख्तर) को मज़बूत बनाने में लगा है।

टैंक

आजकल खुश्की की लड़ाई का सबसे ज्यादा भयंकर हथियार 'टैंक' समझा जाता है। सब से पहले यह सन् १९१४ की जर्मनी की लड़ाई में काम लाया गया था। इसके पहले सभी मुल्क तोपों का दर्जा ही बड़ा समझते थे और उन्हीं के लिये ज्यादा रूपया खर्च किया जाता था। सन् १९१७ में यप्रेस की लड़ाई में, जो क़रीब पाँच महीने तक चलती रही थी, सिर्फ अङ्गरेजी तोपों ने ही ४० लाख से अधिक गोले छोड़े थे। इनकी कीमत २ करोड़ २० लाख पौंड थी। फर इनसे दुश्मन को बहुत कम नुक़सान पहुँचाता था और हार-जीत का कुछ पता ही नहीं चलता था। यह देख कर बड़े अफसरों ने 'टैंक' बनाने की तरफ़ ध्यान दिया। इनसे बहुत थोड़े ख़र्च में महीनों का काम कुछ दिनों में ही हो गया। इन 'टैंकों' पर बख्तर के सबब से मशीनगन या बन्दूक की गोली का कुछ असर नहीं होता था और उनमें बैठ कर दुश्मन की खाइयों तक सहज में पहुँचा जा सकता था। वहाँ पहुँच कर 'टैङ्क' के भीतर लगी मशीनगनों से दुश्मन के सिपाहियों को मनमाने ढङ्ग से भून डालना सहज था। इस तरह इस लड़ाई में एक तरफ़ के सिपाहियों की हिफ़ाजत आध इंच मोटी फ़ौलाद की चद्दर कर रही थी और दूसरी तरफ़ के सिपाहियों के बदन पर सिर्फ ऊनीकोट थे। यह लड़ाई बिल्कुल बेजोड़ थी और इसके सबब से जर्मन फौज को बहुत जल्दी पीछे हटना पड़ा। ८ अगस्त १९१७ को 'एमीन्स' की लड़ाई में अङ्गरेजों की

टैंक-सेना ने जर्मन फौज को इतना नुक़सान पहुँचाया कि वह फिर सम्हल न सकी। इस लिये जनरल हिण्डेनबर्ग ने ८ अगस्त को जर्मन फ़ौज का 'काला दिन' कहा था और जनरल ज्वेहल को कहना पड़ा था कि "हमको जनरल फोश ने नहीं वरन् जनरल 'टैंक' ने हराया है।"

'टैङ्क' से काम लेने में तोपों की बनिस्बत थोड़े ही आदमियों की ज़रूरत पड़ती है। साथ ही हिफाजत का काम उससे बहुत अच्छी तरह निकलता है। पिछले महायुद्ध में 'सोम' की लड़ाई में पहले ही दिन अङ्गरेजों के ६० हज़ार सिपाही काम आये थे, पर जब अङ्गरेजी सेना 'टैङ्कों' को सामने रख कर आगे बढ़ने लगी तो 'एमीन्स' की लड़ाई में पहले दिन सिर्फ़ एक हज़ार आदमी काम आये। तोपों और गोलों के बनाने तथा ढोने में जितनी मिहनत करनी पड़ती है टैङ्कों के लिये उससे बहुत कम मिहनत दरकार होती है। साथ ही आगे बढ़ने में इनसे बहुत मदद मिलती है। सन् १९१७ में जब कि मित्र राष्ट्रों की फौज में 'टैङ्कों' का इस्तेमाल कम किया जाता था, वे दिन भर में ११० गज से ज्यादा नहीं बढ़ सकते थे। पर सन् १९१८ के आखिरी भाग में जब बहुत से 'टैङ्क' बन कर तैयार हो गये तो वही सेना हर रोज ११०० गज बढ़ने लगी। इन तमाम बातों से हर एक मुल्क में 'टैंक' और बख़्तरदार गाड़ियों का रिवाज बढ़ गया है और पैदल-सेना तथा तोपों का दर्जा पहले की बनिस्बत बहुत घट गया है।

हवाई जहाज़

जो बात 'टैङ्कों' के बारे में है वही हवाई जहाज़ों के लिये कही जा सकती है। अगर्चे पिछले महायुद्ध में हवाई जहाज़ों की तादाद बहुत कम थी और उनसे काम भी ज़्यादा नहीं लिया जा सका, तो भी उसी तजुर्बे से यह साबित हो गया कि हवाई जहाज़ एक ऐसा हथियार है जिससे बहुत थोड़े ख़र्च और मिहनत से दुश्मन को ज़्यादा से ज़्यादा नुकसान पहुँचाया जा सकता है। क्योंकि जहाँ तोप, बन्दूक और दूसरे हथियारों को बहुत दूर रह कर इस्तेमाल करना पड़ता है, हवाई जहाज़ ठीक सर पर पहुँच कर वार कर सकता है। इसलिये उसका असर दूसरे हथियारों से कहीं ज़्यादा होता है।

हवाई टारपेडो

पर हवाई जहाज़ में एक बड़ा ऐब यह है कि हलका होने के सबब उसे बहुत सहज में गिराया जा सकता है। ज़ोरदार बन्दूक की गोली से भी उसे नुकसान पहुँचाया जा सकता है और तोप का तो मामूली गोला भी उसे फ़ौरन नीचे गिरा सकता है। इन दिनों हर एक मुल्क में हवाई जहाज़ों को तोड़ने की नई-नई तोपें बनाई जा रही हैं जिनसे आसमान की तरफ़ गोले-गोलियों की झड़ी लग जाती है। ऐसी हालत में हवाई जहाज़ अगर नीचा उड़े तो उसका बच सकना मुशकिल है और अगर बहुत ऊँचा उड़े तो ज़मीन की किसी चीज़ पर ठीक निशाना नहीं लगा सकता।

इस कमी को दूर करने के लिये अब हवाई टारपेडो ईजाद किया गया है। ये टारपेडो के हवाई जहाज़ बिना आदमी के सिर्फ बेतार के जरिये उड़ सकते हैं। कुछ दिन हुये अमरीका में एक हवाई जहाज़ को बिना चलाने वाले के १२५ मील तक उड़ाया गया था। इङ्गलैण्ड में भी ऐसे जहाज़ की परीक्षा ली जा चुकी है। इस जहाज़ में इस तरकीब से बम और दूसरे मसाले भरे रहेंगे कि जैसे ही जहाज़ जमीन पर गिरे वे सब धड़ाके के साथ फट जायँ। इस निगाह से इस जहाज़ को एक बड़ा भारी बम का गोला ही समझना चाहिये। इस तरह के सौ, दौ सौ टारपेडो-जहाजों को सिर्फ दस-बीस हवाई जहाज़ आसमान पर बहुत ऊपर उड़ते हुये बेतार के तार की मदद से मरजी के मुताबिक चला सकते हैं। जब ये ठीक मुक़ाम पर पहुँच जायँगे तो इनको नीचे गिरा दिया जायगा। जब किसी बड़े शहर या फ़ौज के ऊपर इस तरह के उड़ते हुये नाश करने वाले गोलों का दल पहुँच जायेगा तो उसकी क्या हालत होगी उसका ख़्याल कर सकना मुशकिल नहीं है।

बेतार के तार का दूसरे हथियारों में उपयोग

इस बेतार की ताक़त को हवाई जहाज़ की तरह दूसरे हथियारों में भी काम में लाया जा सकता है। टैंक, मोटर, पानी के जहाज़, गोताखोर नावें, तोप आदि सभी चीजें बेतार से चलाई जा सकती हैं। जब ऐसा होगा तो लड़ाई की शकल ही

बदल जायगी। उस समय लड़ाई आदमियों में न हो कर सिर्फ़ मशीनों में होगी। उनके चलाने वाले शायद कोसों दूर छुपे हुये मुक़ामों में बैठे रहेंगे।

लम्बी मार की तोपें

पिछली लड़ाई में जब जर्मनी ने ७५ या ८० मील गोला फेंकने वाली 'बिग वर्था' नाम की तोपों से पेरिस पर गोलाबारी की थी, तो सब जगह हलचल मच गई थी। क्योंकि तब कोई यह ख्याल नहीं कर सकता था कि तोप से इतनी दूर गोला फेंका जा सकता है। पर लड़ाई के बाद जो नई ईजादें हुई हैं उनके सामने 'बिग वर्था' कोई चीज़ नहीं। अब ऐसी तोपें बनाई गई हैं जिनसे सवा सौ या डेढ सौ मील तक गोला फेंका जा सकता है। मालूम हुआ है कि इन तोपों में कोई ख़ासियत नहीं है बल्कि गोले ही नये ढङ्ग के बनाये गये हैं। गोला तोप से निकल कर दस बीस मील जाने के बाद खुदबखुद फट जाता है और उसके भीतर से दूसरा छोटा गोला निकलता है। यह छोटा गोला पहले गोले के फटने के जोर से फिर दस-बीस मील जाता है और तब उसके भीतर से तीसरा गोला निकलता है। इस तरकीब से ये गोले बड़ी दूर चले जाते हैं और तब निशाने पर गिरते हैं।

पर जब से हवाई जहाजों की ज्यादा तरक्की हुई है तब से तोपों की तरफ़ कम ध्यान दिया जाने लगा है। क्योंकि अब तोपों से आत्मरक्षा का काम ही लिया जा सकता है। हमले का
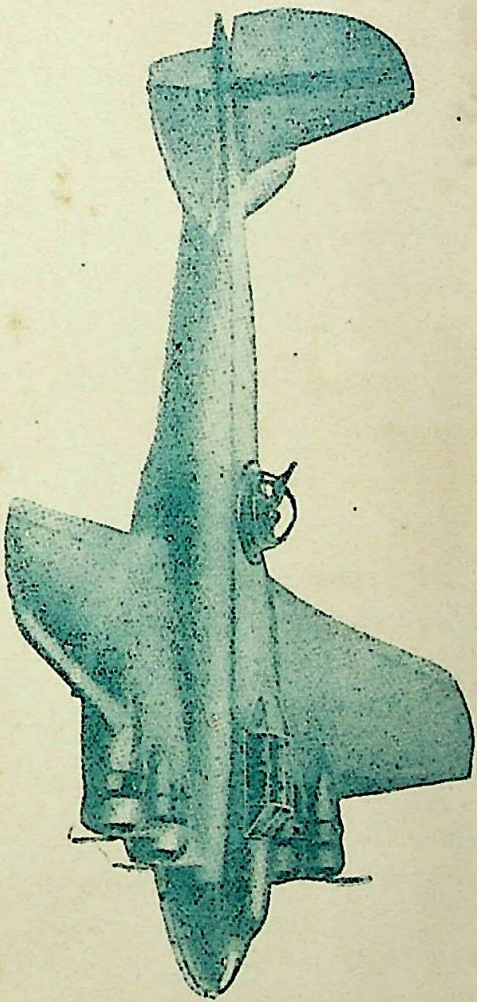
लड़ने वाला हवाई जहाज़

इस हवाई जहाज़ के नीचे जो दो मशीनगनें लगी हैं वे बड़ी तेजी से गोलियां चलाती हैं। जब आकाश में ऐसे दो हवाई जहाज़ एक दूसरे को नष्ट करने के लिये गोलियों की बौछार करते हुये लड़ते हैं तो वह दृश्य बड़ा रोमाञ्चकारी होता है।

काम तो हवाई जहाज़ों से ही कहीं अच्छी तरह और कम ख़र्च में हो सकता है।

जमीन के भीतर बसे शहर

साइन्स के इन नये आविष्कारों का एक नतीजा शायद यह होगा कि आने वाले जमाने में लोग दिन पर दिन जमीन के भीतर छुपे मुक़ामों में रहने की कोशिश करेंगे। अब भी फ्रांस में जर्मनी की सरहद के पास जो क़िले बनाये गये हैं वे एक निगाह से जमीन के भीतर बसे शहर ही हैं। इसके सिवा फ्रांस और दूसरे मुल्कों में ज़मीन के भीतर और भी हज़ारों मकान ऐसे बनाये जा रहे हैं जहाँ नगर निवासी ज़रूरत पड़ने पर छिप सकें। ऐसा जान पड़ता है कि अगली हवाई लड़ाई के शुरू होने पर शायद ही कोई आदमी जमीन के ऊपर रहना पसन्द करेगा। हमको रामायण और पुराणों में किष्किन्धा प्रान्त और दूसरी जगहों में जमीन के भीतर और गुफाओं में बसे जिन नगरों का हाल मिलता है क्या ताज्जुब है कि वे ऐसे ही सबब से बनाये गये हों। क्योंकि उन दिनों विमान बनाये ही जाते थे और 'दिव्य' अस्त्रों से काम लेने की तरकीब भी लोग अच्छी तरह जानते थे। हमारी समझ में 'दिव्य' का मतलब वैज्ञानिक या 'साइन्टिफिक' के सिवा और कुछ नहीं हो सकता।

इन तमाम बातों पर ग़ौर करने से जान पड़ता है कि अगली लड़ाई में बड़े-बड़े शहरों में रहना बहुत ख़तरनाक होगा। हर

एक लड़ने वाला दुश्मन की राजधानी और बड़े-बड़े शहरों को ही अपना निशाना बनायेगा, जिसमें थोड़ी सी मेहनत से ज्यादा से ज्यादा आदमी मारे जा सकें। इस लिये योरोप में अभी से जहरीली गैस तथा हवाई जहाजों से फेंके जाने वाले बमों से बचने के लिये बड़े-बड़े शहरों की आबादी को दूर-दूर बहुत से छोटे हिस्सों में बाँट देने का प्रस्ताव किया जा रहा है। क्योंकि अगर लोग छोटे-छोटे गाँवों के रूप में रहने लगे तो हर एक जगह हवाई जहाजों का पहुँच सकना मुशकिल होगा। इसमें तो शक ही नहीं कि अगली लड़ाई के समय और उसके बाद भी बड़े-बड़े शहरों का स्वरूप बहुत बदल जायगा। इससे भी पूरी तरह तो बचाव नहीं हो सकेगा तो भी दुश्मन के हमले का असर कम जरूर हो जायगा।

——नये साम्राज्यवादी अर्थात् इटली और जर्मनी मिल कर पुराने साम्राज्यवादियों अर्थात् इङ्गलैएड और फ्रांस के खिलाफ तैयारी कर रहे हैं। फ्रांस में आम तौर पर यह ख्याल फैला है कि इटली और जर्मनी ने दुनिया को बाँट लिया है। एक आर अफ्रीका और भूमध्यसागर को इटली हथियाना चाहता है तो दूसरी ओर मध्य और पूर्वीय योरोप पर जर्मनी की निगाह है।

—राष्ट्रीय कांग्रेस के वैदेशिक विभाग की विज्ञप्ति से

राक्षसी-माया—

जैसे-जैसे आदमियों की अक्ल बढ़ती जाती है वे ताक़त के बजाय तरकीब से ज्यादा काम लेने लगते हैं। दुनिया में जितनी तरह के यंत्र और मशीनें देखने में आती हैं वे इसी तरह तैयार हुई हैं। लड़ाई की विद्या में भी हमको यही बात दिखलाई पड़ती है। शुरू में आदमी लाठी, गदा, वगैरह जैसे हथियारों को काम में लाते थे। इनसे वे अपने दुश्मन को ऐसी चोट पहुँचाना चाहते थे जिससे उसका कोई अङ्ग कट कर अलग हो जाय या उसका कचूमर निकल जाय। यह दुश्मन को मारने का सबसे मामूली या पाशविक तरीका था। जैसे जानवर नाखूनों और दाँतों से अपने शिकार को चीर-फाड़ डालता है उसी तरह की कोशिश आदमी भी करते थे। पर जैसे-जैसे उनकी अक्ल बढ़ती गई और वे शरीर-विज्ञान में तरक्की करते गये, मारने के नये-नये तरीके निकलते गये। आदमियों को मालूम हो गया कि जो काम वे बहुत मिहनत से करते हैं वही

जरा से इशारे में भी हो सकता है। अगर तरकीब से काम लिया जाय तो तलवार का काम सुई से भी निकल सकता है।

आजकल लड़ने वाले मुल्कों में जिन दम घोट कर मारने वाली जहरीली गैसों और बिजली के हथियारों का आविष्कार किया जा रहा है उनका मतलब यही है। वे आदमी के दिल, फेफड़े और भीतरी हिस्से पर ऐसा असर करते हैं जिससे उसकी मौत फ़ौरन ही या थोड़े वक्त में तकलीफ सह कर हो जाती है। इस तरह जो काम आधी छटाँक की बन्दूक की गोली से होता है वही एक सरसों से कम दवा द्वारा हो जाता है। गोली लगने वाले आदमियों में से बहुत से बच भी जाते हैं, पर भीतरी अङ्गों में ख़राबी पैदा हो जाने पर बचना नामुमकिन सा हो जाता है। बिजली की लड़ाई इससे भी सूक्ष्म है। उसमें आदमी के किसी अङ्ग को किसी तरह का नुक़सान नहीं पहुँचता, वह जैसा का तैसा दिखलाई पड़ता है, पर उसकी जान निकल जाती है। बिजली का हथियार न आँखों से दिखाई पड़ता है, न उसमें किसी तरह की आवाज़ होती है, न किसी तरह की चेतावनी मिलती है—बस जरा सा धक्का लगता है और मनुष्य जहाँ का तहाँ ठण्डा हो जाता है। उसका असर मनुष्य के दिमाग़ अथवा ज्ञान तन्तुओं पर पड़ता है और एक सेकिण्ड से भी कम में प्राणवायु बाहर निकल जाता है। इसे चाहे आप इन्द्र का वज्र समझ लीजिये, चाहे ब्रह्मास्त्र समझ लीजिये, और चाहे मेघनाद की शक्ति।

रासायनिक युद्ध की तैयारी

आजकल कोई भी ताक़तवर मुल्क ऐसा नहीं है जिसमें जहरीली गैस के बारे में जाँच पड़ताल न की जा रही हो। योरोप और अमेरिका के सभी मुल्कों में इसके लिये बड़ी-बड़ी प्रयोगशालायें खोल दी गई हैं, जिनके लिये वहाँ की सरकारें हर साल करोड़ों रुपया ख़र्च करती हैं। रासायनिक युद्ध की तैयारी के लिये हर एक मुल्क में कमेटियाँ क़ायम कर दी गई हैं। इनमें वैज्ञानिक अथवा साइन्सदां लोगों के सिवा रासायनिक सामान तैयार करने वाले कारख़ानों के प्रतिनिधि और फ़ौजी अफ़सर भी शामिल रहते हैं। ज्यादातर मुल्कों में तो रासायनिक सामान के कारख़ानों की देखरेख फ़ौजी अफ़सरों के सुपुर्द कर दी गई है। अमरीका में ऐसे सभी कारखानों में रिजर्व सेना का एक-एक अफ़सर रख दिया गया है। रासायनिक सामान के कारखाने वाले, जिनको इस तैयारी से सबसे ज्यादा फ़ायदा होता है, इसे और भी बढ़ावा देते रहते हैं।

रासायनिक लड़ाई की तैयारी के लिये सन् १९२५ में अमेरिका का बजट ८७ लाख डालर था और इङ्गलैण्ड में सन् १९२२ में १ लाख ७० हज़ार पौंड ख़र्च किया गया था। फ्रांस और जर्मनी में भी इसी तरह ख़र्च किया जाता है। इन दिनों यह रक़म बहुत बढ़ गई है। सिर्फ एक देश में गैस के असर की जाँच करने के लिये एक वर्ष में २१२९ जानवर काम में लाये गये थे।

इनमें ५ घोड़े, ६ बन्दर, ५८ बकरियाँ, १२४ बिल्लियाँ, ११३६ खरगोश, ४०३ गिनिया पिग और बाकी चूहे थे। इनमें से ४४७ जानवर प्रयोग करते समय ही मर गये और ११३२ गैस के असर से बाद में मरे।

वैसे तो अकेली जहरीली गैस का असर ही बड़ा भयङ्कर होता है, पर जब वह आजकल ईजाद की गई नई-नई लड़ाई की तरकीबों के साथ मिल जाता है तब तो आफ़त ही हो जाती है। आजकल सफ़ेद फास्फरस, पैट्रोल तथा दूसरे रासायनिक मसालों से भर कर ऐसे बम बनाये जाते हैं जिनसे बड़ी पक्की इमारतों में भी सहज में आग लगाई जा सकती है। इसी तरह मकानों के उड़ाने वाले बम भी आजकल पिछले महायुद्ध की बनिस्बत बहुत जोरदार बनाये जाते हैं। इन दोनों तरह के गोलों और गैस को काम में लाने के लिये हवाई जहाज़ों की भी दिन पर दिन तरक्की होती जाती है।

अमेरिका के इथाका मुक़ाम में होने वाली एक सभा में बोलते हुये सर मैक्स मुसप्रेट ने कहा था कि आजकल रसायन-विद्या की इतनी तरक्की हो गई है कि उससे थोड़े ही वक्त में दूर दराज के मुक़ामों को आसानी से चोपट किया जा सकता है। इसी तरह जनरल सर रैजिनाल्ड हार्ट ने 'हिबर्ट जर्नल' में लिखा था कि आगे चलकर जो लड़ाई होगी उसमें बड़े-बड़े शहर और जिले, वहाँ रहने वाले पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के साथ बर्बाद कर

दिये जायँगे। जहरीली ग़ैस से चन्द घण्टों में लाखों आदमी मारे जा सकेंगे। जनरल ग्रीव्स का, जो सन् १९१८ में अङ्गरेजी फौज के सेनापति थे, कहना है कि दुश्मन के हवाई-हमले रोकने की तरकीब सिर्फ एक ही है और वह यह कि उसके शहरों पर भी इसी तरह हमला किया जाय।

दूसरे कितने ही वैज्ञानिकों तथा फौजी मामलों के जानकारों की राय भी ऐसी ही है। हरवार्ड यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर कैनन ने निःशस्त्रीकरण कान्फरेंस की एक रिपोर्ट में कहा था कि अगली लड़ाई में कल कारखानों के ख़ास मुक़ामों और शहरों की आबादी का जैसा नाश होगा उसका मुक़ाबला आजतक देखी गई या सुनी गई किसी घटना से नहीं हो सकेगा।

जर्मनी के लैफ्टिनेएट कर्नल बोल्के फौजी मामलों के मशहूर जानकार हैं। उन्होंने बर्लिन के प्रोफेसर हेवर को, जो गैस की लड़ाई को सबसे पहले ईजाद करने वाले माने जाते हैं, एक पत्र में लिखा था :—

"किसी घनी बस्ती या शहर पर गैस का हमला किये जाने का क्या नतीजा होगा जरा इस पर ग़ौर कीजिये। सब जगह डर समा जायगा। लोग फेफड़ों की बहुत ही तकलीफ देनें वाली बीमारियों में फँस जायँगे। हवा में ऐसे जहरीले माद्दे पैदा हो जायँगे कि लोगों पर महीनों तक बुरा असर पड़ता रहेगा। इन बातों से दुनिया का जैसा नाश होगा वह हम लोगों के ख्याल में भी नहीं आ सकता।"

ऐसे लोगों की तादाद भी कम नहीं है जो इन बातों को सुन कर मुसकराते हैं और कोरी गप समझते हैं। पर आज कितने ही मुल्कों में जो नकली हवाई लड़ाइयाँ हो रही हैं उनसे उनको भी होश में आ जाना चाहिये।

कुछ समय हुआ अमरीका के हवाई जहाज़ों के एक दल ने छुपे तौर पर पैसफिक महासागर के एक टापू में पहुँच कर बमबाजी की जाँच की थी। वे रात के वक्त उड़कर जापानी बस्तियों पर काग़ज के बम बरसाते थे जिनका ज़मीन पर रहने वालों को कुछ पता नहीं चलता था पर जहाज़ वाले जान जाते थे कि उनका निशाना ठीक लगा या नहीं। इससे उनको मालूम हो गया कि वे अगर चाहें तो लाखों आदमियों को देखते-देखते ख़त्म कर सकते हैं।

इङ्गलैण्ड की हवाई सेना ने कुछ समय पहले रात में लन्दन पर नकली हमला किया था। उसमें २५० जहाज़ शामिल थे। फौजी अफ़सरों की रिपोर्ट से मालूम होता है कि इन २५० जहाज़ों में से सिर्फ १६ जहाज़ों का पता सर्चलाइट के ज़रिये लग सका। पर फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि उन सब को नीचे गिराया जा सकता था। बाकी २३४ जहाज़ मनमानी कार्रवाई कर सकते थे। इस नकली हमले से यह साबित हो गया कि लन्दन को बचाने के लिये जो इन्तजाम किया गया है वह किसी काम का नहीं है। अगर कोई दुश्मन उस पर हवाई हमला करे तो इसमें शक नहीं कि उसका एक बड़ा हिस्सा चौपट हो जायगा।
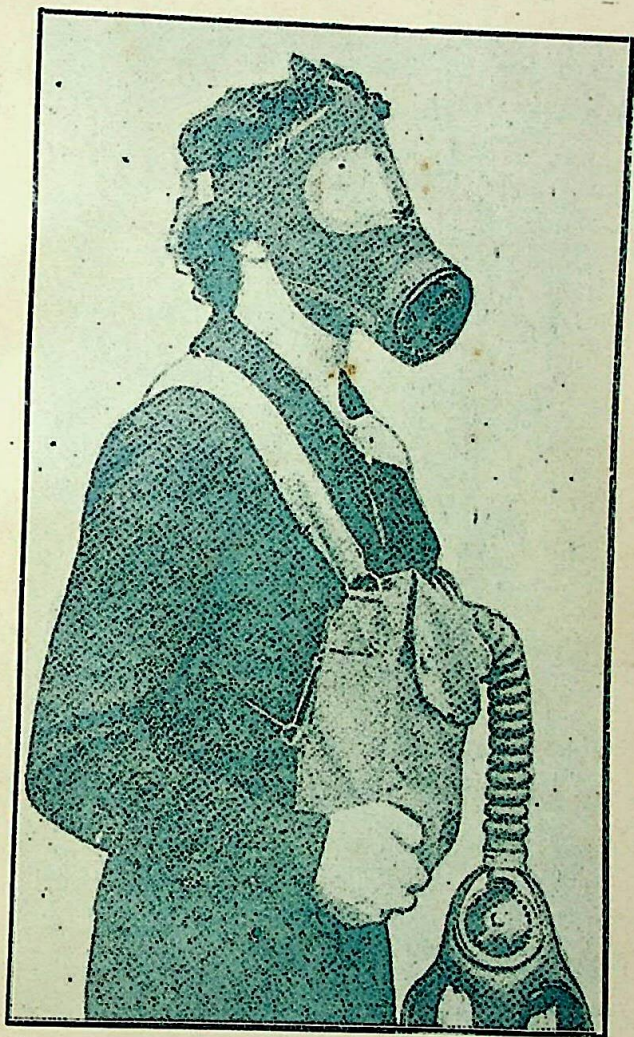
गैसमास्क—अगली लड़ाई में मर्द, औरत, बच्चे, बुड्ढे सबको अपने प्राण बचाने के लिये ऐसी ही गैस-मास्क लगानी पड़ेगी।

पेरिस पर होने वाले नकली हमले का नतीजा भी ऐसा ही ख़तरनाक साबित हुआ था। उसे देख कर मशहूर प्रोफेसर लैङ्गवीन ने कहा था कि १०० हवाई जहाज़, जिनमें एक-एक टन गैस के बम हों तमाम पेरिस के ऊपर २२ गज मोटा गैस का बादल पैदा कर सकते हैं। यह काम एक घण्टे में हो सकता है और अगर उस समय तेज हवा न चल रही हो तो पेरिस जरूर ही मुर्दों का शहर बन जायगा।

फ्रांस के दूसरे बड़े शहर ल्योंस पर किये जाने वाले नकली हमले के बारे में वहां के एक मशहूर अख़बार ने लिखा था :—

"फ्रांस के फौजी और सिविल महकमों के अफसर हाल के बड़े नकली हमले को देखकर यह समझ गये हैं कि शहर की हिफाजत के लिये जो कुछ इन्तजाम सोचा गया है उससे कुछ भी काम नहीं निकल सकता। तमाम लोगों को गैस से बचाने वाली नकाव (मास्क) और कपड़े दे सकना नामुमकिन है। इसलिये सिर्फ एक यही तरकीब काम दे सकती है कि हमले के वक्त ज्यादातर लोगों को शहर से हटा कर किसी हिफ़ाजत की जगह पहुँचा दिया जाय।"

पर लोगों को कुछ घण्टों के लिये बाहर पहुँचा देना भी बेकार ही जान पड़ता है। क्योंकि अब ऐसे बम बनाये गये हैं जो ४ घण्टे से लेकर ३६ घण्टे या इससे भी ज्यादा वक्त में अपने आप फूटते हैं। इन बातों पर ग़ौर करके रेड क्रास सोसायटी

(लड़ाई के समय घायलों की सेवा करने वाला दल) के जलसे में एक जर्मन वालंटियर ने कहा था :—

"इसमें शक नहीं कि अगर बम कई घण्टे या कितने ही दिन बाद फूटेंगे तो लोगों को बचा कर निकालने का या हिफाजत के दूसरे उपाय बेकार हैं। ऐसी हालत में बचाव की बढ़िया से बढ़िया तरकीब से भी कुछ लाभ नहीं हो सकता।"

जर्मनी के लेफ्टिनेएट जनरल अल्टाक ने एक मासिकपत्र में हवाई हमले की चर्चा करते हुये फ्रांस के बनाये उन बमों का हाल बतलाया है जिनका वजन २७५ से लेकर ५०० मन तक है। ऐसा एक ही बम दस-बीस मील के घेरे में हर एक चीज़ को धूल में मिला देगा। उन्होंने एक ऐसे बिजली के आग लगाने वाले बम का भी जिक्र किया है जिसका बोझ अगचें ११ सेर ही है पर जो फौलाद की मोटी चद्दरों को भी खाक कर सकता है। इसके भीतर 'थर्माइट' नाम का मसाला भरा रहता है जिसके जलने से ३००० डिगरी की गर्मी पैदा होती है। इस गर्मी के सामने कोई चीज नहीं टिक सकती। पानी पड़ने से यह आग दुगुनी भड़कती है। यह बम सिर्फ घरों में ही आग नहीं लगायेगा बल्कि सड़कों के नीचे लगाये हुये गैस के नल भी उसके असर से फट कर जलने लगेंगे और जलती हुई गैस की लपटें ऊँचे मकानों की छतों तक पहुँच जायँगी। ऐसे वक्त में जब सब लोग बहुत ही घबड़ाये और डरे हुये इधर-इधर जान बचाने के लिये भाग रहे होंगे, दुश्मन

के हवाई जहाज़ जहरीली गैस छोड़ेंगे। उस समय गैस से बचने का ख्याल ही किसी को न आयेगा और न आग के मारे लोग बच कर निकल सकेंगे। ऐसे 'शैतानी-चक्र' से किसी तरह भी बच सकने की उम्मेद रखना बेकार है। इन्हीं बातों को निगाह में रख कर जर्मन हवाई सेना के इन्सपेक्टर लेफ्टिनेंट सीगर्ट ने कहा था कि आजकल चन्द हवाई जहाज़ किसी भी मुल्क की राजधानी को थोड़ी ही देर में खाक में मिला सकते हैं।

प्रो० फिलिप नोल ब्रेकर ने, जो लीग आफ़ नेशंस में अङ्ग-रेजी सरकार की तरफ़ से काम करते हैं, अपनी 'निःशस्त्रीकरण' नाम की किताब में लिखा है कि अगली लड़ाइयों में हवाई जहाज़ ही सब से बड़ा हथियार समझा जायगा। वे कहते हैं :—

"पिछले महायुद्ध में जर्मनी के हवाई हमले के सबब से लन्दन के रहने वालों को बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी थी और नुक़सान भी बहुत हुआ था।......तो भी उस समय किसी हमले में हवाई जहाजों की तादाद ३६ से ज्यादा नहीं थी। पर आज कोई योरोपियन मुल्क अकेला, या कई मुल्क मिल कर २४ घण्टे के भीतर कम से कम एक हजार जहाज़ इकट्ठे कर सकते हैं।

"ये हवाई जहाज़ जो बम गिरायेंगे उनमें से हर एक पिछले महायुद्ध में गिराये जाने वाले बमों से कहीं ज्यादा जोरदार होगा। सन् १९१९ के लिये ही जर्मनी ने जो बम बनाये थे वे

इतने ज़ोरदार थे कि जहाँ वे गिरते वहाँ ८५० गज के भीतर कोई जानदार जिन्दा नहीं बच सकता था। पर आजकल जो बम तैयार किये गये हैं उनकी ताक़त इनसे कहीं ज्यादा है। पिछले महायुद्ध में साधारण शहरों पर जहरीली गैस का हमला नहीं किया गया था। पर अब हर एक मुल्क में हवाई जहाज़ों को गैस की लड़ाई की तालीम दी जा रही है। अगर लड़ने वाले देश निःशस्त्रीकरण के असूल को मंजूर करके आपस में समझौता न कर लेंगे तो इसमें जरा भी शक नहीं कि अगली लड़ाई में सभी बड़े शहरों को गैस के हमले का शिकार होना पड़ेगा। यह गैस पुरानी गैसों से ज़रूर ही बहुत ज्यादा तेज होगी। 'ल्यूसाइट' नाम की चीज ही ऐसी जहरीली है कि अगर किसी आदमी के बदन पर तीन बूँद भी गिर जायँ तो वह हर्गिज नहीं बच सकता।

"यह ख्याल कर सकना बहुत मुशकिल है कि बर्लिन, लन्दन या पेरिस जैसे बड़े शहरों पर हवाई हमले का असर दरअसल कैसा पड़ेगा। जब कभी लन्दन में जमीन के अन्दर सुरङ्ग में चलने वाली रेल ख़राब होकर रुक जाती है तो कैसी बुरी हालत हो जाती है यह ज्यादातर लन्दन के रहने वाले जानते हैं। उस हालत से हम हवाई हमले का कुछ अन्दाज कर सकते हैं। जब कि तमाम शहर में गहरा अँधेरा छाया होगा; सड़कों पर लाखों स्त्री, पुरुष, बच्चे ठसाठस भरे होंगे, और उसी मौक़े पर हवाई जहाज़ ऊपर से बम गोलों को बरसा रहे होंगे तो ऐसे समय में

लोगों की क्या हालत होगी ? हम सिर्फ़ इतना ही समझ सकते हैं कि हद दर्जे के ख़तरनाक आग लगाने वाले, जहरीली गैस से भरे और उड़ाने वाले बम गोलों के असर से ऐसे मुक़ाम पर मौत और बर्बादी के सिवा और कुछ दिखलाई न पड़ेगा। यह भी याद रखना चाहिये कि अगर ऐसा हमला रात के वक्त किया जाय तो उससे बचने की कोई तरकीब अभी तक नहीं मिल सकी है।"

रूस की भी एक लड़ाई के सम्बन्ध में काम करने वाली संस्था ने नये तरीक़े की लड़ाई की भयंकरता के बारे में ऐसे ही ख़्यालात जाहिर किये हैं :—

"लड़ाई के नये तरीके में सब से ख़ास बात यह है कि लड़ाई के मैदान से दूर बसे हुये दुश्मन के बड़े-बड़े शहरों, रेलवे जंक-शनों और कारख़ाने वगैरह को चौपट कर दिया जाय। सन् १९१४ की योरोपीय लड़ाई के बाद जो नई ईजादें हुई हैं उनसे यह मुमकिन हो गया है कि एक हवाई जहाज हजार मन बोझा लाद कर एक हज़ार मील से ज्यादा तक उड़ता चला जाय। इससे साफ़ जाहिर है कि जो मुक़ाम लड़ाई के मैदान से चार पाँच सौ मील की दूरी तक बसे होंगे उनका बच सकना मुशकिल होगा। नतीजा यह होगा कि अब लड़ने वाले देशों को अपनी फौज का ही नहीं बल्कि मुल्क में रहने वाले आम लोगों की हिफाजत का भी पूरा-पूरा इन्तजाम करना पड़ेगा।"

लड़ाई का यह तरीका पुराने जमाने के लड़ाई के क़ायदे की निगाह से कितने नीचे दर्जे का है इस बारे में जर्मन फौज के जनरल स्टाफ में काम करने वाले जनरल वान सैण्डर्स लिखते हैं :—

"इसमें शक़ नहीं कि मौजूदा हालत में जो मुल्क पहले हमला करेगा वह ख़ास तौर पर फ़ायदे में रहेगा। इसका एक सबब तो यह है कि नये ढङ्ग के हवाई जहाज़ों की तेज चाल के जरिये दुश्मन के सर पर उसके तैयार होने से पहले ही पहुँचा जा सकता है। दूसरी बात यह है कि लड़ाई के मैदान के बाहर मुल्क में रहने वाले आम लोगों पर हमला करके उनको सहज ही में मारा जा सकता है। इस तरह निहत्थे लोगों पर तलवार, बन्दूक से हमला करना, जो पुराने जमाने में अथवा असभ्य-युग के नाम से पुकारे जाने वाले जमाने में भी बड़ी बदनामी का काम समझा जाता था, आजकल लड़ाई की विद्या की खास बात बन गया है। यह एक गम्भीर बात है और दुनिया के सभी मुल्कों के लोगों को इस पर गौर करना चाहिये।"

पर इन बातों के साथ हमको यह भी जरूर याद रखना चाहिये कि आजकल सभी मुल्कों का फौजी संगठन पहले जमाने की बनिस्वत बिल्कुल बदल गया है। इस सबब से लड़ाई की विद्या में बदलाव होना भी लाजिमी है। इस बात की सचाई को 'लीग आफ नेशंस' की रिपोर्ट में भी माना गया है। उसमें लिखा है :—

"यह बात कही जा सकती है कि लड़ाई की विद्या में यह बदलाव बहुत ही ख़तरनाक है और मनुष्य जाति की अन्तरात्मा ज़रूर ही उसकी मुख़ालफ़त करेगी। इसे ठीक मानते हुये भी हम इस बात को भुला नहीं सकते कि आजकल की लड़ाइयों में मुल्क के सभी बाशिन्दों को किसी न किसी हद तक भाग लेना पड़ता है। पिछली योरोपियन लड़ाई में यह बात बहुत अच्छी तरह साबित हो चुकी है। इस हालत में कोई ऐसा मुल्क जो भले-बुरे की पर्वाह नहीं करता दुश्मन की फौज और उन शहरों में, जहाँ से उसे लड़ाई का सामान मिलता है, ज्यादा फ़र्क नहीं समझेगा। वह दोनों के ऊपर बिना संकोच के जहरीली गैस छोड़ेगा।"

गैसों का असर

यहाँ तक हमने हवाई जहाज़ों द्वारा होने वाले सब तरह के मिले हुये हमलों का जिक्र किया, पर सिर्फ गैस का असर भी बड़ा भयंकर होता है।

पिछली योरोपियन लड़ाई में सब से पहले यप्रेस के संग्राम में, जो अप्रेल १९१५ में हुआ था, जहरीली गैस काम में लाई गई थी। वह बहुत मामूली गैस थी, तो भी उसके असर से ६ हज़ार सिपाही मारे गये। इनकी मौत कितनी तकलीफ सहकर हुई इसका हाल एक जानकार ने इस तरह बतलाया है :—

"भयङ्कर खाँसी और मुशकिल से साँस ले सकने के सबब से इन लोगों की शक्ल बिगड़ गई थी। फेफड़ों के भीतर खून

में ख़राबी पैदा हो जाने से दम घुट रहा था। यह तकलीफ़ कई घण्टे या कई दिन या कई सप्ताह तक जारी रहती थी। अख़ीर में मुँह से खून के कुल्ले होने लगते थे और बीमार मर जाता था। कहा जाता है कि इन सिपाहियों के इस तरह तड़प-तड़प कर मरने को देखकर कितने ही लोग जर्मनी को दिल से नफ़रत करने लगे थे। जो कोई उन सिपाहियों के नीले पड़े हुये और भयानक चेहरों को और उनके मुँह और नाक से निकलते हुये खून के झागों को देखता था उसके दिल में अपने आप यह ख्याल पैदा हो जाता था कि जर्मनी वाले पूरे राक्षस हैं।"

इस गैस का नाम 'क्लोरीन' था। यह नाक या मुँह के भीतर जाते ही खाँसी और दूसरी ख़राबियाँ पैदा करती है और इस लिये इसका पता फौरन लग जाता है। यह देख कर जल्दी ही इसको काम में लाना रोक दिया गया और ऐसी नई-नई गैसें इस्तेमाल की जाने लगीं जिनका जल्दी पता न लगे और दुश्मन धोखे में मारा जाय। गैस की लड़ाई के तरफ़दार इसको दूसरी तरह की लड़ाइयों से अच्छा बतलाते हैं। उनका कहना है कि इससे मामूली तकलीफ पाकर जान निकल जाती है। इसके सिवा इसमें आदमी भी थोड़े ही मारे जाते हैं। यह बात शायद पिछली योरोपियन लड़ाई में सच रही हो, पर आजकल तो हर रोज नई से नई तेज गैसें निकाली जा रही हैं जिनका एक ज़र्रा भी आदमी को मार सकता है और जो दो-चार घण्टे में ही बड़े-

यह बिना मनुष्य के उड़ने वाला हवाई जहाज़ साइन्स का बहुत बड़ा चमत्कार है। जिस प्रकार गुलेल से पत्थर फेंका जाता ह, उसी तरह इसे एक बहुत जोरदार गुलेल से आसमान में फेंक दिया जाता है और उसके बाद जमीन पर से ही बेतार के तार की ताक़त के ज़रिये उसको इच्छानुसार चलाया और घुमाया जाता है। इस चित्र में जो 'क्वीन वास्प' नामक जहाज़ उड़ रहा है वह अङ्गरेज़ी फ़ौज को निशानेबाज़ी की 'प्रैक्टिस' कराने के लिये उड़ाया गया है। आगे चल कर इससे शायद बड़े भयङ्कर-भयङ्कर काम लिये जायँगे।
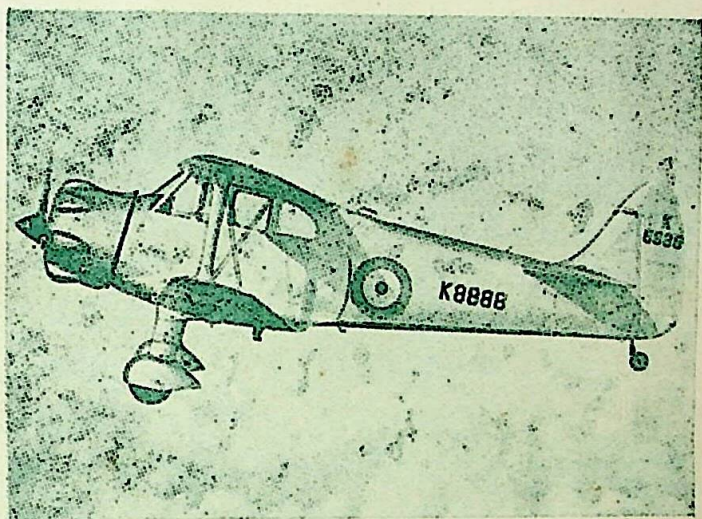
बड़े शहरों को बीरान बना सकती हैं। इस बारे में जाँच करने वालों का कहना है कि अब तक कम से कम ६२ तरह की जहरीली गैसें ईजाद की जा चुकी हैं। इनके कितने ही भेद हैं। जिनमें ख़ास ये हैं:—(१) दमघोटनी (२) गले और छाती में ख़राबी पैदा करने वाली (३) बेचैनी पैदा करने वाली (४) आँसू बहाने वाली (५) लक़वे की हालत पैदा करने वाली।

कुछ मशहूर गैसें

इन गैसों के बहुत से नाम हैं। इनमें से एक 'फ़ोसजीन' कहलाती है। किसी चूहे को पानी में डुबाकर मारने से जैसी तकलीफ होती है वही हालत इस गैस से आदमी की होती है। इससे आदमी के फेंकड़े ख़ून से भर जाते हैं और साँस लेना मुशकिल हो जाता है। एक और गैस है जो 'मस्टार्ड गैस, के नाम से मशहूर है। यह दरअसल धुँये की तरह नहीं बल्कि पानी की तरह होती है। इसको हवाई जहाज़ से एक फव्वारेदार पिचकारी के जरिये जमीन पर छिड़क दिया जाता है। इसमें शराब से निकली तेल जैसी एक काली चीज; गन्धक और क्लोरीन आदि मिलाई जाती है। इसमें सरसों की सी गन्ध आती है, जिससे इसका नाम 'मस्टार्ड गैस' पड़ गया है। यह भारी होती है और जिन चीजों पर पड़ती है उन पर ओस की तरह जम जाती हैं। यह न आँखों से दिखलाई पड़ती है और न सूँघने से कुछ पता चलता है। जिस तरह प्लेग, हैजा वग़ैरह के कीड़े

छुपे तौर पर आदमी पर हमला करते हैं उसी तरह यह गैस भी अनजान में घात लगाये पड़ी रहती है। जब कोई आदमी पास होकर निकलता है तो यह उसके जूतों या कपड़ों में लग जाती है और इस तरह घरों के भीतर जा पहुँचती है। वहाँ गर्मी पाकर यह हवा में मिल जाती है और बिना किसी गुमान के साँस के जरिये शरीर के भीतर पहुँच जाती है। इसका असर ६ घण्टे से १८ घण्टे के दरम्यान मालूम पड़ता है और इस बीच में आदमी के शरीर पर इसका इतना असर हो जाता है कि फिर उसका बच सकना क़रीब-क़रीब नामुमकिन हो जाता है।

इस गैस के सबब से आदमी की देह पर फफोले पड़ जाते हैं, आँखें सूज जाती हैं और नाक तथा साँस लेने की नली में जलन होने लगती है। अगर हवा में इस गैस का पचास लाखवां हिस्सा भी मिला हो तो भी उससे आदमी बीमार हो जाता है और कई दिनों या महीनों के बाद मर जाता है। इसका असर देह के भीतरी हिस्से पर ठीक वैसा ही पड़ता है जैसा कि साँप के काटने का। अगर किसी तरह इसका असर मिट कर आदमी की जान बच भी जाय तो भी वह हमेशा के लिये इतना कमज़ोर हो जाता है और उसकी तन्दुरस्ती ऐसी ख़राब हो जाती है कि वह किसी भी बीमारी का सहज ही में शिकार हो सकता है और दो चार वर्ष में ज़रूर मर जाता है। पिछली लड़ाई में इसी सबब से हज़ारों सिपाही वर्षों बाद तपेदिक वगैरह से रोगी होकर मरे थे।

इन गैसों से बचने के लिये जो तरह-तरह की 'मास्क' (मुँह और नाक पर लगाया जाने वाला तोबड़े की शक्ल का यंत्र) निकाली गई हैं उनको बेकार करने के लिये एक और गैस काम में लाई जाती है जिसको 'ब्लू क्रास' कहते हैं। यह बहुत बारीक धूल की तरह होती है और मास्क के भीतर घुस कर ऐसे जोर से छींक लाती और तबियत को मचलाती है कि मनुष्य 'मास्क' हटाने को लाचार हो जाता है। तब उसे सहज ही में दूसरी जहरीली गैसों से मारा जा सकता है। 'ब्लू क्रास' गैस से मनुष्य बेहोश भी हो सकता है।

एक गैस संखिया से बनाई जाती है, जो अगर हवा में बहुत थोड़ी भी मिली हो तो भी आदमी का काम तमाम कर देती है। सन् १९१८ में जाँच के लिये इस गैस को बहुत हल्के रूप में बकरियों के एक झुंड पर छोड़ा गया था। इसके सबब से चार को छोड़ कर सभी बकरियाँ फौरन मर गईं और ये चार भी जहर की गर्मी से ऐसी बेचैन हो गईं कि उन्होंने दीवार से माथा टकरा-टकरा कर जान दे दी। हिसाब लगाने वालों ने बतलाया है कि दो हवाई जहाजों में इस गैस के इतने गोले भरे जा सकते हैं कि उनसे लन्दन या न्यूयार्क जैसा बहुत भारी शहर पूरी तरह से ख़त्म किया जा सकता है।

जहरीली गैसों की तरक्की

यहाँ तक हमने नमूने के तौर कुछ ऐसी गैसों का हाल लिखा है जो सब जगह मशहूर हैं और जिन्हें सभी वैज्ञानिक जानते

हैं। इनके सिवा और भी बीसियों तरह की जहरीली गैसें लड़ने वाले मुल्कों को मालूम हैं, पर उन सब का हाल इस थोड़ी सी जगह में लिख सकना मुशकिल है। बहुत सी गैसें ऐसे भी हैं जिनका भेद अभी तक छुपा है और हम लोग उनके बारे में सिर्फ अफ़वाहें सुना करते हैं। मिसाल के तौर पर कुछ दिनों पहले अख़बारों में छपा था कि फ्रांस के दो इत्र बनाने वालों को संयोग-वश एक ऐसी तेज गैस का पता लग गया है जो थोड़ी मिक़दार में ही हज़ारों आदमियों को चन्द सैकिण्डों में मार सकती है। इसी तरह जर्मनी के बारे में कहा जाता है कि उसने ऐसी भयङ्कर गैसें तैयार कर रखी हैं जो सात पर्दे के भीतर छुपे हुये आदमी को भी पल भर में ख़त्म कर सकती हैं। इङ्गलैंड, अमरीका, रूस, इटली, जापान आदि बड़े-बड़े मुल्कों के फौजी महकमे वाले भी इस तरह के बहुत से भेदों को छिपाये बैठे हैं। इनका सच्चा हाल तो किसी बहुत बड़ी लड़ाई के छिड़ने पर ही खुलेगा, पर इतना जरूर कहा जा सकता है कि इन दिनों जहरीली गैसों के बारे में बहुत तरक्की की गई है और समय आने पर उनसे दुनिया की बेहद बर्बादी होगी।

इस बारे में एक बड़े डर की बात यह है कि जिस जगह जहरीली गैस छोड़ी जाती है वहाँ तो उससे लोग मरते ही हैं पर जब वह हवा में मिल कर दूर-दूर के मुक़ामों तक जा पहुँचती है तो वहाँ भी शायद उसका थोड़ा बहुत असर पड़ता है। इटली-अबोसीनिया की लड़ाई के खत्म होने पर यह सुनने में आया

था कि इराक के एक हिस्से में एक अजीब बीमारी फैली है जिससे कई सौ लोग पागल और अन्धे होकर मर गये। कुछ लोगों का कहना है कि यह बीमारी उस जहरीली गैस के सबब से ही पैदा हुई है जो इटली वालों ने अबीसीनिया में चलाई थी। हम नहीं कह सकते कि यह बात कहाँ तक सच है, पर अगर दुनिया के किसी हिस्से में बहुत ज्यादा जहरीली गैस छोड़ी गई तो दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी उसका थोड़ा बहुत असर पड़ना और उससे तरह-तरह की बीमारियाँ फैलना ताज्जुब की बात नहीं है।

लड़ाई में बिजली का इस्तेमाल

बम और जहरीली गैसों से सन्तुष्ट न होकर लड़ने वाले देश और भी जोरदार हथियार बनाने की कोशिश कर रहे हैं। इस बारे में हम पिछले दो-तीन साल से बिजली के हथियारों की बहुत चर्चा सुन रहे हैं। कभी पढ़ने में आता है कि जर्मनी ने एक ऐसी मृत्यु-किरण तैयार करली है जो एक पल में बड़ी-बड़ी फौजों का ख़ात्मा कर सकती है। कभी ख़बर आती है कि फ्रांस में बिजली की ऐसी बन्दूक बनाई गई है जिसे हर जगह साथ में रखा जा सकता है और जिससे मरजी के मुताबिक लोगों को मारा या बेहोश किया जा सकता है। कभी अमरीका और इङ्गलैण्ड में बिजली की ऐसी लहर के आविष्कार की बात सुनी जाती है जिससे हवाई जहाजों को गिराया जा सकता है,

पानी के जहाज़ों को डुबाया जा सकता है और गोले-गोलियों से भरे मैगज़ीनों को उड़ाया जा सकता है।

इस समय यह कह सकना बहुत ही मुशकिल है कि इन ख़बरों में कहाँ तक सचाई है। इतना ज़रूर सच है कि पिछले दस-पाँच साल से जर्मनी और दूसरे मुल्कों के भी वैज्ञानिक बिजली से मारने की तरकीब ढूंढ़ने में लगे हैं, और उनको कुछ कामयाबी भी हुई है। पढ़ने में आया है कि इङ्गलैण्ड के एक वैज्ञानिक कुछ फ़ासले से चूहे और दूसरे छोटे जानवरों को मारने में कामयाब हुए है। पिछले दिनों यह ख़बर भी तमाम अख़बारों में बड़े जोरों से छपी थी कि जर्मनी के किसी वैज्ञानिक ने मोटरों और हवाई जहाज़ों को बिजली की ताक़त से रोकने की तरकीब निकाल ली है। इस विषय में जो दिलचस्प ख़बर अख़बारों में छपी थी उसे हम नीचे देते हैं:—

"बीना (आस्ट्रिया की राजधानी) की सड़क पर मि० 'हर' की मोटर दौड़ रही है—घड़ी में सात बज कर पाँच मिनट हुये हैं। खर्र-खर्र-खर्र करके मोटर खड़ी हो गई। ड्रायवर हैरान है कि यह क्या हुआ। वह उतर कर इञ्जिन की जाँच करता है तो कोई ख़राबी नहीं पाता। इतने में चौराहे पर खड़ा पुलिसमैन आकर कहता है :—

"घबराओ नहीं, तुम्हारी मोटर दुरस्त है। पाँच मिनट ठहरे रहो, वह चलने लगेगी।"

"क्यों ? बात क्या है ?"

"सुनने में आया है कि एक वैज्ञानिक अपने आविष्कार की जाँच कर रहे हैं।"

"वह कैसा आविष्कार है जिससे मोटर रुक जाती है।"

"इतना ही नहीं, सुनते हैं उससे बड़े-बड़े चमत्कार होते हैं।"

"ये बातें हो ही रही थीं कि पीछे रुकी हुई मोटरें पों-पों करती आगे बढ़ने लगीं। मालूम हुआ कि उस लाइन की सभी मोटरें इसी तरह अपने आप रुक गई थीं।"

पर इन सब बातों के होते हुए भी ये तमाम ख़बरें बहुत नमक मिर्च लगा कर फैलाई गई जान पड़ती हैं। जिम्मेदार आदमियों के बयानों से जहाँ तक अन्दाज लगाया जा सकता है, अभी तक ऐसी बिजली की लहर या किरण नहीं बन सकी है जिसे आसानी के साथ हर जगह काम में लाया जा सके और जिससे हजारों, लाखों लोगों को फौरन ही मारा जा सके। ज्यादा से ज्यादा इतना कहा जा सकता है कि इस बारे में वैज्ञानिकों ने कुछ असूल मालूम कर लिये हैं और शायद अगली लड़ाई शुरू होने तक वे इतनी तरक्की कर सकें जिससे बिजली के जरिये दूर से आदमियों को मारा जा सके।

इस बारे में दुनिया भर में सबसे बड़े वैज्ञानिक माने जाने वाले आलबर्ट आइन्सटीन के आविष्कार ख़ास तौर पर ध्यान देने लायक हैं। आइन्सटीन जर्मनी के निवासी हैं। उन्हें हिटलर

ने यहूदी होने के सबब से देश से निकाल दिया था। आजकल वह अमरीका में हैं और वहां की सरकार ने उनको बड़ी इज़्ज़त के साथ रखा है। आइन्सटीन अगर्चे गणित-विज्ञान के आचार्य हैं, पर इन दिनों उन्होंने लड़ाई में काम आने वाले कुछ आविष्कार किये हैं। इन आविष्कारों का पूरा अधिकार उन्होंने अमरीका की सरकार को दे दिया है। इन आविष्कारों का भेद अभी तक बहुत ही छुपा कर रखा गया है, पर कहा जाता है कि उनसे सहज में बड़ी-बड़ी फौजों का ख़ात्मा किया जा सकता है। इस बारे में एकबार चर्चा चलने पर ख़ुद आइन्सटीन ने ये शब्द कहे थे :—

"जो मुल्क लड़ाई के लिये छटपटा रहे हैं वे अपने सर्वनाशी विचारों पर अमल करने से पहले यह अच्छी तरह सोच लें कि दूसरों के हाथ में भी कुछ ऐसे नये भयङ्कर हथियार मौजूद हैं जिनकी प्रचण्ड घातक शक्ति का वे ख़्याल भी नहीं कर सकते।"

आइन्स्टीन के इन आविष्कारों की विधियाँ अमरीका के युद्ध-विभाग के हेड कार्टर में हिफाजत के साथ रक्खी हैं। कहा जाता है कि हिटलर और नाजियों से बहुत नाराज़ होकर बदला लेने के भाव से ही आइन्स्टीन ने इस तरह के नाश करने वाले आविष्कार किये हैं।

इस बारे में बहुत तरह की बातें पढ़ने के बाद एक बात हमको और भी जान पड़ती है कि कम से कम कुछ समय
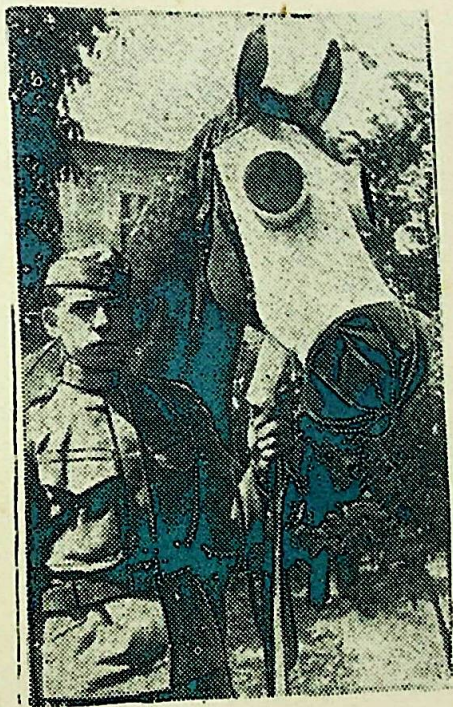
अगली लड़ाई में गैस के भयङ्कर असर का कुछ अन्दाज इस तसवीर से लग सकता है। उस समय आदमियों को ही नहीं जानवरों तक को प्राण-रक्षा के लिये मास्क लगानी पड़ेगी। इसके लिये फौजी घोड़ों को अभी से अभ्यास कराया जा रहा है। पर सवाल यह है कि शहरों के घोड़े, गाय, कुत्ते आदि प्राणियों की रक्षा किस तरह हो सकेगी?

तक तो बिजली से सिर्फ़ आत्म-रक्षा का काम ही लिया जा सकेगा। उसके जरिये हमला करना मुमकिन न होगा। क्योंकि बिजली का इस तरह का प्रयोग पावर-हाउस के जरिये ही किया जा सकेगा, और दुश्मन के देश में पहुँच कर पावर-हाउस एक दिन में तैयार हो नहीं सकता। यह ख्याल करना कि हम अपने देश की हद में बैठे-बैठे ही सैकड़ों मील की दूरी से दुश्मन पर बिजली से हमला कर सकेंगे इस वक्त मुमकिन नहीं जान पड़ता। पर आगे के लिये कुछ कह सकना कठिन है। यदि वैज्ञानिक लोग इसी कोशिश में लगे रहे और उनको कामयाबी हुई तो फिर एक निगाह से इन्द्र का वज्र मनुष्य के हाथ में आ जायगा। जब चारों ओर से ये बज्र लोगों पर छूटने लगेंगे उस समय न मालूम दुनिया का क्या हाल होगा।

परमाणुओं द्वारा युद्ध

इस तरह साफ़ जाहिर है कि मनुष्य लड़ाई के लिये दिन पर दिन अधिक सूक्ष्म पर ज्यादा ज़ोरदार और नाश करने वाली ताक़तों का पता लगाने की कोशिश कर रहा है। यह कह सकना बड़ा मुशकिल है कि इसका आख़िरी नतीजा क्या होगा। अगर्चे अभी तक जो आविष्कार हो चुके हैं वे ही दुनिया में प्रलय कर सकने को काफ़ी हैं, पर यह कहना कि अब इनसे भयङ्कर हथियार तैयार नहीं होंगे भूल है। इस दुनिया में कोई चीज़ एक सी हालत में ठहर ही नहीं सकती। वह या तो बढ़ेगी

या घटेगी ; ऊपर चढ़ेगी या नीचे की ओर गिरेगी। इस नियम के मुताबिक़ नाश की इतनी तरकीबें निकल आने पर भी अभी ऐसी तरकीबें ढूँढी जा रही हैं जिनके सामने जहरीली गैस और बम गोले कुछ भी नहीं हैं।

इनमें सब से ख़ास आविष्कार है परमाणुओं (Atoms) की ताक़त से काम लेना। इस बारे में वैज्ञानिक लोग वर्षों से खोज कर रहे हैं। उन्होंने यह साबित कर दिया है कि संसार की हर एक चीज़ में बेहद ताक़त भरी है। मिसाल के तौर पर वे कहते हैं कि एक गिलास पानी में इतनी ताक़त है कि एक मज़बूत क़िले को उड़ा दे। एक डोज़ पानी दस-बीस लाख आबादी वाले बड़े शहर को चौपट कर सकता है। पर सवाल यह है कि इस ताक़त को किस तरह काम में लाया जाय। वैज्ञानिक लोग बहुत दिनों से इस फेर में पड़े हैं, पर अभी तक इस ख़्याल को अमली रूप नहीं दिया जा सका है। पर यह तो कोई कह ही नहीं सकता कि जो काम अब तक नहीं हो सका है वह आगे चल कर भी नहीं हो सकेगा। इतना ही क्यों पुरानी कथाओं और पुराणों के पढ़ने से तो जान पड़ता है कि पुराने ज़माने में शायद कुछ लोगों ने इस भेद को जान लिया था। जब हम सुनते हैं कि अमुक ऋषि ने शाप से या मन्त्र पढ़ कर अकेले ही हज़ारों आदमियों को मार गिराया या किसी शहर या मुल्क को भस्म कर दिया तो यही ख्याल होता है कि उन लोगों के पास कोई ऐसी ताक़त रही होगी जिसे बाद

में अनजान लोग मन्त्र या जादू के नाम से पुकारने लगे। ऐसी हालत में कोई ताज्जुब नहीं कि एक दिन हम अचानक सुनें कि किसी देश के एक वैज्ञानिक ने परमाणुओं की ताक़त से काम लेना जान लिया है और अब वही संसार भर में सब से ज्यादा शक्तिशाली आदमी है। अब भी बहुत से लेखक आगे होने वाली लड़ाइयों में परमाणुओं की ताक़त के बमों का वर्णन कर चुके हैं। उनके कहने के मुताबिक ये बम आजकल के बमों की तरह एक ही बार धड़ाका हो कर ख़त्म नहीं हो जायंगे। बल्कि वे जहाँ गिरेंगे वहाँ एक छोटा सा ज्वालामुखी बना देंगे और परमाणुओं की ताक़त से बराबर वर्षों तक फूटते रहेंगे। उनके टुकड़े उछट-उछट कर जहां गिरते जायँगे वहां भी इसी तरह नाश होने लगेगा। इस तरह इन परमाणुओं का एक ही बम थोड़े समय में पचासों कोस लम्बी-चौड़ी जमीन को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा। ऐसी हालत आ जाने पर या तो संसार में से आदमियों का नाम-निशान ही मिट जायगा या फिर उनको लड़ना-भिड़ना छोड़ कर मेल मिलाप से रहना सीखना पड़ेगा। कुछ भी हो इसमें शक नहीं कि यह भविष्य की एक बड़ी ख़तरनाक तस्वीर है।

रक्षा के साधन—

इन दिनों दुनिया के सभी बड़े मुल्कों की सरकारें इस बात पर ग़ौर कर रही हैं कि लड़ाई शुरू होने पर फ़ौजों और ख़ास कर शहरों में रहने वाले आम लोगों का बचाव कैसे किया जायगा। अगर्चें इन बड़े मुल्कों ने आपस में इस बात का अहदनामा किया है कि वे लड़ाई में ज़हरीली गैस से काम न लेंगे, पर तो भी इटली ने अबीसीनिया में और जापान ने चीन में जहरीली गैस से काम लिया है। इससे यह भरोसा कर सकना मुशकिल है कि लड़ाई छिड़ने पर ऊपर बतलाये गये अहदनामे के मुताबिक काम किया जायगा। बल्कि जानकार लोगों का तो यह ख्याल है कि इस बार जो मुल्क लड़ाई छेड़ेगा वह अचानक हमला करेगा और पहले ही दिन अपनी पूरी ताक़त लगा कर बम, आग लगाने वाले गोले और जहरीली गैस की भरमार करके दुश्मन की कमर तोड़ देने की कोशिश करेगा। इस डर से इन दिनों हर एक मुल्क में

शहरों और कस्बों में रहने वाली साधारण जनता के बचाव के लिये बड़ी-बड़ी तैयारियाँ की जा रही हैं और इस काम में करोड़ों, अरबों रुपया ख़र्च हो रहा है।

इङ्गलैण्ड की योजना

इन तैयारियों का स्वरूप क्या है इसको समझाने के लिये हम इङ्गलैण्ड की मिसाल देते हैं। थोड़े दिन पहले यहाँ के एक ख़ास व्यक्ति लार्ड स्ट्राबोल्गी ने एक बयान छपाया था जिसका सारांश नीचे दिया जाता है:—

इस वक्त हमको गैस से बचने की तैयारी करने की ऐसी ही जरूरत है जैसी की जल, स्थल और हवाई फ़ौज की तैयारी की। इन दिनों योरोपियन मुल्कों के बड़े-बड़े शहरों में हवाई हमलों के प्रदर्शन किये जा रहे हैं। हमारे यहाँ भी पुलिस, आग बुझाने वालों, एम्बुलेंस कोर (घायलों की सेवा करने वाले), डाक्टरों, नर्सों वगैरह को इस सम्बन्ध में ख़ास तौर पर तालीम दी जा रही है।

यह बात जान लेना जरूरी है कि गैस-मास्क के लगाने और उसे लगा कर अपना रोजमर्रा का काम करने के लिये क़ाफी अभ्यास की जरूरत होती है। इस बारे में अगचें सरकार ने सूचना छपा कर लोगों में बँटवाई हैं, पर बहुत थोड़े लोग उससे लाभ उठाते हैं। इसके लिये ज़रूरत इस बात की है कि लोगों को गैस-मास्क को काम में लाने की शिक्षा क़ानूनन

लाजिमी तौर पर दी जाय। इतना ही नहीं यह तालीम स्कूल में पढ़ने वाले हर एक लड़के को दी जानी चाहिये।

इस काम को पूरा करने का ठीक ढङ्ग यह है कि हर एक मुहल्ले में नमूने के तौर पर दो एक कमरे गैस से बचने के लिये तैयार किये जायँ और तब हर एक घर के लोगों को उनको दिखलाया और समझाया जाय। इसके सिवा जिन लोगों के घर बहुत छोटे हैं, या जिनको एक कमरे में ही गुजर करना पड़ता है और दूसरे काम करने वाले लोगों के लिये भी गैस के बचने के सार्वजनिक मुक़ाम तैयार किये जाँय। इस के लिये सुरंगों, मकानों के नीचे बने बड़े-बड़े तहखानों और जमीन के नीचे चलने वाली रेल के स्टेशनों आदि से काम लिया जा सकता है, पर उनमें अभी से बहुत कुछ तैयारी करने की जरूरत पड़ेगी। वहाँ पर अभी से भोजन, पानी, हवा और रोशनी का इन्तजाम करके रखना होगा। स्थानीय म्युनिसपैलिटी आदि को पहले ही से ऐसे मुक़ामों को तय कर लेना ज़रूरी है। सब लोगों को यह बात अच्छी तरह मालूम हो जानी चाहिये कि हवाई-हमले के वक्त वे जहाँ कहीं हों वहाँ से सबसे पास गैस से बचने का मुक़ाम कौन सा है। ये मुक़ाम एक ही जगह नहीं बनाये जा सकते बल्कि मुख़्तलिफ़ जगह उनकी ज़रूरत होगी। मिसाल के तौर पर दिन के वक्त ज्यादातर आदमी कारख़ानों और दफ्तरों में रहते हैं, रात को घरों में होते हैं और छुट्टी के दिन घूमने के मुक़ामों में। इन लोगों

के लिये गैस से बचने वाली नक़ाबों के गोदाम और गैस से बचने के बन्द मुक़ाम ऐसी जगह बनाये जाने चाहिये जिसे सब जानते हों और जहाँ वे हर समय आसानी से पहुँच सकें, क्योंकि हवाई-हमला किसी भी दिन और किसी भी वक़्त हो सकता है।

हिन्दुस्तान को भी डर है।

हवाई हमला और गैस की लड़ाई ऐसी ख़तरनाक है कि बहुत ज्यादा दूर होने पर भी हिन्दुस्तान की सरकार को उससे डरना पड़ता है। कराँची में इस बारे में बहुत समय से फ़ौजी अफ़सरों के लैकचर होते रहते हैं और हवाई हमले से बचाव की दूसरी तैयारियाँ भी की जा रही हैं। अब शायद चीन-जापान की लड़ाई को देख कर सरकार इस इन्तजाम को ज्यादा मुकम्मल बनाने की कोशिश कर रही है। उसने मुख़्तलिफ़ महकमों के अफसरों की एक कमेटी बनाई है जो हवाई-हमला से बचाव की तैयारियों पर ग़ौर कर रही है। सरकार के ख़्याल से हिन्दुस्तान के उत्तरी और पूर्वी भागों में हवाई हमले का ज्यादा डर है। इसके सिवा लड़ाई शुरू होने पर दुश्मन पानी के जहाजों के जरिये दक्खिनी हिन्दुस्तान के पास आकर वहाँ भी हवाई जहाजों से हमला कर सकता है।

इस समय सरकारी स्कीम के मुताबिक कराँची के हर एक मुहल्ले में एक गैस-प्रूफ कमरा बनाया जायगा जिसमें एक

हक़े के लिये खाने-पीने का सामान भी जमा रहेगा। इनमें बिजली की बजाय पैट्रोल के लैम्पों की रोशनी का इन्तजाम किया जायगा क्योंकि हवाई-हमला के वक्त बिजलीघर का बच सकना नामुमकिन सा है। थोड़े दिनों में इसी तरह का इन्तजाम और भी बड़े-बड़े शहरों में, जहाँ हमले का हो सकना मुमकिन समझा जायगा, किया जायगा। इस के लिये सरकार की तरफ़ से निगरानी की जायगी जिससे दुश्मन के हवाई जहाज़ आने की ख़बर शहर वालों को फ़ौरन दी जा सकेगी। सड़कों को रोशनी का इन्तजाम इस तरह रहेगा कि दुश्मन उसे देख कर निशाना न लगा सके। आग लगाने वाले गोले, भयंकर बम और गैस से बचाने के लिये भी संगठन किया जायगा और इसके लिये आग बुझाने वालों, लोगों को लड़ाई के मुक़ाम से निकाल कर हिफाजत की जगह पहुँचाने वालों, गैस के असर को दूर करने के लिये शुद्ध करने की दवा छोड़ने वालों को ख़ास तौर पर तालीम दी जायगी। शहरों के मकानों की इस निगाह से जाँच की जायगी कि कौन सी इमारतें हवाई-हमले और जहरीली गैस से बचने के लिये काम में लाई जा सकती हैं। घायलों का फौरन इलाज करने के लिये जगह-जगह 'फ़र्स्ट एड पोस्ट' क़ायम किये जायेंगे। शहर की ख़ास ज़रूरतों, जैसे बिजली और पानी की हिफाजत का भी इन्तजाम किया जायगा।

इसी तरह का इन्तजाम मिश्र आदि मुल्कों में भी होने
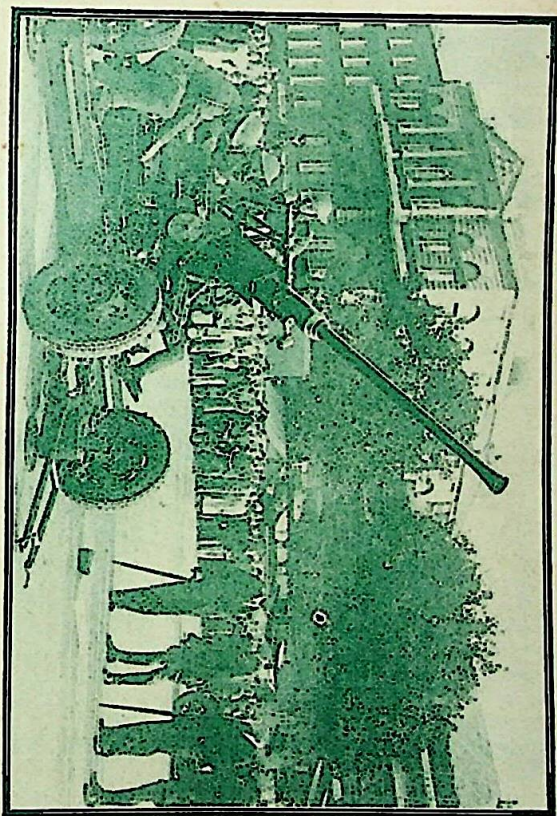
हवाई जहाज़ों का ज़मीन पर से मुक़ाबला करने को इस तरह की तोपें बनाई गई हैं। यह आसमान की तरफ़ एक मिनिट में २ पौण्ड वजन के १३० गोले फेंकती है। ऊपर के चित्र में इङ्गलैण्ड के युद्ध-मंत्री एक ऐसी तोप का मुआयना कर रहे हैं।

लग गया है। वहाँ अभी से इस बात की आज्ञा दे दी गई है कि हफ्ते में एक बार तमाम सड़कों की बत्तियाँ बुझादी जायँ। सड़क के किनारे जो मकान-दुकान वगैरह हों उनमें जलने वाली बत्तियों पर कोई ऐसा ढक्कन या पर्दा होना चाहिये कि उनकी रोशनी सड़क पर न जा सके। इस मौक़े पर गलियों की रोशनी भी बिल्कुल बुझा दी जायगी और इस तरह शहर में ऐसा अँधेरा कर दिया जायगा कि ऊपर उड़ने वाले हवाई जहाजों को उसका पता हर्गिज नहीं लग सकेगा।

दूसरे उपाय

आजकल लड़ाई में दूसरी गैसों के बजाय मस्टार्ड गैस ज्यादा काम में लाई जाती है, क्योंकि इसका असर देर तक क़ायम रहता है। जाँच करने से पता चला है कि इस गैस के छोड़े जाने के वक्त अगर आदमी खुली जगह में रहे तो छः मिनट में ही मर सकता है जब कि बन्द कमरे में एक घण्टे में असर होता है। अगर गैस कम हो तो बाहर रह कर मरने में ५० मिनट और बन्द कमरे में तीन घण्टे तक लगते हैं। मस्टार्ड गैस के शरीर पर पड़ते ही अगर 'ब्लीच' मलहम लगा दिया जाय तो उसका असर मिट सकता है। पर देर होने से असर का दूर कर सकना मुशकिल होता है।

हर एक शहर में हवाई-हमले की सूचना साधारण जनता को देने के लिये कोई जोरदार आवाज़ निकालने वाला यन्त्र

(अलार्म) होना चाहिये। यह अलार्म हमले से काफी समय पहले दिया जाना चाहिये। अन्दाज़ से मालूम किया गया है कि लन्दन शहर में दुश्मन के जहाज़ों के पहुँचने से सात मिनट पहले लोगों को ख़बर दी जा सकती है। इसी तरह जब दुश्मन लौट जाय और शुद्ध करने वाली दवाओं से गैस के असर को दूर कर दिया जाय तो बन्द मुक़ामों में छिपे लोगों को बाहर निकलने की सूचना देने के लिये भी 'अलार्म' होना चाहिये।

गैस से बचने के लिये नकाब (मास्क) और ख़ास तरह के कपड़ों और जूतों की भी ज़रूरत होती है। जानकारों की राय में आजकल जो मास्क अंगरेजी फ़ौज में काम में लाया जाता है वह काफ़ी अच्छा और कारगर होता है। पर वह बहुत बड़ा, भारी और ज्यादा दामों का होता है। यह 'मास्क' उन लोगों के लिये ठीक है जिन्हें हमले के वक्त बाहर रह कर काम करना पड़ता है, जैसे पुलिस वाले, आग बुझाने वाले वग़ैरह। दूसरे लोगों के लिये हलका और कम दाम का 'मास्क' ही काम दे सकता है। इङ्गलैण्ड में सरकार ने एक ऐसा 'मास्क' तैयार कराया है जिसकी लागत सिर्फ़ दो शिलिङ्ग (एक रु० छः आना) पड़ती है।

गैस से बचाने वाले कपड़े भी बहुत भारी होते हैं और ख़ास किस्म के मसाले और चमड़े के बने होते हैं। हिन्दुस्तान

जैसे गर्म मुल्क में उनको पहिन कर रह सकना बड़ा मुश्किल है। इस काम के लिये जो जूते काम में लाये जाते हैं वे 'गमबूट' के नाम से पुकारे जाते हैं। यह मोटर के टायर की तरह होते हैं और इनमें मस्टार्ड गैस बड़ी कठिनाई से पार हो सकती है। इनको गैस के असर से शुद्ध करने के लिये गर्म पानी में उबाल लेना काफ़ी होता है।

अनाज और दूसरी खाने की चीज़ों पर अगर मस्टार्ड गैस पड़ जाय तो वे भी ज़हर की तरह हो जाती हैं। उनकी हिफाजत के लिये उनको तम्बुओं में रखना चाहिये, ऊपर से कैनवास का मोटा कपड़ा ढक देना चाहिये।

किसी भी इमारत के किसी एक कमरे को 'गैस-प्रूफ' बना लेना मुशकिल नहीं है। यह कमरा उस तरफ़ होना अच्छा है जिस तरफ़ हवा बहती हो। साथ ही अगर वह नर्म जमीन के पास हो तो और भी अच्छा है क्योंकि उस हालत में पास में कोई बम गोला गिरेगा तो उसका असर मिट्टी में ही ख़तम हो जायगा। खिड़कियों पर कार्डबोर्ड ठोक देना चाहिये या मोटा कागज चिपका देना चाहिये। दरवाजे पर कम्बल का पर्दा मजबूती के साथ लगादिया जाय। अगर मकान में धुँआ निकलने की चिमनी हो तो उसे भी तकिया ठूँस कर बन्द कर दिया जाय।

मस्टार्ड गैस का पता लगाने के लिये एक खास तरह का लेप बड़ा मुफ़ीद होता है। इसे कागज या पत्थर के टुकड़ों

पर लगा कर मकान में जगह-जगह रख दिया जाय। इसका रङ्ग पीला होता है पर मस्टार्ड गैस लगते ही वह लाल हो जाता है।

ऊपर जो तरकीबें लिखी गई हैं वे ऐसी हैं जिन्हें आम लोग अपने आप कर सकते हैं और जो मामूली गैसों से उनका किसी हद तक बचाव कर सकती हैं। पर इस बारे में पूरा भेद तो वैज्ञानिक और फ़ौजी अफ़सर ही जानते हैं जिनको सरकार ने इस काम के लिये तैनात किया है। वे लोग लड़ाई शुरू होने पर उस मौक़े के मुताबिक़ ठीक-ठीक हिदायतें जनता को देते रहेंगे और दुश्मन जो-जो नई चालें चलेगा उनसे भी लोगों को होशियार करते रहेंगे।

इसके सिवा इन दिनों वैज्ञानिक लोग जहरीली गैसों से बचने की और भी नई-नई तरकीबें निकाल रहे हैं। कहा जाता है कि हाल ही में फ्रांस के एक डाक्टर मि० डावलेन ने एक ऐसी दवा तैयार की है जिसकी चार-पाँच बूँद सूँघ लेने से ज़हरीली गैस का असर नहीं हो सकता। पर अभी तक ऐसे सब आविष्कार छिपा कर रक्खे गये हैं और उनके बारे में ठीक-ठीक कुछ नहीं कहा जा सकता। हम तो समझते हैं कि हमारे यहाँ की पौराणिक कथाओं में जिस प्रकार दिव्य-अस्त्रों का प्रयोग लिखा है वैसा ही नज़ारा नये युद्ध में भी देखने में आयेगा। उस समय एक योद्धा आग लगाने के लिये

अग्निबाण छोड़ता था तो दूसरा पानी बरसाने के लिये बरुणास्त्र चलाता था। इसके जवाब में पहला वायव्यास्त्र चला कर हवा द्वारा उन बादलों को उड़ा देता था। इसी तरह शायद अगली लड़ाई में जब दुश्मन के हवाई जहाज़ जहरीली गैसे छोड़ेंगे तो अपने हवाई जहाज़ उसी मुक़ाम पर ऐसे मसाले का गोला फेंकेंगे जो उसके असर को मिटा दे। इसी तरह आग लगाने वाले बमों के जवाब में आग बुझाने वाले मसालों के गोले फेंके जायँगे। अगर दुश्मन ऊपर से प्लेग, हैजा या किसी दूसरी बीमारी के कीड़ों की वर्षा करेगा तो उनको भी कीटाणु-नाशक दवाओं की वर्षा के जरिये ही नष्ट किया जायगा। इस तरह अगली लड़ाई को देख कर अगर रामायण और पुराणों में लिखी हुई मायावी लोगों की बातें प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ने लगें तो कोई अचम्भा नहीं।

हमला रोकने की तैयारी

एक तरफ़ जहाँ आम लोगों को जहरीली गैस और बम गोलों से बचाने के लिये तरह-तरह के इन्तजाम किये जा रहे हैं वहाँ दूसरी तरफ़ दुश्मन के हवाई हमले को रोकने और उसके जहाजों को बेकार करने की भी नई-नई तरकीबें निकाली जा रही हैं। इनमें सबसे ख़ास हवाई जहाज़ को तोड़ने वाली तोपें हैं। इनका मुँह आसमान की तरफ़ होता है और एक मिनट में सैकड़ों गोलियाँ या छोटे गोले ऊपर की तरफ़ छोड़ती

हैं। इनमें से एक भी गोला ठिकाने पर लग जाने से हवाई जहाज़ बेकार होकर गिर जाता है या उसे जान बचा कर भाग जाना पड़ता है।

दूसरी तरकीब शहरों को हवा में लटकते हुये तार के जाल से घेर देने की है, जिसका जिक्र हम ऊपर कर चुके हैं। पर इसके बारे में कुछ लोग यह एतराज करते हैं कि इन जालों के होते हुये भी दुश्मन के हवाई जहाज़ उनके ऊपर या नीचे से निकल जायँगे। इसलिये इङ्गलैण्ड के फ़ौजी महकमे ने एक और बहुत बढ़िया तरकीब निकाली है। हवाई हमला होने पर लोहे या किसी और धातु की बहुत बारीक धूल आसमान में फेंकी जायगी। जैसे ही यह धूल जहाज के इञ्जिन के भीतर घुसेगी उसमें ख़राबी पैदा हो जायगी और वह लुढ़कता-पुढ़कता जमीन पर आ गिरेगा।

तीसरी तरकीब जिसके बारे में बड़ी चर्चा है और तरह-तरह की बातें सुनने में आती हैं, बिजली की लहर है। इसके सम्बन्ध में अख़बारों में इतनी ज्यादा ख़बरें पढ़ने में आती हैं कि यह जान सकना मुशकिल है कि उनमें से कौन सी सच और कौन सी झूठ। उदाहरण के तौर पर कुछ समय पहले प्रकाशित हुआ था कि अमरीका के प्रोफ़ेसर हरीमे ने तोप की शक्ल का एक यन्त्र बनाया है जो एक बटन दबाते ही ४५ लाख यूनिट की बिजली की किरण लम्बी धारा के रूप में फेंकने लगता है। यह किरण इतनी तेज़ होती है कि इसके सामने लोहे

की जो कोई भी चीज़ रखी जाय टुकड़े-टुकड़े हो जाती है। इस किरण से हवाई जहाज़ फ़ौरन जल कर गिर जायँगे। यह मशीन १६ फ़ीट लम्बी और १४ फ़ीट चौड़ी है और इसको चलाने के लिये बिजली के असर को रोकने वाली पोशाक पहिने हुये चार आदमियों की ज़रूरत पड़ती है। ऐसी ख़बरें अक्सर बढ़ाचढ़ा कर फैलाई जाती हैं, पर इसमें सन्देह नहीं कि अब वैज्ञानिकों ने बिजली के ज़रिये दुश्मन पर हमला करने की कुछ तरकीबें ज़रूर मालूम कर ली हैं जो अगली लड़ाई में ज़ाहिर होंगी।

इन सब बातों पर ग़ौर करने से यह कह सकना मुश्किल जान पड़ता है कि दरअसल अगली लड़ाई का रूप कैसा होगा। मालूम होता है कि उसमें किसी की हारजीत के बजाय दोनों तरफ़ नाश ही नाश होगा। अगर वैज्ञानिक तरकीबों का सहारा लेकर साधारण जनता के लोग बच भी सके तो भी व्यापार-व्यवसाय और जीवन-निर्वाह के दूसरे तमाम काम चौपट हो जायँगे, और सब जगह बदइन्तज़ामी फैल जायगी। ऐसा जान पड़ता है कि उस समय लोग बड़े शहरों को बिल्कुल ही खाली कर देंगे और छोटे गाँवों तथा जंगलों में रहना ही अच्छा समझेंगे, क्योंकि हवाई-हमले आम तौर पर बड़े शहरों और फ़ौजी मुक़ामों पर ही होंगे।

अगली लड़ाई के सम्बन्ध में भविष्यवाणियाँ—

आजकल भविष्यवाणी करना बड़ा सहज काम हो गया है। जिस अख़बार को उठाइये आपको महायुद्ध, भूकम्प और दूसरी प्रलयकारिणी घटनाओं की कोई भविष्यवाणी मिल ही जायगी। इनमें से कितने ही भविष्यवक्ता तो ठीक-ठीक तारीख़ और घण्टा-मिनट तक बतला देते हैं। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि ऐसी सैकड़ों भविष्यवाणियों में से अभी तक एक भी पूरी तरह सच्ची साबित नहीं हुई है। संयोगवश एकाध घटना किसी की मिल गई तो दूसरी बात है।

इसका सबब यही है कि जो लोग भविष्यवाणियाँ करते हैं उनमें से ज्यादातर ऐसे होते हैं जिनका ज्ञान और अनुभव बहुत थोड़ा होता है और वे सिर्फ अपना नाम मशहूर करने
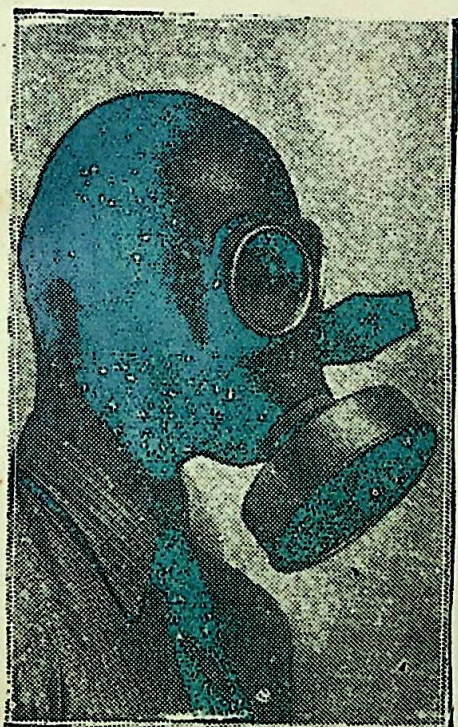
जहरीली गैस से बचाव करने के लिये यह मामूली गैस मास्क शहरों के ग़ैर-फ़ौजी लोगों के लिये है। इसका दाम थोड़ा होता है। योरोप के देशों में इस तरह के करोड़ों मास्क वक्त जरूरत के लिये अभी से बना कर रखे गये हैं।

के ख्याल से ऐसा करते हैं। कुछ समय हुआ ऐसे ही एक ज्योतिषी पर तो मुक़दमा चलाये जाने की नौबत आ गई थी।

हमारे कहने का मतलब यह नहीं कि गणित और फलित ज्योतिष विद्या झूठी हैं। आजकल की वैज्ञानिक खोजों से भी साबित होता है कि उनमें थोड़ी-बहुत सचाई जरूर है। पर जो लोग इन भविष्यवाणियों को कर रहे हैं वे इन विद्याओं के असली उसूलों से प्रायः अनजान हैं। इतना ही नहीं आजकल तो इस देश के पञ्चाङ्गों का गणित ही ऐसा अशुद्ध हो गया है कि उनसे ग्रहों की चाल का कुछ ठीक पता हो नहीं चलता। ऐसी हालत में उनके आधार पर जो गणना की जायगी वह कैसे ठीक उतर सकती है।

इसलिए हम यहाँ इन ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों को छोड़कर हमारे देश के धार्मिक ग्रन्थ श्रीमद्भागवत्, महाभारत आदि और ईसाइयों की बाइबिल में दी गई भविष्यवाणियों का वर्णन करते हैं। ये भविष्यवाणियाँ अगर्चे गूढ़ भाषा में हैं तो भी मौजूदा चिन्हों से उनका मिलान करके हम कुछ अन्दाज़ कर सकते हैं। इसके सिवा हम पश्चिमी ज्योतिषशास्त्र के आचार्य शेरो साहब और एकाध दूसरे महात्मा की भविष्य-वाणी की भी चर्चा करेंगे जो अपनी आध्यात्मिक-शक्ति से होनहार को जानने की ताक़त रखते हैं।

हिन्दू धर्म-ग्रन्थ

जिस तरह हिन्दुओं की सभ्यता और धर्म दूसरे मुल्क वालों से बिल्कुल अलग हैं उसी तरह उनकी काल-गणना के क़ायदे भी एक दम निराले हैं। उन्होंने सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलि-युग के नाम से चार युगों की जो कल्पना की है वह और किसी मुल्क या मजहब वालों में नहीं पाई जाती। अगर्चे पश्चिमी-साहित्य में इतिहास के किसी काल को 'गोल्डिन एज' (सुवर्ण-युग) और किसी को 'डार्क एज' (अंधकार-युग) के नाम से पुकारा गया है, पर वह हमारे यहां के युगों से बिल्कुल अलग बात है।

अगर आप किसी मामूली से मामूली हिन्दू धर्म के मानने वाले से पूछें तो वह फ़ौरन जवाब देगा कि आजकल कलियुग चल रहा है। शायद वह यह भी जानता हो कि कलि-युग की तादाद ४ लाख ३६ हज़ार वर्ष की है जिसमें से अभी क़रीब ५ हजार वर्ष बीते हैं।

इस युग-सम्बन्धी, ख़ास कर कलियुग के सिद्धान्त ने हमारे देश में बड़ा गजब ढाया है। अच्छे कामों से दूर रहने और बुरे कामों के करने का लोगों को यह बड़ा सहज बहाना मिल गया है। लोगों से किसी भी नुक़सान पहुँचाने वाले रस्म रिवाज को दूर करने को कहा जाय वे फौरन कलियुग की दुहाई देने लगते हैं। बाल-विवाह, बृद्ध-विवाह, बिधवा-विवाह-निषेध; स्त्रियों को गुलामी की हालत में रखना, अछूतों के साथ बुरा बर्ताव, जातपांत

के क़ायदों की सख़्ती आदि हर एक बुरी बात के लिये कलियुग का प्रमाण दिया जाता है। कहा जाता है कि कलियुग में तो यह सब होना ही है। इन लोगों को अपनी बातों को ठीक साबित करने के लिये कुछ धर्म-ग्रन्थ भी मिल जाते हैं जो हिन्दुओं की गिरी हालत के जमाने में और कितने ही तो मुसलमानों की हकूमत के दिनों में मतलबी और अदूरदर्शी लोगों ने बना कर रख दिये हैं।

पर अब लोगों की आंखें खुलने लगी हैं और विद्वान् लोग पुराने तथा प्रमाणिक धर्म-ग्रन्थों की खोजकर यह साबित कर रहे हैं कि आजकल यह युग-सिद्धान्त जिस रूप में फैला हुआ है वह ठीक नहीं है। उसके वर्षों का जो हिसाब बतलाया जाता है वह बिल्कुल ग़लत है। इनके मत से अब कलियुग ख़त्म हो गया है और सतयुग शुरू हो रहा है। इन विद्वानों की जाँच पड़ताल का मुख़्तसर हाल हम नीचे देते हैं।

आजकल हमारे देश के ज्यादातर लोग जो यह समझे बैठे हैं कि हिन्दू धर्म-ग्रन्थों तथा ज्योतिष-ग्रन्थों में सब जगह युगों का हिसाब एक सा ही माना गया है वे बड़ी ग़लती करते हैं। पुराने ग्रन्थों में कई तरह के युगों का हाल मिलता है। युगों का नाम सबसे पहले वेदों की संहिताओं में आया है। उसके मुताबिक यज्ञ करने के लिये वर्ष को तीन-तीन महीने के चार हिस्सों में बाँट कर उनका नाम युग रखा गया था। फिर वैदिक ग्रन्थों में ही पाँच

वर्ष और बारह वर्ष के युगों का उल्लेख है। बारह वर्ष का युग तो आजकल भी माना जाता है। इसके सिवा ज्योतिष सम्बन्धी गणना के लिये और भी कई तरह के छोटे-बड़े युग माने गये हैं जिनमें से एक तो ४३ लाख २० हजार वर्ष का है।

धार्मिक क्रियाओं के लिये चारों युगों की तादाद पुराने ग्रन्थों और स्मृतियों में बारह हज़ार वर्ष बतलाई गई है। इनका हिसाब मनुस्मृति में इस तरह दिया गया है:—

ब्राह्मस्यतु त्तपाहस्य यत्प्रमाणं समासतः।
एकैकशो युगानान्तु क्रमशस्तन्निबोधत ॥ ६८
चत्वार्याहुः सहस्राणि वर्षाणां तु कृतं युगं।
तस्यतावत् शती संध्या संध्याशश्च तथाविधः ॥६९
इतरेषु स संध्येषु ससंध्याशेषु च त्रिषु।
एकोपायेन वर्तन्ते सहस्राणि शतानिच ॥ ७०

(अ० १—६७)

"ब्रह्मा के अहोरात्र में सृष्टि के पैदा होने और नाश होने में जो युग माने जाते हैं उनका क्रम यहाँ बतलाते हैं। चार हज़ार वर्ष का सतयुग और उतने ही सैकड़े की उसकी पूर्व संधि और उतनी ही उत्तर सन्धि। इसी क्रम से तीन हज़ार को तीन-तीन सौ की, दो हजार को दो-दो सौ की, एक हज़ार को एक-एक सौ की संधि होती है।"

इस प्रमाण के अनुसार युगों का हिसाब इस प्रकार समझना चाहिये—

सतयुग	४८००
त्रेता	३६००
द्वापर	२४००
कलियुग	१२००
	१२०००

भागवत् में भी ठीक ऐसा ही हिसाब मिलता है। दरअसल ये युग क्रम से ४०००, ३०००, २००० और १००० वर्ष के माने गये हैं। पर हर एक युग के शुरू और आखीर में कुछ वक्त ऐसा होता है जब कि उसका धीरे-धीरे आविर्भाव और लोप होता है। इसी का नाम सन्धि-काल है। सतयुग के दोनों सन्धि-काल ४००-४०० वर्ष के, त्रेता के ३००-३०० वर्ष के, द्वापर के २००-२०० वर्ष के और कलियुग के १००-१०० वर्ष के माने गये हैं। इस हिसाब से चारों युगों के पूरे १२००० वर्ष हो जाते हैं।

अब यह सवाल पैदा होता है कि यह कैसे जाना जाय कि इस हिसाब के अनुसार कलियुग बीत चुका है। इसका सबसे बड़ा सबूत तो आजकल होने वाली घटनायें हैं। पिछले कई वर्षों से दुनिया में जैसी उथल-पुथल मची है और आगे जिसके चिन्ह दिखलाई पड़ रहे हैं वह युग-परिवर्तन का पक्का सबूत है। कुछ थोड़े से स्वार्थी लोगों की बात तो छोड़ दीजिये, पर अगर आप सचाई के साथ अपने दिल में ग़ौर करेंगे तो आपको साफ मालूम पड़ेगा कि पिछले कुछ सालों से हमारे देश और

समाज की कायापलट होने लग गई है। जितनी भी ख़राबियाँ और बुराइयाँ पाई जाती हैं उन सब के खिलाफ आन्दोलन उठ खड़ा हुआ है और बहुत से लोग अपने नफ़ा-नुकसान और तकलीफों का ख़्याल न करके उनके सुधार में लग गये हैं। क्या राजनैतिक, क्या सामाजिक, क्या धार्मिक और क्या आर्थिक सभी क्षेत्रों में हर रोज़ तरक्की की, सुधार की ऐसी-ऐसी मिसालें देखने में आ रही हैं जिनका पहले कोई ज़िक्र ही न था। यही हालत दुनिया के सभी मुल्कों की है। टर्की, ईरान, अरब, मिश्र वग़ैरह जो मुल्क सैकड़ों वर्षों से बुरी हालत में पड़े थे और जहाँ सिर्फ धर्मान्धता का ही दौरदौरा था वे पिछले दस-पन्द्रह वर्षों में बिलकुल नये साँचे में ढल गये हैं। योरोप और अमेरिका के मुल्क अगर्चे धन और विद्या की निगाह से पहले भी तरक्की पर थे पर आजकल वहां भी सामाजिक संगठन में अनहोने बदलाव और नामुमकिन समझे जाने वाले सुधार हो रहे हैं और आगे चल कर और जोरों के साथ होंगे।

पुराना युग ख़त्म होकर नया युग शुरू होने का दूसरा सबूत महाभारत और भागवत् आदि ग्रन्थों में ही मिलता है। युग-परिवर्तन के सम्बन्ध में महाभारत के वन-पर्व में लिखा है :—

ततस्तुमुल सघाते वर्तमाने युग क्षये। ८८
द्विजातिपूर्वको लोकः क्रमेण प्रभविष्यति।
दैवः कालान्तरेऽन्यस्मिन्पुनर्लोकविवृद्धये॥ ८९॥

भविष्यति पुनर्दैवमनुकूलं यदृच्छया।
यदा चंद्रश्च सूर्यश्च तथा तिष्य वृहस्पती।
एक राशौ समेष्यन्ति प्रपत्स्यति तदा कृतम्॥ ९०॥
काल वर्षी च पर्जन्यो नक्षत्राणि शुभानिच।
क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं भविष्यति निरामयम्॥ ९१॥

(महाभारत, वन-पर्व, अध्याय १९०)

"पहले युग के ख़त्म होने के समय बड़ी ही कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए क्रम से ब्राह्मणादि वर्णों का अभ्युत्थान होगा। कुछ वक्त गुजरने पर ईश्वर की मरजी से फिर दैव अनुकूल होने लगेगा। जब चन्द्र, सूर्य, पौष और वृहस्पति एक राशि में समान अंश में हो जायँगे तब फिर सतयुग आरम्भ होगा। उसके बाद शुभ नक्षत्रों में ठीक वक्त पर वर्षा होगी; कल्याण, सुभिक्ष और आरोग्यता प्राप्त होकर लोग सुख से रहने लगेंगे।"

इन श्लोकों में सतयुग शुरू होने का जो समय बतलाया है वह ख़ास तौर पर ध्यान देने योग्य है। यह श्लोक (यदा चन्द्रश्च......) महाभारत के दूसरे पर्वों और भागवत, विष्णु-पुराण आदि जैसे मशहूर ग्रन्थों में भी पाया जाता है। कुछ लोग इसमें आये 'तिष्य' शब्द का मतलब पौष का महीना बतलाते हैं और कुछ पुष्य नक्षत्र। पहले सिद्धान्त के मुताबिक यह योग कुछ वर्ष पहले आ चुका है और दूसरे मत से सम्वत् २००० के श्रावण की अमावस्या (१ अगस्त सन् १९४३) को आयेगा।

सच तो यह है कि युग का बदलना एक दिन में नहीं हो जाता। अगर्चें नये युग बदलने के निशानात पिछले कई वर्षों से दिखलाई पड़ रहे हैं तो भी हमारा ख़्याल है कि सम्वत् २००० के शुरू होने पर दुनिया में ज़रूर ही कोई ख़ास महत्व की घटना होगी जिससे नये युग के साफ़ ज़ाहिर होने में ख़ास तौर पर मदद मिलेगी।

यह हम पहले ही बतला चुके हैं और महाभारत के ऊपर लिखे श्लोकों से भी जान पड़ता है कि युग-परिवर्तन से पहले संसार में भीषण कलह और मारकाट होती है। इसके निशान इस वक्त चारों तरफ़ साफ़ दिखलाई पड़ रहे हैं। इसलिये सम्वत् २००० में या उससे पहले ही संसारव्यापी लड़ाई का छिड़ जाना और उसके फल से संसार की कायापलट होकर नये युग का पूरी तरह ज़ाहिर हो जाना निश्चय जान पड़ता है। इसमें ताज्जुब की कुछ भी बात नहीं है।

बाइबिल की भविष्यवाणी

ईसाइयों की बाइबिल एक पुरानी धर्म-पुस्तक है। उसका कुछ भाग तो जिसे 'ओल्ड टेस्टामेण्ट' कहते हैं, ईसामसीह से भी पहले का है। बाइबिल में ईसाई-धर्म के सिद्धान्तों के अलावा पुराने इतिहास की और ख़ास कर यहूदियों के इतिहास की बहुत सी बातें दी गई हैं। उनसे मालूम होता है कि "ईश्वर ने यहूदियों को हुक्म दिया था कि अगर वे उसके हुक्म के

मुताबिक चलेंगे तो वे सुखी और मालदार बनेंगे। इसके ख़िलाफ़ अगर वे उलटे रास्ते पर चले तो उनको सख़्त सज़ा दी जायगी। अगर वे इससे भी न सुधरे तो परमात्मा उनके शहरों को वीरान कर देगा, उनके दुश्मन वहाँ रहने लगेंगे और यहूदियों को बिना घरबार के दुनिया में भटकते फिरना पड़ेगा। अखीर में जब भटकते और तकलीफ पाते उनको 'सात समय' (Seven Times) बीत जायगा तो परमात्मा उनकी फिर ख़बर लेगा और उनको इकट्ठा करके फिर उनके मुल्क में बसायेगा।"

यहूदियों के रहने की पुरानी जगह पैलेस्टाइन का मुल्क था। वहीं पर उनका एकमात्र और परम पवित्र धार्मिक नगर जरूशलम है। जिस तरह संसार भर के मुसलमान मक्का को एकमात्र तीर्थ-स्थान मानते हैं और दूर-दूर से उसकी यात्रा करने आते हैं उसी तरह यहूदी भी सब तरह की तकलीफ़ें सह कर हज़ारों कोस से जरूशलम की यात्रा करने आते हैं। यह मुल्क कितने ही समय से टर्की के कब्जे में था और उसमें अरब लोग रहते थे। पिछले महायुद्ध के फल से वह अङ्गरेज़ों की मातहती में आया और मित्र राष्ट्रों की सलाह से वहाँ यहूदियों को बसाने का निश्चय हुआ। इसके मुताबिक वहाँ अभी तक क़रीब तीन-चार लाख यहूदी जाकर बस चुके हैं। पैलेस्टाइन को 'यहूदियों का राष्ट्रीय निवास स्थान' क़रार दे दिया गया है।

दरअसल पैलेस्टाइन में यहूदियों का बसना एक अनोखी

घटना है। क्योंकि बाइबिल में इसका जिक्र साफ़ तौर पर पाया जाता है और पिछले कई सौ वर्षों में इस बारे में पचासों बड़ी-बड़ी किताबें लिखी जा चुकी हैं। उन सबमें बाइबिल की भविष्यवाणी में पक्का विश्वास ज़ाहिर करते हुये यह कहा गया है कि 'सात-समय' ख़त्म हो जाने पर यहूदी पैलेस्टाइन में फिर बसेंगे।

बाइबिल की ये भविष्यवाणियाँ ख़ास कर 'डैनियल' और 'रिवेलेशन' शीर्षक विभागों में दी गई हैं। अगर्चे वे सब गूढ़ भाषा में और रूपक के ढङ्ग पर लिखी गई हैं, पर जिन विद्वानों ने उनकी व्याख्या की है उन्होंने उनके आधार पर होनहार घटनाओं की ऐसी हूबहू तस्वीर खींच दी है कि पढ़ने वाले दङ्ग रह जाते हैं। इनमें से कुछ लेखकों ने तो इन घटनाओं का समय भी लिख दिया है जो क़रीब-क़रीब सच साबित हो रहा है। इसका अन्दाज़ उन लोगों ने बाइबिल में यहूदियों के भविष्य क सम्बन्ध में लिखे 'सात-समय' (Seven Times) वाले वाक्य से लगाया है। ईसाई विद्वानों की राय में 'सात-समय' का मतलब है सात वर्ष; पर भविष्यवाणी का एक दिन आम लोगों के एक वर्ष के बराबर माना जाता है। बाइबिल का वर्ष ३६० दिन का होता है। इस हिसाब से 'सात-समय' के (३६० × ७) २५२० वर्ष होते हैं। यहूदियों का पहला दण्ड ईसा के ६०६ और दूसरा ५८९ वर्ष पहले शुरू हुआ था। इस तरह पहले दण्ड से २५२० वर्ष सन् १९१४ में और दूसरे से सन्

१९३१ में ख़त्म होते हैं। पर ईसाइयों के पञ्चाग में चार वर्ष की भूल है और ईसाइयों और यहूदियों की काल-गणना में भी कुछ फ़र्क है। इस सबब से भविष्यवाणी में छः सात वर्ष का फ़र्क पड़ जाना नामुमाकिन नहीं है। इस निगाह से यह समय हमारी सम्वत् २००० (सन् १९४३) की भविष्यवाणी से क़रीब-क़रीब मिल जाता है। नीचे हम बाइबिल की भविष्यवाणी की ख़ास-ख़ास बातों को नम्बरवार देते हैं, जिनमें से कुछ पूरी हो चुकी हैं और कुछ के पूरे होने के निशानात साफ़ तौर पर दिखलाई पड़ रहे हैं :—

(१) बाइबिल में साफ़ शब्दों में लिखा है कि जिस समय यह 'सात-समय' का ज़माना ख़त्म होने को आयेगा और नये युग की शुरुआत होगी, उस समय तमाम दुनिया में लड़ाई-झगड़े फैल जायँगे और क़ुदरती तौर पर भी लोगों का नाश होने लगेगा। उस भविष्यवाणी के विशेष महत्वपूर्ण शब्द ये हैं :—

Wars and rumours of war, for nation shall rise against nation and kingdom against kingdom and there shall be famines and pestilences and earth-quakes in diverse places. These are the beginning of the sorrows, but the end is not yet. (mathew xxiv)

अर्थात् "उस वक्त चारों तरफ़ लड़ाइयाँ होने लगेंगी और लड़ाई की अफ़वाहें सुनाई देने लगेंगी। एक मुल्क दूसरे मुल्क

के ख़िलाफ़ खड़ा होगा और एक सल्तनत दूसरी सल्तनत के। उस समय अकाल पड़ेंगे, महामारी फैलेगी और जगह-जगह भूकम्प आयेंगे। यह हालत शुरू में होगी और अख़ीर तक इससे कहीं ज्यादा कष्ट भोगने पड़ेंगे।"

इस भविष्यवाणी की व्याख्या करते हुए ईसाई विद्वानों ने बतलाया है कि योरोप में अशान्ति का युग प्रायः सन् १९०६ से शुरू हो जायगा और उसके फल से योरोप का पहला नक्शा बहुत कुछ बदल जायगा। क्योंकि इस भविष्यवाणी में 'सात-समय' के अख़ीर में होने वाले सबसे भयानक महायुद्ध (War of Armagadden) के समय में योरोप की जैसी राजनैतिक स्थिति बतलाई गई है वह पच्चीस-तीस वर्ष से कम समय में नहीं बदल सकती।

(२) भविष्यवाणी की दूसरी आश्चर्यजनक रूप से सच होने वाली बात टर्की के बारे में है। इस विषय में बाइबिल में लिखा है :—

And the sixth angel poured out his vial upon the great river Euphraties and the water thereof dried up.

(Revelation xvi)

"छठे फ़रिश्ते ने अपना 'वायल' यूफ्रेटीज नदी के ऊपर डाला और उसका पानी सूख गया।"

ईसाई धर्म के सैकड़ों बड़े-बड़े विद्वान् पुराने समय से यह लिखते आये हैं कि इस भविष्यवाणी में यूफ्रेटीज नदी के सूखने

का जो वर्णन है उसका मतलब टर्की की सल्तनत के टुकड़े-टुकड़े होकर ख़त्म हो जाने से है। इस बारे में तेलनघास्ट नाम के लेखक ने सन् १६५५ में लिखा था :—

"यूफ्रेटीज नदी का वास्तविक आशय तुर्की साम्राज्य से है। आम तौर पर बातचीत में इस सल्तनत को 'बड़ी नदी' के नाम से पुकारा जाता है, क्योंकि उसमें बहुत सी जातियों के लोग शामिल हैं। इसलिए इसमें कुछ भी शक नहीं कि जब ईश्वरीय कोप का समय आयेगा तब यह सल्तनत ज़रूर ही नष्ट-भ्रष्ट हो जायगी।"

एक दूसरे विद्वान ने इसी भविष्यवाणी की व्याख्या करते हुये सन् १८६६ में लिखा था :—

"अगर्चे इस वक्त तक टर्की का आधे से ज़्यादा राज्य छीना जा चुका है तो भी अभी इस भविष्यवाणी के पूरे होने में कुछ देर है। क्योंकि यह तभी पूरी होगी जब कि टर्की के वर्तमान शासक तख़्त पर से उतार दिये जायँगे और वहाँ एक बिल्कुल नये ढङ्ग की हुकूमत क़ायम हो जायगी।"

(३) आजकल योरोप में डिक्टेटरों का जो दौरदौरा है उसका भी जिक्र बाइबिल में है। यह बात बड़े ताज्जुब की है कि जहाँ आज से पच्चीस-तीस साल पहले योरोप में प्रजातन्त्रवाद का बोलबाला था और छोटे-बड़े सभी उसी के गुण गाते थे आज सब जगह उसकी मिट्टी पलीद हो रही है और हर मुल्क में डिक्टेटर पैदा होते जा रहे हैं। पर उपरोक्त भविष्यवाणी के

सम्बन्ध में लिखने वालों ने इस बात का जिक्र बहुत पहले कर दिया था। बाइबिल के 'डैनियल' में एक स्थान पर कहा गया है :—

"चौथे राज्य (रोमन साम्राज्य) के अखीर के दिनों में, जब कि लोगों के पाप का प्याला पूरा भर जायगा, एक ऐसा बादशाह पैदा होगा जिसकी शकल बड़ी भयङ्कर होगी और जो बड़े कठोर शब्द बोलेगा। उसका अधिकार चारों तरफ़ होगा, पर अपनी ताक़त के ज़ोर से नहीं। वह संसार का बड़ा नाश करेगा और सबका स्वामी बन बैठेगा।"

पाठक देख सकते हैं कि इस भविष्यवाणी के लक्षण आज कल कई डिक्टेटरों में पाये जाते हैं। ख़ास कर जिन लोगों ने मुसोलिनी के युद्ध-मद से उन्मत्त चित्र देखे हैं वे तो इसकी सचाई को ज़रूर मान लेंगे। बाइबिल में यह भी बतलाया गया है कि इस बादशाह को मारने की कोशिश की जायगी पर वह फिर से जिन्दा हो जायगा।

(४) योरोप और संसार के तमाम दूसरे देशों में लड़ाई की जो ख़तरनाक तैयारियाँ हो रही हैं और जिस तरह एक-एक करके सभी देशों में युद्ध-ज्वर फैल रहा है उसका वर्णन बाइबिल में बड़े रोचक ढङ्ग से किया गया है :—

And when he had opened the secend seal, I heard the second beast say, come and see. And that there went out another horse that was red and, power

was given to him that sat thereon to take peace from the earth and that they should kill ane another, and there was given unto him a great sword.

"जब उसने दूसरी मुहर को तोड़ा तो उसमें से दूसरा जानवर निकला। मैंने उस दूसरे जानवर को कहते सुना कि आओ और देखो। यह लाल रङ्ग का घोड़ा था, और जो उस पर बैठा था उसे इस बात की ताक़त दी गई थी कि वह संसार की शान्ति को हर ले और लोग एक दूसरे को मारने लग जायँ। उस सवार के हाथ में एक बड़ी तलवार दी गई थी।"

इस समय दुनिया भर में जैसी घोर अशान्ति फैली हुई है और हर जगह हथियारों की खड़खड़ाहट ही सुनाई देती है उसे देख कर बाइबिल के इस रूपक की सचाई में कौन सन्देह कर सकता है।

इस भविष्यवाणी में 'लाल' शब्द भी ध्यान देने योग्य है। आजकल संसार में लड़ने वाले जो दो प्रधान दल हैं उनमें से एक साम्यवादियों या बोलशेविकों का है जिनको 'लाल' के नाम से ही पुकारा जाता है। आजकल दुनिया में लड़ाई की जो आग भड़की हुई है उसका ख़ास सबब इस 'लाल' दल का पैदा होना ही है।

(५) बाइबिल की भविष्यवाणियों में 'सात ट्रम्पेट्स' (Seven trumpets) का वर्णन ख़ास तौर पर महत्वपूर्ण है।

उसके लेखानुसार ये 'सात ट्रम्पेट्स' ईश्वरीय दण्ड स्वरूप हैं जो दुनिया के लोगों को उनकी बुराइयों के बदले में दिये जायँगे। इनका वर्णन प्राकृतिक दुर्घटनाओं के रूप में किया गया है पर कितने ही विद्वानों का मत है कि उनका मतलब दुनिया में होने वाली राजनैतिक घटनाओं और उपद्रवों से ही है। नीचे हम बाइबिल के मूल शब्दों को देकर उनका अर्थ और उनके सम्बन्ध में आलोचकों की राय देते हैं जिससे पाठक उनके वास्तविक भाव को समझने में समर्थ हो सकें :—

The first angel sounded, and there followed hail and fire mingled with blood, and they were cast upon the earth ; and the third part of trees was burnt up, and all green grass was burnt up.

And the second angel sounded, and as it were a great mountain burning with fire was cast into the sea : and the third part of the sea became blood. And the third part of the creatures which were in the sea, and had life, died ; and the third part of the ships were destroyed.

And the third angel snunded, and there fell a great star from heaven, burning as it were a lamp, and it fell upon the third part of the rivers, and upon the fountains of waters. And the name of the star is

called wormwood : and the third part of the waters became wormwood ; and many men died of the waters, because they were made bitter.

अर्थात्—"पहले फ़रिश्ते ने अपना 'ट्रम्पेट' (बिगुल) बजाया और पृथ्वी पर बरफ़ का तूफ़ान आया और आग तथा ख़ून की बारिश हुई। इससे पेड़ों का एक तिहाई भाग जल गया और तमाम हरी घास जल गई।"

"दूसरे फ़रिश्ते ने 'ट्रम्पेट' बजाया और एक बहुत बड़ा जलता हुआ पहाड़ समुद्र में गिरा और इससे समुद्र का एक तिहाई हिस्सा ख़ून हो गया। समुद्र में रहने वाले जीवित प्राणियों में से एक तिहाई मर गये और एक तिहाई जहाज़ नष्ट हो गये।"

"तीसरे फ़रिश्ते ने 'ट्रम्पेट' बजाया और एक बहुत बड़ा तारा गिरा, जो दीपक की तरह प्रकाशित था। यह नदियों और पानी के स्रोतों के एक तिहाई भाग पर पड़ा। इस तारे का नाम 'वॉर्म वुड' है। इससे जल-स्रोतों का एक तिहाई भाग 'वॉर्म वुड' हो गया। यह पानी ज़हरीला था, जिसके पीने से बहुत से आदमी मर गये।"

इसी तरह अगले 'ट्रम्पेट्स' के बजने पर दूसरी आपत्तियाँ दुनिया में रहने वाले लोगों को सहनी पड़ेंगी। चौथे 'ट्रम्पेट' से सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश घट जायगा ; पाँचवें से मनुष्यों को कष्ट पहुँचाने वाले टिड्डियों के आकार के जानवर पृथ्वी के

भीतर से निकलेंगे और छठे से आग और धुँआ से लोगों को मारने वाले सवार उत्पन्न होंगे। जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं, इन तमाम भविष्यवाणियों अथवा उनमें से अधिकांश का अर्थ रूपक की दृष्टि से विचार करने पर बिल्कुल बदल सकता है। उदाहरण के लिये हम टिड्डियों से आजकल के हवाई जहाज़ों और आग तथा धुँआ से मारने वाले सवारों से तोपों तथा मशीनगनों का मतलब समझ सकते हैं। इसी तरह समुद्र में पहाड़ तथा तारा आदि के गिरने का अर्थ भी भयङ्कर राजनैतिक हलचल तथा अन्य उपद्रव समझा जा सकता है।

(६) बाइबिल में अकाल का जैसा भीषण चित्र खींचा गया है, वह भविष्यवाणी की निगाह से ही नहीं, वरन् प्रभावशाली लेखनशैली की निगाह से भी पढ़ने लायक है। वैसे अकाल हमेशा ही पड़ा करते हैं और जब संसार में लड़ाई-झगड़े ज्यादा फैले होते हैं तो उनका रूप और भी भयङ्कर हो जाता है। उस समय खेतीबारी और उपयोगी चीज़ों के बनाने वाले लाखों मज़बूत आदमी फ़ौज में भरती कर लिये जाते हैं, जिससे पैदावार अपनेआप कम हो जाती है। फिर लड़ने वाली असंख्यों सेना के लिये हर रोज़ लाखों मन अनाज और दूसरी खाने-पीने की सामग्री ज़रूरी होती है। इस सबब से ऐसे मौक़े पर इन चीजों का दाम बेहद बढ़ जाना स्वाभाविक ही होता है। इसके सिवा दोनों तरफ़ की फ़ौजों में से जो दुश्मन के देश में आगे बढ़ती है वह खेतीबारी और व्यापार की मण्डियों

तथा बाजारों को नष्ट-भ्रष्ट करती चलती है, इससे अकाल और भी भयङ्कर रूप धारण कर लेता है। फिर अगले महायुद्ध में तो इस बात की सम्भावना है कि दोनों तरफ़ के हवाई जहाज़ शुरू में ही बम गिरा कर या ज़हर की वर्षा करके अनाज के भण्डारों को नष्ट करने अथवा उसे ख़राब कर देने की कोशिश करेंगे। इन सब बातों के मिलने से अगर अगले कुछ वर्षों में हम लोगों को एक बहुत ही भीषण अकाल का सामना करना पड़े तो कोई आश्चर्य नहीं। इस सम्बन्ध में बाइबिल की भविष्य-वाणी इस प्रकार है :—

And when he had opcned the third seal, I heard the third beast say, Come and see. And I beheld, and lo, a black horse; and he that sat on him had a pair of balances in his hand. And I heard a voice in the midst of the four beasts say; A measure of wheat for a penny, and three measures of barley for a penny; and see thou hurt not the oil and the wine.

अर्थात्—"जब उसने तीसरी मुहर को खोला तो उसमें से तीसरा जानवर निकला। वह काले रङ्ग का घोड़ा था और उसके ऊपर जो सवार था उसके हाथ में एक तराज़ू थी। मैंने एक आवाज़ सुनी कि एक पैमाना गेहूँ एक सिक्के को मिलेगा और तीन पैमाना जौ का दाम एक सिक्का होगा, पर तेल और शराब पर कोई हानिकारक प्रभाव न पड़ेगा।"

इस अकाल की भयङ्करता के बारे में बाइबिल में कई जगह लिखा गया है। 'लैमनटेशन' विभाग में लिखा है:—

"लोगों के चेहरे कोयले की तरह काले हो जायँगे। वे गलियों में मारे-मारे फिरेंगे। उनकी खाल हड्डियों से अलग होकर लटक पड़ेगी और शरीर सूख कर लकड़ी की तरह हो जायगा। जो लोग तलवार से मारे जाते हैं वे उन भूख से मरने वालों की बनिस्वत सुख में रहेंगे।"

बाइबिल के 'इसायाह' विभाग में लिखा है:—"देखो ईश्वर ने पृथ्वी को उजाड़ बना दिया और वह सुनसान पड़ी है। इस भयङ्कर अकाल के वक्त जो हाल किसानों का होगा वही जमींदार का होगा; जो हाल खरीदने वालों का होगा वही बेचने वालों का होगा; जो हाल कर्ज़दारों का होगा वही साहूकार का होगा; जो हाल भिखारी का होगा वही दाता का होगा। तमाम खेत सूख जायँगे और बर्बाद हो जायंगे। पृथ्वी पर से चैन और आराम उठ जायगा और लोग सुस्त दिखलाई पड़ने लड़ेंगे। चारों तरफ़ रञ्ज ही रञ्ज दिखलाई देगा। अनगिनती मनुष्य इस भयङ्कर काल में मरेंगे और पृथ्वी पर थोड़े ही आदमी बचेंगे। बड़े-बड़े शहर उजाड़ हो जायँगे और घरों में ताले पड़े होंगे। सड़कों पर कोई आदमी फिरता दिखलाई न पड़ेगा, क्योंकि ईश्वर ने ऐसी ही आज्ञा दी है।"

यह सच है कि यह वर्णन अलङ्कारिक भाषा में बढ़ा-चढ़ा कर किये गये हैं, तो भी इसमें कोई भी समझदार आदमी

सन्देह नहीं कर सकता कि जब कभी भावी महाभारत होगा, उस समय अकाल अपना भीषण स्वरूप जरूर दिखलायेगा और उसके फल से बेशुमार लोग नष्ट होंगे।

(७) इस 'सात-समय' के प्रलयकारी जमाने में अकाल के साथ दुनिया में जो भयङ्कर बीमारियाँ फैलेंगी उनके बारे में भविष्यवाणी के कर्ता का कथन है :—

"जब उसने चौथी मुहर को खोला तो उसमें से चौथा जानवर निकला। यह एक पीले रङ्ग का घोड़ा था। उस पर मृत्यु का देवता (प्लेग) बैठा था। और उसके पीछे नर्क अथवा प्रेत-लोक का देवता चलता था। इस देवता को यह ताक़त दी गई थी कि वह पृथ्वी के एक चौथाई भाग में तलवार, प्लेग, अकाल और जंगली जानवरों आदि के द्वारा मनुष्यों का नाश करे।"

इस भविष्यवाणी की व्याख्या करने वाले विद्वानों का मत है कि जिस समय यह अवसर आयेगा मृत्यु-देव योरोप को श्मशान भूमि बना देंगे। बीमारियों के सबब से लोगों की अकथनीय दुर्दशा होगी। जहाँ देखो मुर्दे ही मुर्दे पड़े होंगे। सड़कें मुर्दों से भरी होंगी और कोई उनको उठाने वाला न होगा। उनके सड़ने से ऐसी बदबू फैलेगी कि लोगों को घरों में ठहर सकना मुशकिल हो जायगा। उस समय चारों तरफ़ मृत्यु और कष्ट ही दिखलाई पड़ेंगे और हर एक आदमी मरने के भय से

अधमरा हो रहा होगा। जब दो आदमी आपस में मिलेंगे तो उनके पास अपने दुःख की कहानी सुनाने के सिवा और कोई बात न होगी।

(८) इस भयङ्कर आपत्ति-काल में दूसरी बहुत सी प्राकृतिक दुर्घटनाओं के सिवा एक महाभयङ्कर भूकम्प के आने की बात भी बाइबिल में लिखी है। इस भूकम्प का वर्णन बड़ी ही प्रभावोत्पादक भाषा में किया गया है। भविष्यवाणी का शब्दशः अनुवाद नीचे दिया जाता है:—

"मैंने देखा कि उसने छठी मुहर को खोला जिससे एक महाभयङ्कर भूकम्प आया। सूरज बालों से बने कम्बल की तरह काला हो गया और चन्द्रमा खून की तरह दिखाई देने लगा। आकाश के तारे इस तरह ज़मीन पर गिरने लगे जैसे जोरदार आँधी के चलने से अञ्जीर के पेड़ से अधपकी अंजीरें गिर जाती हैं। आसमान काग़ज़ के गोल पुलिन्दे की तरह दो टुकड़ों में फटकर अलग-अलग हो गया और तमाम पहाड़ और टापू अपनी जगह से हट गये। दुनिया के बादशाह, बड़े आदमी, अमीर लोग, बड़े-बड़े सरदार और अधिकारी लोग, गुलाम और स्वतन्त्र व्यक्ति सब कोई खोहों और पहाड़ की गुफाओं में जा छिपे। वे उन पहाड़ों और चट्टानों से कहने लगे कि हमारे ऊपर गिर पड़ो और हम को उस न्यायकर्ता परमेश्वर के रोष से बचाओ।"

(९) इन घटनाओं के सिवा भविष्यवाणी से यह भी जान पड़ता है कि जब यह 'सात-समय' का ज़माना समाप्त होने को आयेगा तो कुछ ऐसी प्राकृतिक घटनायें होंगी जिनसे मनुष्यों को बहुत अधिक तकलीफ़ उठानी पड़ेगी। मालूम होता है कि उस समय भूकम्प और सूर्य की हालत में तब्दीली होने से पृथ्वी की आवहवा में ऐसा बदलाव होगा, जो लोगों के स्वभाव के बिल्कुल विरुद्ध होगा। उस समय लोगों के शरीर में बड़े-बड़े दुखदाई फोड़े हो जायँगे, समुद्र और नदियों के जानवर मर जायँगे और समुद्र तथा नदियों का पानी ख़ून की तरह लाल हो जायगा। इनमें सबसे अधिक गम्भीर घटना होगी सूर्य की गर्मी और रोशनी में फ़र्क पड़ना। इस सम्बन्ध में बाइबिल का कथन है :—

"चौथे फ़रिश्ते ने अपना 'वायल' सूर्य पर डाला। सूर्य को ऐसी शक्ति दी गई कि वह मनुष्यों को गरमी से भून डाले। भयङ्कर गरमी से व्याकुल होकर लोग परमेश्वर को गालियाँ देने लगेंगे कि उसने कैसी व्याधियाँ उत्पन्न की हैं।"

इसकी व्याख्या करते हुये एक विद्वान् ने लिखा है कि "इस समय मनुष्य जाति की दुर्गति चोटी पर पहुँच जायगी। जल, थल, सूर्य आदि जो जीवन के मुख्य साधन हैं वे ही सब मनुष्यों को उनके कर्मों का फल देने लगेंगे। जहाँ कुछ दिनों पहले लोग ऐश-आराम में मस्त पड़े होंगे वहाँ अब रोने चिल्लाने और शोक

के सिवा कुछ न सुनाई देगा। इस समय कितने ही दिन तक सूर्य पृथ्वी के ऊपर इतनी अधिक गर्म और जलाने वाली किरणें डालेगा कि मनुष्यों को अपने घर भट्टी की तरह जान पड़ने लगेंगे। इसके कुछ समय बाद सूर्य की रोशनी एक दम घट जायगी जिससे कितने ही दिनों तक अँधेरा सा छाया रहेगा।

(१०) भावी महायुद्ध का निम्नलिखित वर्णन, जो भविष्यवाणी में किया गया है, बड़ा ही रोमाञ्चकारी है :—

"मैंने एक फ़रिश्ते को सूर्य के प्रकाश में खड़े देखा। उसने जोर से पुकार कर कहा कि आसमान में उड़ने वाले पक्षियो, इकट्ठे होकर आओ और ईश्वर के दिये हुये भोज में शामिल हो। इसमें तुमको बड़े-बड़े बादशाहों, राजाओं, कप्तानों, ताक़तवर मनुष्यों, घोड़ों और उन पर बैठने वालों और सब प्रकार के स्वतन्त्र और गुलाम, छोटे और बड़े मनुष्यों का माँस खाने को मिलेगा।"

भविष्यवाणी के लेखानुसार यह युद्ध पैलेस्टाइन के आस-पास होगा और इसमें ख़ासकर योरोप और एशिया की सेनाएँ एक दूसरे से लड़ेंगी। बाइबिल में इसे अंतिम लड़ाई के नाम से पुकारा गया है और लिखा है कि इसके बाद संसार में ईसामसीह का दुबारा अवतार होगा।

(११) बाइबिल के भविष्य-वर्णन का अन्त नीचे लिखी भविष्यवाणी से होता है :—

"मैंने एक फ़रिश्ते को आसमान से आते देखा। उसने शैतान

को जंजीर से बाँध कर अथाह गड्ढे में फेंक दिया और उसे बन्द कर दिया। इसके बाद पृथ्वी पर एक हज़ार वर्ष तक ईसामसीह राज्य करेंगे।"

बाइबिल के लेखानुसार "इन सात सालों में दुनिया की हालत में ज़मीन-आसमान का फ़र्क पड़ जायगा। लड़ाई, प्राकृतिक दुर्घटनाओं और बीमारियों से करोड़ों मनुष्य पृथ्वी की जनसंख्या में से कम हो जायँगे और भारी-भारी शहर सुनसान दिखलाई पड़ने लगेंगे। पर इसके बाद जब पृथ्वी का शासन ईसामसीह और उनके साथी संत-पुरुष करने लगेंगे तो सब तकलीफ़ें मिट जायँगी, और लोगों की तादाद फिर बढ़ जायगी। उस समय सब लोग ईश्वरीय हुक्म के मुताबिक चलने लगेंगे और पाप करना छोड़ देंगे। उस समय दुनिया में फ़ौज और जहाज़ी बेड़ों का नाम भी न रहेगा और लोग तलवारों को तोड़ कर हल का फार बना लेंगे। एक देश के निवासी दूसरे देश के निवासी से झगड़ा न करेंगे और युद्ध सदा के लिये बन्द हो जायगा। जङ्गल के ख़ूंखार जानवर भी शान्त बन जायँगे। शेर और रीछ आदि गाय भैंसों के साथ चरने लगेंगे, और भेड़िया तथा भेड़ साथ-साथ फिरेंगे। कोई मनुष्य छोटी उम्र में न मरेगा, सब सौ साल तक जिन्दा रहेंगे। इस युग में हकूमत सिर्फ उन्हीं लोगों के हाथ में रहेगी जिनका चरित्र शुद्ध तथा पवित्र होगा और जो नम्र, विनयशील तथा ग़रीबी को पसन्द करने वाले होंगे।"

इस उदाहरण में जिस आदर्श शासन-व्यवस्था का वर्णन किया गया है, उसे हम सच्चे साम्यवाद के नाम से पुकार सकते हैं। हिन्दू धर्मशास्त्रों में सतयुग का जो वर्णन है वह इससे बिल्कुल मिलता-जुलता है, सिर्फ शब्दों का अन्तर है। अब प्रजातन्त्रवाद में जानकार लोगों को अनेक दोष दिखलाई देने लगे हैं। पहले उसका मतलब समानाधिकार समझा जाता था, पर अब उसका अर्थ बहुमत अथवा 'मैजोरिटी' (majority) की हकूमत हो गया है। इसके फल से शासन-व्यवस्था में बड़ी-बड़ी ख़राबियाँ पैदा हो गई हैं। जिस दल की प्रधानता होती है वह अक्सर अपने विरोधी दल को दबाने की कोशिश करता है। पूँजीपतियों और मजदूरों का कलह तो इस युग की प्रत्यक्ष बुराई है, जिसके सबब से संसार की अकथनीय दुर्दशा हो रही है।

इस दुर्दशा को देख कर लोगों का ध्यान साम्यवाद की ओर आकर्षित हुआ है, पर वर्तमान समय में उसका जो रूप दिखलाई पड़ रहा है, वह बिल्कुल अस्पष्ट और त्रुटिपूर्ण है। इस समय उसका ख़ास उद्देश्य अपने विरोधियों के प्रति घृणा फैलाना और वर्ग-युद्ध को उत्तेजना देना हो रहा है। इसका फल बाद में कैसा भी निकले इस समय तो समाज में अशान्ति ही बढ़ती जाती है और आपस के विरोध की जड़ गहरी होती जाती है। जैसा हमने इस पुस्तक में अन्यत्र लिखा है आजकल संसार में महायुद्ध की जो आशङ्का फैली हुई है, उसका मुख्य

कारण साम्यवादियों अथवा कम्यूनिस्टों के बल की वृद्धि होना ही है।

इन तमाम बातों को देख कर अब बहुत से उच्चश्रेणी के विचारकों का ख्याल फिर एकाधिकार की ओर जाने लगा है। पर यह एकाधिकार राजाओं अथवा डिक्टेटरों का न होगा वरन् बाइबिल में वर्णित सन्त-पुरुषों अथवा हिन्दू धर्म-ग्रन्थों में वर्णित ऋषियों का होगा, जो स्वार्थ-साधन और निजी ऐश आराम से दूर रह कर वास्तव में त्याग और परोपकारमय जीवन बितायेंगे। ये लोग प्रत्येक समूह के साथ निष्पक्ष रह कर न्याय और कृपा का व्यवहार कर सकेंगे और उनके शासन में वास्तव में शेर और गाय एक घाट पानी पियेंगे। बाइबिल की भविष्य-वाणी अथवा हिन्दुओं के सतयुग का यह आदर्श वास्तव में सराहनीय है और अगर मनुष्य जाति को उन्नति करना है तो उसे एक न एक दिन इसे प्राप्त करना ही होगा।

इस दृष्टि से बाइबिल की भविष्यवाणी की सत्यता सभी स्वीकार करेंगे। यद्यपि हिन्दुओं के वेद और दूसरे महत्वपूर्ण ग्रन्थों की तरह इन भविष्यवाणियों का अर्थ भी लोग भिन्न-भिन्न प्रकार से करते हैं। कितने ही उनको भूतकाल की घटनाओं का वर्णन बतलाते हैं और कितने ही भविष्य की। पर हमारे ख्याल में इन भविष्यवाणियों में ऐसी मूल आधारभूत (Basic) बातें कही गई हैं जो हमेशा ही सच होती रहेंगी। एक मशहूर कहावत है कि 'इतिहास बार-बार अपने को दुहराता

रहता है।' इसलिए अब भी इन भविष्यवाणियों के अनुसार घटनायें होना कुछ भी असम्भव नहीं है, वरन् आजकल के लक्षणों से तो उनके सच्ची होने की पूरी सम्भावना जान पड़ती है। प्राचीन शास्त्रों और गूढ़ विषयों का अध्ययन करने वाले पाठक स्वयं उनका अर्थ समझ कर वास्तविकता को जान सकते हैं।

शेरो साहब की भविष्यवाणी

शेरो साहब विलायत के सब से बड़े ज्योतिषी और सामुद्रिक-शास्त्र (हाथ देखने) के आचार्य थे। उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी कि वे जिस आदमी का हाथ देखते थे उसके जीवन की तमाम गुज़री हुई और होने वाली घटनायें उनको बायस्कोप की भाँति दिखलाई पड़ने लगती थीं। यही सबब है कि दुनिया के ज़्यादातर बड़े-बड़े बादशाह, राज्यों के सञ्चालक और बड़े-बड़े व्यक्ति उनको अपना हाथ दिखलाया करते थे और उनकी सच्चाई के सामने सर झुका देते थे। उनकी कुछ बातें तो ऐसी मशहूर हैं कि जिनका हाल अङ्गरेज़ी जानने वाले हर एक ज्योतिष प्रेमी को मालूम है। शेरो साहब ने दक्षिण अफ्रिका की लड़ाई, रानी विक्टोरिया की मृत्यु और जर्मनी की लड़ाई का ठीक वक्त वर्षों पहले बतला दिया था। उनकी सब से ज़्यादा आश्चर्यजनक भविष्यवाणी लार्ड किचनर के सम्बन्ध में है, जिनको उन्होंने सन् १८८७ में बतला दिया था

कि उनको सन् १९१४ में किसी बड़े युद्ध की जिम्मेवारी उठानी पड़ेगी और उनकी मौत उसी युद्ध में लड़ाई के मैदान में होने के बजाय समुद्र में डूबने से ६६ साल की उम्र में होगी।

अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में शेरो साहब ने ज्योतिष-शास्त्र की बहुत सी पुस्तकें लिखी थीं जो लोगों को बहुत पसन्द आई थीं। उन्होंने 'वर्ल्ड प्रीडिक्शन' नाम की पुस्तक सन् १९२५ में लिखी थी जिसमें संसार के सभी ख़ास-ख़ास देशों का राजनैतिक भविष्य और दूसरी मार्के की घटनाओं का ज़िक्र है।

शेरो साहब के भविष्य-कथन का आधार यह सिद्धान्त है कि पृथ्वी की कक्षा अथवा धुरी अपनी जगह से बराबर हटती रहती है और इसके सबब से सूर्य भी हमको अपनी जगह से हटता नज़र आता है। यह पृथ्वी का हटना इस तरह होता है कि सूर्य एक-एक करके बारहों राशियों में हो आता है। एक राशि से दूसरी राशि में जाने में उसे २१५० वर्ष और बारहों राशियों में २५८०० वर्ष लगते हैं। ईसा के ज़माने में सूर्य मीन राशि में था। अब सन् १७६२ से कुम्भ राशि में आ गया है।

पृथ्वी की कक्षा में होने वाले इस बदलाव का असर दुनिया की आबहवा पर बहुत ज्यादा पड़ता है। ध्रुवों का स्थान बदल जाने से बड़े-बड़े भूकम्प आते हैं, समुद्रों की गहराई में फ़र्क़ पड़ जाता है और दुनिया का नक्शा बहुत बदल जाता है। पृथ्वी की कक्षा में अन्तर पड़ने की बात को वैज्ञानिक लोग

भी मानते हैं और वेद आदि प्राचीन ग्रन्थों से भी यह सिद्ध होता है। लोकमान्य तिलक ने अपने वेद सम्बन्धी ग्रन्थ में इस विषय पर बहुत सी प्रमाणिक बातें लिखी हैं।

शेरो साहब के कहने के मुताबिक अगले ५० वर्षों में अटलांटिक महासागर के तले में बड़ा अन्तर पड़ जायगा और उसके फल से अमरीका का बहुत सा हिस्सा, आयरलैण्ड, इङ्गलैण्ड, स्वीडेन, नार्वे, डेनमार्क और रूस, जर्मनी तथा फ्रांस के उत्तरी भाग इतने ठण्डे हो जायँगे कि वहाँ मनुष्य का रह सकना मुशकिल होगा।

इसके बदले चीन, भारत, अफ्रीका, मिश्र आदि जैसे देश जो अभी ख़ास तौर पर गर्म समझे जाते हैं, मातदिल हवा वाले हो जायँगे। इससे इन देशों में सभ्यता की बहुत बढ़ती होगी और ये दुनिया भर में सब से ज़्यादा महत्व के समझे जाने लगेंगे। अटलांटिक सागर के बीच एक बड़ा टापू निकल आने से अफ्रीका का सहारा फिर से समुद्र बन जायगा और इससे उस देश की बहुत ज़्यादा तरक्की होगी। पैलेस्टाइन, मिश्र और आस-पास के देश संसार भर के व्यवसाय और सभ्यता के केन्द्र बन जायँगे।

सूर्य जब तक कुम्भ राशि में रहेगा संसार की सामाजिक अवस्था भी बहुत बदली रहेगी। इस युग में स्त्रियों और मज़दूरों की प्रधानता रहेगी।

ग्रहों का फल

शेरो साहब की राय में सन् १९२६, १९२७ और १९२८ में कई ग्रहों का, ख़ास कर मङ्गल और शनि का संयोग इस तरह हुआ है कि उसका नतीजा ज़रूर ही तमाम दुनिया के लिये बहुत ख़राब होगा। इसके फल से उन तमाम मुल्कों में हलचल और लड़ाई-झगड़े फैल जायँगे, जिनके स्वामी मङ्गल और शनि हैं। जिन मुल्कों का स्वामी मङ्गल है उनमें इङ्गलैण्ड, जर्मनी, डेनमार्क, पश्चिमी पोलैण्ड, पैलस्टाइन सीरिया और जापान ख़ास हैं। और जिन देशों का स्वामी शनि है उनमें रूस, चीन, भारतवर्ष, अफ़ग़ानिस्तान, मिश्र, यूनान, जैकोस्लोविका, बलगेरिया वग़ैरह शामिल हैं। इन सब देशों में इन ग्रहों के संयोग के फल से जनता में हलचल फैलेगी, क्रान्ति की तैयारी होने लगेगी, हड़तालों की तादाद बहुत बढ़ जायगी, फ़सल ख़राब होगी, रुपये की कमी हो जायगी, ज़ायदाद का नाश होगा, भारी-भारी अग्निकाण्ड होंगे, भयङ्कर तूफ़ान आयेंगे, और ऐसे मुकामों में भी भूकम्प आने लगेंगे जो अभी तक इस आफ़त से बचे हुये हैं। ये सब लक्षण पिछले दो-तीन वर्षों से स्पष्ट दिखलाई दे रहे हैं और अभी आठ नौ वर्ष तक (क़रीब सन् १९३८ तक) इनका ज़ोर बढ़ता ही जायगा। इसी समय के आसपास योरोपीय देशों में महायुद्ध छिड़ने की भी पूरी सम्भावना है।

इस लड़ाई के सबब से दुनिया की जैसी बुरी हालत होगी

उसका वर्णन कर सकना नामुमकिन है। एक तो कुदरती उपद्रवों के सबब से ही दुनिया बर्बाद और भूखी नङ्गी होगी, इतने पर भी लड़ाई के लिये असंख्यों मन अनाज और गोला-बारूद देना होगा। करोड़ों जवान और मिहनती मनुष्य लड़ाई में मारे जायँगे और बुड्ढे, कमज़ोर और अपाहिज लोग बच रहेंगे। इसलिये अकाल और रोग दुनिया में हाहाकार मचा देंगे।

एक नया धर्म

इस लड़ाई के फल से दुनिया में एक नये धर्म तथा सिद्धान्त का प्रचार होगा। इस धर्म का नाम साम्यवाद है और रूस इसका प्रचारक है। यह धर्म संसार के दूसरे सभी धर्मों के ख़िलाफ़ है और इसका मुख्य उपदेश यह है कि संसार में से ग़रीब-अमीर का भेद मिट जाय; कोई आदमी बहुत बड़ा धनवान; या जायदाद, कारखानों और जमींदारी वग़ैरह का मालिक न रहे; और राजा, बादशाह, रईस, अमीर आदि का नाम ही मिट जाय। यह नहीं कहा जा सकता कि जब दुनिया में सब लोग इस प्रकार बराबर हो जायँगे तो उससे मनुष्य जाति का कल्याण होगा अथवा अकल्याण; लोग ज्यादा सुख से रहने लगेंगे या उनके दुःख और भी बढ़ जायँगे? पर इसमें शक नहीं कि अगर अगले महायुद्ध में रूस की जीत हो गई तो यह साम्यवाद का धर्म तमाम संसार में फैल जायगा और दूसरे

सब धर्म एक बार इसके सामने दब जायँगे । इस सम्बन्ध में शेरो साहब के शब्द ये हैं :—

"अगले वर्षों में कम्यूनिज़्म (साम्यवाद) का प्रभाव समस्त संसार में अग्नि के समान फैल जायगा। दुनिया में बड़े विचित्र सिद्धान्तों का प्रचार किया जायगा और लोग उनको मान लेंगे। अमीर लोग ख़ुशी से अपने धन-सम्पत्ति को त्याग देंगे और गरीब बन जायँगे। बादशाह लोग मज़दूरों के साथ बैठ कर रोटी खायँगे और मज़दूर बादशाहों पर हुक्म चलावेंगे। बड़े-बड़े लोगों के पुत्र और पुत्रियाँ साम्यवादी बन जायँगे और अपने बापदादों की जमीन-जायदाद को गरीबों को बांट देंगे। ईसाई धर्म भी बिल्कुल बदल जायगा और उसमें अजीब तरह के सिद्धान्त शामिल कर दिये जायँगे।"

चन्दकवि की भविष्यवाणी

पृथ्वीराज रायसा हिन्दी की सबसे पुरानी और मशहूर पुस्तक है। वह पृथ्वीराज के मित्र चन्द बरदाई की लिखी हुई है। कहा जाता है कि चन्द बरदाई को देवी का इष्ट था और उसके ज़रिये वह सदा होनहार घटनाओं को जान लेता था। यह भविष्यवाणी उसी ने कही है और यह भी लिखा है कि यह उसने महादेवजी के गण वीरभद्रजी के मुख से सुनी थी। यह भविष्यवाणी उस समय की है जब कि पृथ्वीराज शाहबुद्दीन ग़ोरी से लड़ने को जा रहा था। इस भविष्यवाणी की कितनी

ही बातें अगर्चे नामुमकिन सी जान पड़ती हैं तो भी इस पर लोगों का बड़ा विश्वास है। कुछ भी हो यह महत्वपूर्ण ज़रूर है, क्योंकि कई सौ वर्ष पहले होनहार घटनाओं के सम्बन्ध में इतना अन्दाज़ लगा लेना आसान नहीं है :—

यह होनहार स होय है; ढिल्लिय न थिरता सोय है। १।
पुनि म्लेच्छ दल बल जोर है; अरु शहर ढिल्लिय तोर है। २।
पृथ्वीराज जुद्ध न जीति है; रण समय रावल बीति है। ३।
चामुण्डराय गुरुराम ही; कट परहि भारत काम ही। ४।
पृथ्वीराज बन्धहि पावही; खटमास विपति विहावही। ५।
गौरी सु ढिल्ली आनयं; पुनि वरत हिन्दुस्थानयं। ६।
तिहि दुर्ग देवल भाजयं; अति आनरथ्थ स साजयं। ७।
वरते स वरसा दोयसे; ता पीछे चकता आवसे। ८।
हिन्दवान दण्ड भरावही; नृप घर घरहि धिय व्यावही। ९।
दखनाद सूं दल आवही; तिहि तखत ढिल्लि न पावही। १०।
ता पीछे टोपी आवसी; बहु इलम कलम चलावसी। ११।
नारी सु राजा बनसी; हिन्दू तुरक सब भज्जसी। १२।
इह तखत ढिल्लिय आवही; नृप घर घरहि सुख पावही। १३।
वह धर्मराज जमावसी; प्रतिपाल न्याय कहावसी। १४।
जब न्याय बन्धन छूटसी, तब आप पेटी फूटसी। १५।
मिल बलख काबुल थट्टयं, तोजोसि भूपति भट्टियं। १६।
विध्वंस ढिल्लिय पाटयं, रहि बरस खट पर नाठयं। १७।
सीसोद ढिल्लिय आवही, [illegible] राण छत्र धरावही। १८।

पैंतीस बरस प्रमाण ही, भोगवे हिन्दुस्थान ही । १९ ।
अजमेर पीर सजागही, पुनि तखत ढिल्लिय मांगही । २० ।
तूवर स ढिल्लिय घेरही, पुनि आण ढिल्लिय फेरही । २१ ।
राठौर ढिल्लिय आवही, पुनि धर्म नीति चलावही । २२ ।

इस भविष्यवाणी का मतलब यह है कि शाहबुद्दीन ग़ोरी के साथ लड़ाई में पृथ्वीराज की हार होगी और उसके बड़े-बड़े सरदार मारे जायँगे। ख़ुद पृथ्वीराज मुसलमानों का क़ैदी हो जायगा। ये मुसलमान हिन्दुस्तान में बड़ा उपद्रव मचायेंगे, मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ेंगे। इसके दो सौ बरस पीछे मुग़लों की बादशाहत होगी और वे लोग हिन्दू राजाओं की बेटियों से विवाह करेंगे। इसके पीछे दक्खिन की फ़ौजें दिल्ली पर हमला करेंगी पर वहाँ उनका राज्य क़ायम न हो सकेगा। इसके पीछे टोपी अर्थात् योरोपियन लोग आवेंगे और तरह-तरह की विद्याओं और कलाओं का प्रचार करेंगे। उस समय स्त्री का राज्य होगा और हिन्दू मुसलमान सब उससे दबकर रहेंगे। उसकी बादशाहत दिल्ली में क़ायम होगी और उसके राज्य में सब लोग सुख पावेंगे। उसका शासन धर्म-राज्य कहलायेगा और वह न्याय का पालन करेगी। जब न्याय का बन्धन टूट जायगा तो यह राज्य भी जाता रहेगा। तब क़ाबुल और बलख़ के लोग दिल्ली पर हमला करेंगे और उसका नाश कर डालेंगे। वे लोग यहाँ पर छः वर्ष तक ठहर सकेंगे। उसके पीछे दिल्ली में उदयपुर के राणाओं का अधिकार होगा

और तब अजमेर के पीर उस पर क़ब्ज़ा करने की कोशिश करेंगे। तोमरवंश के राजपूत भी उस पर हमला करके वहाँ पर एक बार अपनी दुहाई फेर देंगे। अन्त में वहाँ राठौर राजपूतों का अधिकार होगा।

अवधूत केशवानन्द जी

हमारे मुल्क की हिन्दू-जनता का हमेशा से यह विश्वास रहा है कि हिमालय पहाड़ तपस्वी और सिद्ध महात्माओं के रहने की जगह है। यह सच है कि अब हिमालय प्रान्त में भी बहुत से ढोंगी साधू घुस गये हैं और वहाँ के महात्मा नामधारी सच्चे आदर्श से कोसों दूर हैं। तो भी यह कहा जा सकता है कि वहाँ इस समय भी कुछ तपस्वी ऐसे ज़रूर पाये जाते हैं जो आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत ऊँचे पहुँच गये हैं। ऐसे ही महात्माओं में अवधूत केशवानन्दजी का नाम लिया जाता है। आप के बारे में एक छोटा सा लेख सुप्रसिद्ध दानवीर सेठ युगुल किशोर जी बिरला ने समाचार-पत्रों में प्रकाशित कराया था जिससे प्रतीत होता है कि केशवानन्दजी ज़रूर ही विशेष श्रेणी के साधक और तपस्वी हैं। सेठ जी इनके बारे में लिखते हैं :—

"आप की उम्र इस वक्त क़रीब ७० वर्ष के दिखाई पड़ती है। भिक्षा में प्रायः दही या फलाहार, सो भी सिर्फ एक बार लेते हैं। जाड़ा या गर्मी कुछ भी हो एक लंगोटी के सिवा

दूसरा कपड़ा नहीं रखते। आप का न कोई स्थान है न फलाहार को भिक्षा के सिवा किसी से कुछ लेते हैं। कोई सेवक या शिष्य भी साथ नहीं रखते। किन्तु आपकी सबसे कठोर तपस्या यह है कि जाड़ों में उत्तर काशी के पास बर्फ के पहाड़ों के बीच रात के पिछले पहर गंगा की धारा में खड़े होकर आप जाप करते रहते हैं। गर्मी के मौसम में पहाड़ के नीचे हृशीकेश के जङ्गल में आ जाते हैं और कड़ी धूप और गर्म हवा में सूर्य के निकलने के समय से सूर्यास्त तक सूर्य के सामने खड़े हुये जाप करते रहते हैं। सुना है कि आप ३०-४० वर्ष से इसी तरह तपस्या कर रहे हैं। पिछले चार-पाँच वर्षों से तो आप रात का ज्यादातर भाग गंगा में खड़े होकर जप करने में ही बिताते हैं।"

अगर्चें इस तरह का साधन करने वाले साधू संसार से बहुत कम ताल्लुक रखते हैं और उनका सबसे बड़ा गुण यही माना जाता है कि वे किसी प्रकार की अच्छी या बुरी अभिलाषा न रखें। यह सब होने पर भी कहा जाता है कि केशवानन्दजी हिन्दू जाति की दुर्दशा देख कर दुःखी होते हैं और उसके कल्याण की कामना करते रहते हैं। इस कारण इसके भविष्य के सम्बन्ध में उनके मुख से कभी-कभी कुछ निकल जाता है। सेठ युगल किशोर बिरला ने स्वयं दर्शन करके और दूसरे विश्वासपात्र व्यक्तियों से सुन कर इस सम्बन्ध में आपकी धारणा इस प्रकार बतलाई है:—

"अभी कुछ वर्षों तक हिन्दुओं, विशेषतः पंजाब और सिन्ध के हिन्दुओं की आफ़तें और भी बढ़ेंगी। विक्रम की बीसवीं शताब्दी अर्थात् विक्रम सम्वत् २००० (सन् १९४३ ईसवी) के समाप्त होने के आसपास संसार में भयानक अशान्ति होने की संभावना है। उसके कारण शुरू में हिन्दुओं को घोर कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। इस के बाद देश में एक महापुरुष प्रकट होगा जिसके नेतृत्व में सिख और यू० पी० के लोग हिन्दुओं की विपत्ति मिटाने में बड़ी तत्परता दिखायेंगे।"

मेहर बाबा की भविष्यवाणी

मेहर बाबा नाम के एक धार्मिक नेता का नाम अख़बारों में पढ़ने में आया करता है। ये जन्म से पारसी हैं और बम्बई के निवासी हैं। पर इस समय तमाम संसार इनका कार्यक्षेत्र हो रहा है। इस महीने हिन्दुस्तान में हैं तो अगले महीने इङ्गलैण्ड में और तीसरे महीने अमरीका से उनके काम की ख़बरें आती हैं। उनकी बातें बड़ी अनोखी होती हैं जिनपर एकाएक विश्वास करने की इच्छा नहीं होती, पर इतना मानना पड़ेगा कि उनमें अवश्य ही कोई गुप्त शक्ति है। वे बारह वर्ष से मौन रहते हैं और सिर्फ लिख कर बातचीत करते हैं। इतने पर भी बहुत बड़ी तादाद में अङ्गरेज और अमरीकन स्त्री-पुरुष उनके शिष्य हो चुके हैं, जिनमें काउन्टेस आफ़

टाल्सटाय, राजकुमारी मेचैवेल और रूस की भूतपूर्व ग्राण्ड डचेस मेरी आदि के नाम लिये जाते हैं। समाचार-पत्रों में हालही में छपा है कि उन्होंने नासिक में एक आश्रम खोला है जिसमें ६ अमरीकन और १० योरोपियन शिष्य रह कर उस दिन के लिये तैयारी करेंगे जब कि मेहर बाबा का विश्वव्यापी कार्य आरम्भ होगा। इन तमाम बातों को पढ़ कर किसी भी पाठक को इसी नतीजे पर पहुँचना पड़ता है कि मेहर बाबा जरूर ही कोई रहस्यमय व्यक्ति हैं। उनकी ज्यादातर बातें उन सन्तों और आध्यात्मिक पुरुषों की सी होती हैं जो वेदान्त सिद्धान्त के मुताबिक अपने को परब्रह्म का स्वरूप मानते हैं। हालही में उन्होंने अपने मौनव्रत को भङ्ग करने के सम्बन्ध में पूछने पर कहा थाः—

"दो वर्ष के भीतर दूसरा महायुद्ध होगा। इसमें न तो किसी की जीत होगी और न हार। दुनिया पर नाउम्मेदी छा जायगी और सारा संसार ईश्वर की शरण में जाने को व्याकुल होगा। तब मैं लोगों को रास्ता दिखलाऊँगा। मौनव्रत भङ्ग करने के बाद १२ वर्ष तक मैं क्रियात्मक रूप से कार्य करूँगा। इसे बन्द करने का संकेत आप से आप होगा।"

अगर्चे मेहर बाबा के काम के बारे में कुछ कह सकना हमारे लिये मुशकिल है, पर लड़ाई के बारे में उन्होंने जो कुछ कहा है वह बहुत कुछ सच हो सकता

है। दरअसल इस बार युद्ध-कला ऐसी हो गई है कि उसम किसी की हारजीत होना सहज नहीं।

ज्योतिष-शास्त्र की दृष्टि से भारत का भविष्य

एक सुप्रसिद्ध फलित ज्योतिष के ज्ञाता ने भारतवर्ष से सम्बन्ध रखने वाले प्रधान-प्रधान व्यक्तियों की जन्मपत्रियों पर पूर्ण विचार करके और सब का आपस में मिलान करके भारत-वर्ष का भविष्य-फल प्रस्तुत किया है, जिसका सारांश यह है :—

आने वाले वर्षों में जो सब से मुख्य घटना भारतवासियों का ध्यान आकर्षित करेगी वह इस देश के नेताओं का आपस का मतभेद और साम्प्रदायिक द्वेष की वृद्धि है। सम्वत् २००० तक यह इतना भीषण रूप धारण कर लेगा कि उसके कारण कांग्रेस का अस्तित्व सन्देह में पड़ जायगा और उसकी काया-पलट हो जायगी। अन्त में किसी बाहरी देश के आक्रमण के सम्बन्ध से यह जातीय-द्वेष दूर होगा।

ग्रहों के योग से ऐसा आभास होता है कि अगले वर्ष के शुरू में ही काँग्रेस और वायसराय में मतभेद हो जायगा और वह सन १९३९ के मार्च तक चलेगा। दूसरे वायसराय के आने पर अनेक दुर्घटनाओं के पश्चात् शान्ति और समझौता होगा, नेताओं का प्रभाव बढ़ेगा और घर की कलह शान्त होकर एकता की वृद्धि होगी। भारतवर्ष पर पूर्व और पश्चिम से हमले का, झूँठा डर नहीं, सच्चा डर उत्पन्न होगा और उस समय ब्रिटिश

सरकार से भारत का कोई ख़ास समझौता होगा। ये सारी घटनायें सम्वत् २००९ के भीतर हो जायँगी। इस बीच में देश के धन-जन की हानि होगी और उसके बाद विक्रमी सम्बत् २०१० में भारत स्वतन्त्र और शान्त दिखलाई पड़ेगा।

एक भारतीय विद्वान्

कुछ वर्ष पहले बम्बई के एक विद्वान् ने राजनैतिक घटनाओं पर दार्शनिक दृष्टि से विचार करते हुये एक अङ्गरेजी पुस्तक "राजनैतिक गीता" (Political Gita) नाम की लिखी थी। उसके अख़ीर में उन्होंने एक भविष्यवाणी भी दी थी। उन्होंने उस समय किसी विशेष उद्देश्य से बीस दिन तक योग-विद्या के द्वारा समाधि ली थी और उसी दशा में इस भविष्यवाणी की घटनाओं को देखा था। भविष्यवाणी में कोई ख़ास समय नहीं लिखा है, पर लिखने के ढङ्ग से ज़ाहिर होता है कि उनकी सम्मति में ये थोड़े समय में ही होने वाली बातें हैं:—

मैंने देखा कि जापान बिल्कुल पश्चिम की नक़ल कर रहा है और पूर्व के आदर्शों और विशेषताओं को एक दम छोड़ता जाता है। पर अपने एक राजनैतिक मित्र की दग़ाबाज़ी से उसे नीचे गिरना पड़ा और सदा के लिये उसका पतन हो गया।

मैंने देखा कि इङ्गलैण्ड में घरेलू लड़ाई हो रही है। साम्यवादी भयङ्कर ख़ूनख़राबी कर रहे हैं। एक बाहरी शक्ति इङ्गलैण्ड के मज़दूरों को भड़का कर, उसका नाश करा रही है। मैंने

देखा कि उस आपत्ति के समय महात्मा गान्धी ईसामसीह की तरह इङ्गलैण्ड के पास खड़े होकर उसे आश्वासन दे रहे हैं, उसके घावों की मरहम-पट्टी कर रहे हैं और उसे प्रेम तथा सत्य के सिद्धान्तों का उपदेश दे रहे हैं। इङ्गलैण्ड फिर से सँभल गया और कष्टों की भट्टी में तपने के कारण बिल्कुल शुद्ध हो गया। मैंने उस समय एक नये इङ्गलैण्ड को देखा जो स्वार्थ को छोड़ कर संसार में एकता फैलाने के लिये सच्चे जी से प्रयत्न कर रहा था। उस समय उसने सच्चे हृदय से भारत को प्रेमपूर्वक गले लगाया जैसे गोपियाँ कृष्ण को गले लगाती हैं।

सूर्य के गढ़े और लड़ाई

जिस प्रकार फलित ज्योतिष वाले ग्रहों के प्रभाव से भविष्य का पता लगाते हैं उसी प्रकार गणित और खगोल ज्योतिष वालों ने भी कुछ ऐसे सिद्धान्त निकाले हैं जिनसे भविष्य का पता लगता है। इनमें सब से ख़ास सूर्य के गढ़ों या धब्बों का सिद्धान्त है। दूरबीन से लगातार सूर्य का निरीक्षण करने से पता चला है कि उसमें कुछ धब्बे से दिखलाई पड़ते हैं। इन धब्बों की तादाद और आकार कभी तो बहुत कम हो जाता है और कभी बहुत ज्यादा। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि इस बदलाव का असर पृथ्वी की आबहवा पर पड़ता है। हम जो किसी वर्ष बहुत अधिक गर्मी, किसी वर्ष बहुत अधिक बरसात और किसी वर्ष बहुत अधिक जाड़ा देखते हैं इसका सबब ये सूर्य के धब्बे ही हैं।

जाँच करने से यह भी पता चला है कि यह बदलाव एक ख़ास क़ायदे से होता है। सूर्य के गढ़ों के घटने और बढ़ने का एक चक्र सा है जो ११ या १२ वर्ष में पूरा होता है। इस बीच में एक बार उनका जोर घटते-घटते बहुत कम हो जाता है और फ़िर धीरे-धीरे बहुत बढ़ जाता है।

यह सूर्य के गढ़ों का हाल वैज्ञानिकों को बहुत पहले से मालूम था। पर वे यह निश्चय न कर सके थे कि आख़िर यह बदलाव क्यों होता है। किसकी ताक़त के असर से ये गढ़े कम और ज्यादा होते हैं। अब एक नवयुवक गणित ज्योतिषी ने इसका सबब वृहस्पति को बतलाया है। उसके कहने के मुताबिक वृहस्पति सूर्य के चारों ओर अण्डाकार घेरे में घूमता है जिससे उसका फ़ासला सूर्य से कभी कम और कभी ज्यादा हो जाता है। वह सूर्य से ज्यादा से ज्यादा ५०, ६३, १०००० मील और कम से कम ४६, २०, ८०००० मील दूर रहता है। यह सभी जानते हैं कि वृहस्पति बहुत बड़ा ग्रह है और उसका खिंचाव सूर्य पर बहुत अधिक पड़ता है। इसलिए जब वह पास आ जाता है तो सूर्य को ज़ोर से खींचता है जिससे उसके पिघले हुये पिण्ड में बहुत ज्यादा हलचल मच जाती है और इससे गर्मी और बिजली की लहरें ज़ोर से निकलती हैं। वृहस्पति का सूर्य के गिर्द एक चक्कर १२ वर्ष में पूरा होता है, और यही सूर्य के गढ़ों के चक्र की भी मियाद है।

इस संक्षिप्त वर्णन से पाठक यह समझ गये होंगे कि सूर्य

के असर से किस तरह पृथ्वी की आबहवा में बदलाव होता रहता है। अब हमको यह देखना है कि इस बदलाव का राजनैतिक और सामाजिक घटनाओं से क्या ताल्लुक हो सकता है और अगले वर्षों में दुनिया पर इसका क्या असर पड़ेगा। इस बारे में फ्रांस की वर्जिस वेधशाला के अध्यक्ष अब्बेमरो ने, जो खगोल-विज्ञान के बड़े मशहूर जानकार हैं, कुछ समय पहले कहा था :—

"मेरा विश्वास फलित ज्योतिष पर नहीं है और मैं जो भविष्यवाणी कर रहा हूँ उसका आधार सिर्फ खगोल-विज्ञान पर है। समय-समय पर सूर्य में जो गढ़े दिखलाई पड़ते हैं उससे बिजली और चुम्बक की ऐसी ताक़त पैदा होती है कि वह आदमी को डर से घबड़ा देती और उत्तेजित कर देती है। उस समय मामूली सबब से भी उसका गुस्सा भड़क उठता है, और किसी मामूली अन्तर्राष्ट्रीय घटना से भी लड़ाई शुरू हो सकती है।

"इस सिद्धान्त की सचाई जानने के लिये हमको सन् १९०० से अब तक के इतिहास पर निगाह डालनी चाहिये। जब कि सूर्य पहले की बनिस्बत कम ताक़त निकालता है तो पृथ्वी पर शान्ति रहती है और लोग कला तथा सभ्यता के विस्तार की तरफ़ ध्यान देते हैं। इस तरह का जमाना सन् १९००, १९१० और १९२० के आस-पास था। पर हर ग्यारहवें वर्ष सूर्य में ज्यादा धब्बे दिखलाई पड़ते हैं और तभी लड़ाई-झगड़े पैदा

होते हैं। सन् १९०५ में मरक्को की लड़ाई और गत योरोपीय महायुद्ध ऐसे ही मौक़े पर हुये थे।

"सन् १९३६ और ३७ में भी ऐसा ही ज़माना आने वाला है। उसके असर से लोगों में लड़ाई की उत्तेजना पैदा होने के साथ ही भयङ्कर तूफ़ान और भूकम्प आदि का भी बहुत ज़्यादा डर है। सूर्य के धब्बों के असर से गठिया और दिल सम्बन्धी बीमारियों में भी बढ़ती हो जाती है।"

———

——एक महान संसार व्यापी युद्ध का छिड़ना अब निश्चित मालूम होता है। अब सिर्फ समय का सवाल रह गया है कि वह कब आरम्भ होगा। संसार में कुछ राष्ट्र ऐसे हैं जिन्होंने गुज़रे ज़माने में काफ़ी प्रदेशों को जीत लिया है। अतः ये देश अब युद्ध को टालने के लिये उत्सुक हैं। किन्तु कुछ दूसरे देश ऐसे भी हैं जो अपने को खाली पेट अथवा भूखा समझते हैं और इसलिये दूसरों की लूटमार में हिस्सा बँटाने को तैयार बैठे हैं। उदाहरणार्थ इङ्गलैण्ड, फ्रांस, अमरीका अब युद्ध नहीं चाहते और जर्मनी, इटली और जापान युद्ध के लिये उत्सुक हैं।

—जवाहरलाल नेहरू

युद्ध कब होगा ? :—

अगली लड़ाई कब होगी यह एक बड़ा टेढ़ा सवाल है। आजकल आये दिन अखबारों में अगली लड़ाई के बारे में किसी न किसी ज्योतिषी या राजनीतिज्ञ की भविष्यवाणी दिखाई दिया करती है। अगर आप किसी दैनिक पत्र की पिछले दो-तीन साल की फ़ायलें उलट कर देखें तो आपको यह देख कर शायद बड़ा अचम्भा होगा कि इस बीच में पचासों बार बहुत जल्दी ही लड़ाई छिड़ने की बात कही जा चुकी है।

इसका नतीजा यह होता है कि ज्यादातर पाठकों का विश्वास ऐसी बातों पर से उठ गया है और वे इनको कोरे मजाक़ की तरह समझने लगे हैं। इसमें शक नहीं कि इन भविष्य-वक्ताओं में कितने ही सिर्फ सनसनी फैलाने वाले होते हैं। वे अपना मतलब बनाने के लिये तिल का ताड़ बनाकर या योंही भय का भूत खड़ा करके लोगों को घबराहट में डाला करते हैं। अमेरिका और योरोप के अखबारों के बहुत से संवाददाता भी ऐसी बेपर

की बातें खूब उड़ाते हैं क्योंकि उनका रोज़गार इसी से चलता है।

तो भी यह कहना शायद ठीक न होगा कि इनमें से किसी भविष्यवाणी में कुछ भी सच्चाई नहीं होती। जो लोग इन भविष्यवाणियों को पूरी तरह सच होते न देख कर नाउम्मेद हो जाते हैं और उनको बिल्कुल गपोड़ा समझने लगते हैं वे एक बात भूल जाते हैं। वे यह नहीं समझते कि भविष्यवाणी एक तरह का अनुमान है जो चाहे राजनैतिक घटनाओं को देखकर लगाया जाय और चाहे आसमान के तारों की चाल के आधार पर, उसमें थोड़ा-बहुत फ़र्क पड़ हो सकता है। इनमें अगर गणना ठीक की गई हो तो ग्रहों के फल में तो थोड़ा ही फ़र्क पड़ता है पर राजनैतिक मामलों में बड़ी जल्दी परिवर्तन हो जाता है। संसार में हर रोज बीसियों राजनैतिक घटनायें ऐसी होती रहती हैं जिनसे हालत बराबर बदलती है। इटली-अबीसीनिया संग्राम में फ्रांस का झुकाव इटली की तरफ़ था जिसके सबब से इङ्गलैण्ड उसे दबाने के लिए कोई जोरदार कार्रवाई न कर सका। पर बाद में फ्रांस की सरकार में जो बदलाव हुए उनसे फ्रांस का रुख़ बदल गया। अगर यही बदलाव दो-तीन महीने पहले हो जाता तो शायद इटली-अबीसीनिया की लड़ाई की शकल बदल जाती। इस निगाह से राजनैतिक परिवर्तनों के असर से किसी भी भविष्यवाणी में कम या ज़्यादा फ़र्क पड़ जाना अनहोनी बात नहीं है।

सच पूछा जाय तो ज्यादातर भविष्यवेत्ताओं ने सन् १९३५ में महायुद्ध शुरू हो जाना अटल माना था, और अगर हम उस वर्ष की घटनाओं पर ग़ौर करें तो उनका कहना बिल्कुल ग़लत नहीं बतलाया जा सकता। इसी साल इटली-अबीसीनिया की लड़ाई छिड़ी और शुरू में यह साफ़ जान पड़ता था कि इसमें दूसरे योरोपियन देश भी शामिल होंगे और महायुद्ध हो जायगा। इस मामले में इटली का सब से बड़ा विरोधी इङ्गलैण्ड ही था और शुरू में उसने कुछ ज़ोर भी दिखलाया। पर जब उसने देखा कि और सब देश ढीले हैं और उसका अकेले इस झगड़े में फँस जाना बेवकूफ़ी होगी तो वह भी तरह दे गया। लोग यहाँ तक कहते हैं कि वह अपमान का कड़वा घूँट पीकर रह गया। अब लड़ाई ख़त्म होने पर जो बातें खुल रही हैं उनसे यह साफ़ जाहिर होता है कि कई योरोपियन देशों ने पहले अबीसीनिया को मदद देने का पूरा भरोसा दिलाया था। पर बाद में इटली की ताक़त ज्यादा देखकर उनको पीछे पैर हटा लेना पड़ा। इस सम्बन्ध में इङ्गलैण्ड की पार्लियामेण्ट में बड़ी बहस हुई थी, उसमें वैदेशिक मन्त्री ईडन साहब ने साफ़ शब्दों में कहा था :—

"यह साफ़ ज़ाहिर है कि अगर राष्ट्र-संघ अबीसीनिया में शान्ति क़ायम करने की कोशिश करता तो उसे इस तरह की कार्रवाई करनी पड़ती जिससे अख़ीर में ज़रूर ही मेडीटेरेनियन

यूरोप का राजनैतिक नक्शा

इस समय योरोप के किस देश में किस राजनैतिक दल की प्रधानता है यह नीचे दिये गये नक्शे से स्पष्ट मालूम हो जाता है।
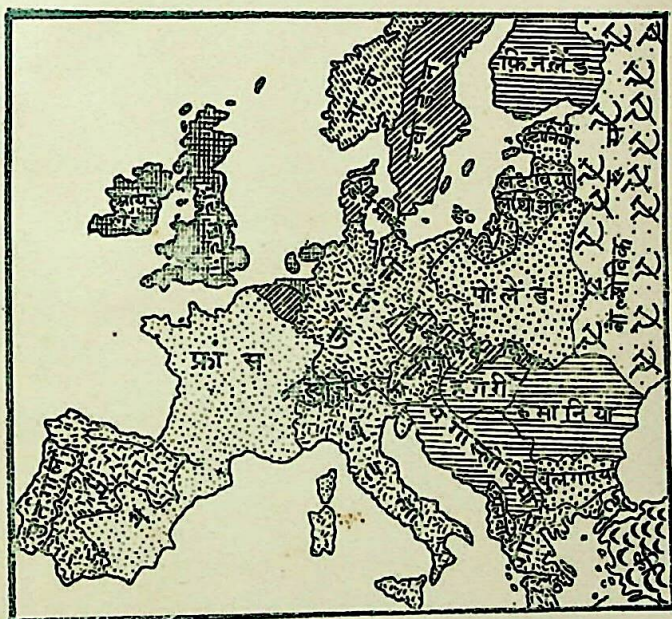
पार्लीमेंटरी शासन

- आंशिक रूपसे प्रजातंत्रके अधिकार युक्त
- पूंजी वादियों का संयुक्त शासन
- पूंजी० और साम्य० का सम्मिलित शासन
- साम्यवादी शासन
- प्रजा-पार्टी का शासन

एकतंत्र या निरंकुश शासन

- पूर्ण अधिकार प्राप्त सरकार
- अर्द्ध अधिकार प्राप्त शासन
- कमालिस्ट
- सोवीट

समुद्र में लड़ाई छिड़ जाती। कोई भी यह नहीं कह सकता कि यह लड़ाई मेडीटेरेनियन से आगे न बढ़ती।"

भूतपूर्व प्रधान-मंत्री बाल्डविन साहब ने भी उसी समय एक स्थान में भाषण करते हुये कहा था :—

The only way of altering the course of events as they had hitherto taken place, was to go to war. He did not know of a single European country prepared for that and he would not cast his voice for that course of action.

The first step to peace by collective security meant more war preparations. That was the horrible irony of the situation. If fire was ever alighted on the continent no man could tell where the heather would stop burning.

अर्थात् "हाल ही में जो घटनायें हुई हैं उनको बदलने का एकमात्र उपाय युद्ध छेड़ना था। पर मुझे एक भी योरोपियन देश ऐसा दिखलाई नहीं पड़ता जो इसके लिए तैयार हो। मैं भी इसके लिए हर्गिज राय नहीं दे सकता।......................अगर हम सामूहिक उपाय से शान्ति बनाये रखने की कोशिश करें तो उसका मतलब होगा कि हम लड़ाई के लिए और भी ज्यादा तैयारी करने लगें। यह बात, विचित्र तथा साथ ही भयंकर भी

है। अगर योरोप में कभी आग लगी तो कोई भी यह नहीं कह सकता कि वह कहाँ जाकर ख़त्म होगी।"

अब शायद पाठक समझ गये होंगे कि हम पुरानी या नई भविष्यवाणियों से तभी कुछ लाभ उठा सकते हैं जब कि राजनैतिक परिवर्तनों और चालों पर निगाह रखें। जो लोग इन दोनों बातों को मिला कर अच्छी तरह विचार कर सकते हैं वे ही संसार के राजनैतिक भविष्य और अगले महायुद्ध के विषय में कुछ सच्चा अनुमान कर सकते हैं। इसीलिए इस पुस्तक में हमने पुरानी और नई भविष्यवाणियों के साथ-साथ संसार की मौजूदा राजनैतिक हालत का नकशा पाठकों के सामने रख दिया है। वे इन बातों पर जितना ही ध्यान देकर विचार करेंगे उतना ही ज्यादा आगे होने वाली घटनाओं का भेद समझ सकेंगे। हम इन घटनाओं पर विचार करके जिस नतीजे पर पहुँचे हैं वह यह है।

इटली का इरादा

हमारे ख़्याल से इटली-अबीसीनिया युद्ध ने महायुद्ध की नींव रखदी है। अब जब तक संसारव्यापी युद्ध शुरू न होगा, बीच-बीच में छोटे-मोटे झगड़े और लड़ाइयां होती ही रहेंगी। इसका सबब यह है कि इटली का अबीसीनिया पर कब्ज़ा हो जाने से कितने ही ऐसे पेचीदा सवाल पैदा हो गये हैं जिनका फ़ैसला बिना लड़ाई के हो ही नहीं सकता।

आजकल आम तौर पर यह कहा जाता है कि इटली की निगाह पैलेस्टाइन, इराक़ और स्वेज़ नहर के आसपास के दूसरे देशों पर लगी है। अगर वह इस इरादे में कामयाब हो गया तो एशिया और योरोप के रास्ते पर उसका कब्जा हो जायगा। यह साफ़ जाहिर है कि इसमें उसे इङ्गलैण्ड, फ्रांस आदि के विरोध का मुकाबला करना होगा और इसका नतीजा सिवा लड़ाई के और कुछ नहीं हो सकता।

जर्मनी की माँग

जर्मनी की समस्या भी बड़ी गम्भीर है। वह अब कमजोर और नीचे दर्जे का मुल्क बन कर रहना नहीं चाहता। उसने अपनी जनता को संगठित करके अपनी ताक़त तो बढ़ा ली है पर उसके पास न कोई आधीन देश हैं न उपनिवेश, इसलिए वह कहीं पैर नहीं फैला सकता। अपनी हिफ़ाजत और तरक्की के लिये उसे उपनिवेश हासिल करने ही पड़ेंगे। इसका नतीजा भी जल्दी या देर में लड़ाई के सिवा और कुछ नहीं हो सकता।

जर्मनी से ही ताल्लुक रखने वाला एक बड़ा सवाल जर्मन जाति के उन लोगों का है जो इस समय पौलैण्ड, इटली, आस्ट्रिया वगैरह की मातहती में हैं। इनमें से कुछ तो ख़ुद ही अपने देश में स्थान न मिलने से आसपास के मुल्कों में जा बसे थे और कुछ महायुद्ध में जर्मनी के हार जाने पर दूसरे मुल्कों में जबर्दस्ती शामिल कर लिये गये। इन लोगों की तादाद १५०००००० (डेढ़ करोड़) है। जर्मनी के नाज़ी दल की यह

प्रतिज्ञा है कि इन तमाम जर्मन बोलने वाले लोगों को मिलाकर एक महान जर्मन राष्ट्र का निर्माण किया जायगा। इसी सबब से योरोप में बार-बार झगड़े पैदा होते हैं और जब तक इसका ठीक फ़ैसला न होगा लड़ाई की जड़ बनी ही रहेगी। इसी परिस्थिति को समझ कर एक मशहूर लेखक ने इङ्गलैण्ड के 'सण्डे एक्सप्रेस' नामक अख़बार में लिखा था :—

"संसार की शान्ति जर्मनी के इन्हीं खोये हुये निवासियों पर मुनहसिर है। योरोप में डेनज़िग, मेमल, आस्ट्रिया, बोहेमिया आदि जितने ख़तरे के मुक़ाम बतलाये जाते हैं, वे सब इसी लिये ख़तरनाक हैं कि वहाँ पर जर्मन लोग बसते हैं!"

स्पेन और चीन

महायुद्ध की नींव का दूसरा पत्थर स्पेन की घरेलू लड़ाई है। जैसा हम पहले दिखला चुके हैं यह दरअसल स्पेन वालों का झगड़ा नहीं है बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से इटली और इङ्गलैण्ड का झगड़ा है। इङ्गलैण्ड इस वक्त लड़ने के लिये पूरी तरह तैयार नहीं हो पाया है इसीलिये वह चुप है और बराबर 'दबी हुई बिल्ली की तरह चूहों से कान कटाता जाता है।' पर इसमें ज़रा भी शक नहीं कि स्पेन में चाहे जिस दल की जीत होती रहे यह झगड़ा ख़त्म नहीं हो सकता। क्योंकि अगर जनरल फ्रेंको का क़ब्ज़ा वहाँ हो गया तो इसका मतलब यह होगा कि वहाँ फ़ैसिज्म और साथ ही इटली का बोलबाला हो जायगा। यह

बात इङ्गलैण्ड की ताक़त को घटाने वाली ही न होगी बल्कि यह एक ऐसा धक्का होगा जिससे उसके साम्राज्य की नींव बुरी तरह हिल जायगी। स्पेन पर कब्जा हो जाने से इटली इङ्गलैण्ड के रास्ते को ही रोक देगा और उसे अपने तमाम उपनिवेशों और मातहत देशों से ताल्लुक बनाये रखने में बड़ी मुशकिल हो जायगी। इसलिये हम यही समझते हैं कि या तो स्पेन पर जनरल फ्रैंको का पूरा अधिकार ही कभी न हो सकेगा और अगर ऐसा हो गया तो उसके बाद महायुद्ध के छिड़ने में देर न लगेगी।

चीन और जापान की लड़ाई को महायुद्ध की ओर तीसरा क़दम समझना चाहिये। कितने ही लोगों का तो यह ख़्याल है कि यही लड़ाई आगे चल कर महायुद्ध की शक्ल में बदल जायगी। जो कुछ भी हो यह सवाल है बड़ा टेढ़ा। जापान एक नया साम्राज्यवादी देश है जिसकी नसों में जवानी का नया ख़ून दौड़ रहा है और दिल में आगे बढ़ने का हौसिला है। उसने एशिया में अपना साम्राज्य क़ायम करने का पक्का इरादा कर लिया है। पर इस इरादे के पूरा होने में कई बाधायें हैं। इससे इङ्गलैण्ड, अमरीका, रूस और किसी हद तक फ़्रांस के स्वार्थ में धक्का लगता है। इन सब के विरोध का मुक़ाबला करके ही जापान आगे बढ़ सकता है।

जैसा हम 'जापान की ख़तरनाक स्कीम' वाले अध्याय में दिखला चुके हैं इन तमाम विरोधियों में जापान इङ्गलैण्ड को ही

सब से मुख्य समझता है। बाहरी देशों में से उसी का साम्राज्य एशिया में सब से बड़ा है और एशिया के पास ही आस्ट्रेलिया का पूरा महाद्वीप भी उसके कब्जे में है। इसलिये जापान की निगाह ख़ास तौर पर अङ्गरेज़ों पर ही लगी है। वह इस कोशिश में है कि अपने दूसरे विरोधी अमरीका, रूस वगैरह से समझौता करके अकेले अङ्गरेज़ों से लड़ाई छेड़ दे और आस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैण्ड को उनसे छीन ले। ये दोनों देश काफ़ी बड़े हैं। पर इनकी जनसंख्या बहुत थोड़ी है। इसलिये अगर जापान की बढ़ती हुई आबादी को कहीं जगह मिल सकती है तो इन्हीं दो देशों में। इस बात को जापान के बहुत से लेखक बार-बार कह चुके हैं। उनकी राय में इन मुल्कों पर स्वाभाविक अधिकार जापान का ही है, इङ्गलैण्ड ने जबर्दस्ती उनमें टाँग अड़ा रखी है। इतना तो साफ़ मालूम पड़ता है कि अगर ये देश जापान के हाथ लग जायँ तो वह बहुत जल्द इनकी तरक़्क़ी करके इन्हें अपने महत्वपूर्ण उपनिवेश बना सकता है।

अपने इस इरादे को निगाह में रख कर ही जापान ने इस समय चीन से लड़ाई छेड़ी है। क्योंकि चीन में अपना एक मज़बूत अड्डा क़ायम करके ही जापान आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड वगैरह की तरफ़ क़दम बढ़ा सकता है। उसका इरादा यह है कि वह ऐसे मौक़े पर अङ्गरेज़ों से युद्ध छेड़े जब वे योरोप की समस्या में उलझे हों और अपनी तमाम जल सेना को पैसफ़िक महासागार में जापान का मुक़ाबला करने के लिये न ला सकें।

नये साम्राज्यवादियों का गुट्ट

इस स्कीम को पूरा करने के लिये इन तीनों नये साम्राज्य-वादी देशों—जापान, जर्मनी और इटली—ने आपस में कोई बहुत ही गुप्त-संधि कर ली है। कहने को यह रूस के बोलशेविकों के ख़िलाफ़ है, पर हमारे ख्याल में वह सब से बढ़ कर अङ्गरेज़ों के विरुद्ध ही है। इन तीनों ने शायद दुनिया के बसने लायक़ मुल्कों को आपस में बांट लिया है। जापान आस्ट्रेलिया को, इटली अफ़रीका को और जर्मनी रूस के उपजाऊ प्रदेशों को हथियाना चाहता है। इसी लिये वे इन दिनों एक दूसरे का हर एक बात में पूरी तरह समर्थन कर रहे हैं। अगर हमारा अन्दाज़ सही हुआ तो अगले महायुद्ध में जर्मनी रूस का, इटली इङ्गलैण्ड का और जापान पैसफ़िक महासागर में अमरीका का मुक़ाबला करेगा। वैसे ये लोग इस महायुद्ध को सब जगह एक दम छेड़ देना पसन्द नहीं करते, बल्कि एक-एक करके इन पुराने साम्राज्य-वादी देशों को जीतना चाहते हैं। इसमें सब से पहले पैसफ़िक महासागर में इङ्गलैण्ड और जापान का मुक़ाबला सम्भव जान पड़ता है। इस मौक़े पर इस बात की पूरी कोशिश की जायगी कि रूस और अमरीका लड़ाई से अलग रहें और जापान अकेला अङ्गरेजी जहाज़ी बेड़े को हरा कर अपना इरादा पूरा कर ले। पर अगर रूस और अमरीका न माने तो तुरन्त ही इटली योरोप में इङ्गलैण्ड को लड़ाई में लगा कर रोक देगा और जर्मनी रूस पर हमला करके उसकी ताक़त बाँट देगा। इस तरह जापान

को विशेष रूप से अकेले अमरीका का मुक़ाबला करना रह जायगा।

हिन्दुस्तान में तैयारी

जापान की ऊपर लिखी स्कीम में कहाँ तक सार है इसका सबसे बड़ा सबूत, जिसे हम अपनी आँखों से देख रहे हैं, हिन्दुस्तान में आत्मरक्षार्थ होने वाली तैयारियाँ हैं। करांची की तैयारियों का हाल हम पीछे लिख ही चुके हैं, अब कलकत्ता में भी ऐसा ही इन्तजाम किया जा रहा है। सच पूछा जाय तो अगर जापान को सफलता मिली और वह आगे बढ़ता गया तो कराँची से पहले कलकत्ता और मद्रास वगैरह को ही ज्यादा डर है। इस सम्बन्ध में लन्दन में भाषण देते हुये सर इयन हैमिल्टन ने कहा था:—

"जापान सिंगापुर की ओर अग्रसर हो रहा है। जापान के बादशाह का जो रास्ता आगे बढ़ने का होगा वह बिल्कुल साफ़-साफ़ प्रकट है। जापान की फ़ौज का रास्ता हैन हाउ, हांगकांग, सिंगापुर, बर्मा, आसाम और बङ्गाल से होगा।"

पाठकों को सर इयन हैमिल्टन के शब्द विचित्र जान पड़ेंगे, पर उन्हें समझ लेना चाहिये कि राजनीति में कुछ भी असम्भव नहीं है। जो कल दोस्त थे वे आज दुश्मन बन जाते हैं और जो अभी तक कमज़ोर ख़्याल किये जाते थे वे शक्तिशाली बन बैठते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुये इस अङ्गरेज राज-

नीतिज्ञ ने जो चेतावनी दी है उसे बिल्कुल निरर्थक नहीं समझ लेना चाहिये। इस समय जापान का सितारा चढ़ती पर है; अगर वह पूरी ताक़त लगा दे तो कोई आश्चर्य नहीं कि अङ्गरेजी बेड़े को आत्मरक्षार्थ पीछे हटना पड़े और जापानी जल सेना सचमुच बर्मा और बङ्गाल तक पहुँच जाय। इस उद्देश्य से जापान ने स्याम देश में 'क्रा' नाम की एक नहर बनाने की पूरी योजना तैयार कर ली है जिसके जरिये उसके जहाज सिंगापुर का चक्कर लगाये बिना ही बङ्गाल की खाड़ी में पहुँच जायँगे। इस खाड़ी में हजारों छोटे-छोटे निर्जन द्वीप हैं जिनका जापानियों ने पूरी तरह पता लगा रखा है। पिछली जर्मनी की लड़ाई के समय जर्मनी के जहाज 'एमडन' ने इन्हीं द्वीपों में अपना अड्डा बना कर माल लादने वाले कितने ही अङ्गरेजी जहाजों को डुबा दिया था और मद्रास वगैरह पर गोलाबारी करके हिन्दुस्तान में सनसनी उत्पन्न कर दी थी। ऐसी हालत में अगर जापान, जो कि जर्मनी की बनिस्वत हिन्दुस्तान के बहुत पास है, और जिसने बङ्गाल की खाड़ी के द्वीपों का अङ्गरेजों की अपेक्षा भी ज्यादा पता लगा रखा है, हिन्दुस्तान पर हमला कर दे तो क्या ताज्जुब है। अगर्चे यह कह सकना मुश्किल है कि उसे अखीर तक सफलता मिलती रहेगी और उसी की जीत होगी, पर एक बार वह हमारे मुल्क में तहलका मचा सकता है इसमें कुछ भी असम्भव नहीं है।

भावी महासमर में दो पक्ष

ऊपर लिखी बातों पर ग़ौर करने से एक मामूली समझ का आदमी भी यह जान सकता है कि आजकल राजनीति के मैदान में एक तरफ़ तो इटली, जर्मनी, और जापान ये तीन ऐसे देश हैं जिनकी आबादी बहुत बढ़ गई है पर जिनके पास अपना विस्तार करने के लिये न काफ़ी मुल्क हैं न धन। इन्होंने अपनी फ़ौजी ताक़त बहुत बढ़ाली है और उसके बल पर वे मुल्क और धन हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं।

दूसरी तरफ़ अमरीका, इङ्गलैण्ड, फ्रान्स और रूस जैसे देश हैं जिनके पास ज़मीन और धन की कमी नहीं है। ऐसी हालत में पहले दल वालों का दूसरे दल वालों से झगड़ा हो जाय तो कोई ताज्जुब नहीं। यह मुमकिन है कि इनमें से एकाध को किसी तरह का लालच देकर अलग कर दिया जाय या कोई दूर रह कर ही तमाशा देखने की कोशिश करे। पर अधिकांश में योरोप के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ भी इसी तरह की दलबन्दी होने की सम्भावना बतला रहे हैं।

इन दोनों दलों का विरोध दिन पर दिन बढ़ता ही जाता है और इसलिये सब जल्दी से जल्दी अपनी फ़ौजी ताक़त बढ़ाने और दूसरी तैयारिआँ करने में लगे हैं। इनकी तैयारी देख कर दूसरे छोटे मुल्क भी, जो अपने ही घर में सन्तुष्ट हैं, घबड़ाते हैं

कि कहीं कोई हमारे ऊपर दांत न लगाये। इसलिये लाचार होकर सामर्थ न होते हुए भी उनको फ़ौजी ताक़त बढ़ाने की तरफ़ ध्यान देना पड़ता है।

युद्ध की बढ़ती हुई सम्भावना

इस तरह दिन पर दिन योरोप और पूर्वी एशिया हथियारों से भरे फ़ौजी कैम्प की तरह होते जाते हैं और महायुद्ध पास आता जाता है। अगर्चे उसे टालने की बहुत कोशिश की जा रही है और कुछ समय के लिए टाला भी जा रहा है पर उसकी जड़ नहीं काटी जा सकती। इसके विपरीत उसके शुरू होने में जितनी देर लगेगी उतनी ही लड़ाई की तैयारी ज्यादा हो जायगी जिससे लड़ाई और भी घमासान और नाश करने वाली होगी। इन्हीं बातों को देख कर इङ्गलैण्ड के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री लायड जार्ज, जिन्होंने सन् १९१४ में महासमर का शुरू से अखीर तक संचालन किया था, बार-बार अगली लड़ाई के बारे में चेतावनी देते रहते हैं। कुछ समय पहले उन्होंने कहा था :—

"लड़ाई की तैयारियां सब जगह बड़े जोर-शोर के साथ की जा रही हैं। सब मुल्क एक ही बात कहते हैं कि 'जब दूसरे लोग तैयारी करते हैं तो हम क्यों न करें'।"

हमारे देश के मशहूर राजनीतिज्ञ सर हरीसिंह गौड़ ने कुछ समय पहले योरोप-यात्रा से लौटने पर कहा था :—

"योरोप के मुल्कों में बड़ी अशान्ति फैली हुई है और जिन बातों के सबब से १९१४ का महायुद्ध हुआ था वे फिर आज मौजूद हैं। योरोप के महाद्वीप में लड़ाई की बड़ी भारी तैयारियाँ हो रही हैं और उनके मुक़ाबले में इङ्गलैण्ड की तैयारी कुछ भी नहीं है। अगर युद्ध हुआ तो इसमें सन्देह नहीं कि दुनिया पचास साल के लिये बड़े संकट और कष्टों में पड़ जायगी।"

इस तरह के सैकड़ों सबूत इस बात के मिलते हैं कि योरोप ही नहीं संसार भर में लड़ाई का डर फैला हुआ है, और उसका होना ऐसा ही पक्का माना जाता है जैसे दो और दो का मिल कर चार होना। यह भी हम कह सकते हैं कि उसमें एक दल साम्राज्यों पर कब्जा रखने वालों का होगा और दूसरा साम्राज्य की लालसा रखने वालों का। अब सिर्फ इतना जानना बाकी रह जाता है कि लड़ाई दरअसल कब तक शुरू हो जायगी।

इस सम्बन्ध में हम पाठकों को फिर बतला देना चाहते हैं कि अगर वे भविष्यवाणी का अर्थ यही समझते हैं कि लड़ाई की ठीक-ठीक तारीख़ पहले से बतला दी जाय तो सम्भवत: उनको नाउम्मेद ही होना पड़ेगा, क्योंकि ऐसी सामर्थ तो सिवाय विधाता के शायद ही और किसी में हो। राजनीतिज्ञों या ज्योतिषियों को तो और बातों के साथ-साथ अनुमान से भी काम लेना पड़ता है और उसमें कुछ फ़र्क पड़ जाना अचम्भे की बात नहीं।

इस बात को ध्यान में रखते हुये जब हम लड़ाई के समय पर ग़ौर करते हैं तो हमको मालूम होता है कि अब तक इस बारे में लोगों ने जो भविष्यवाणियां की हैं उनमें बहुत फ़र्क है। मिसाल के तौर पर एक ज्योतिषी महाशय ने साफ़ शब्दों में घोषणा की थी कि अक्टूबर १९३६ में विश्वव्यापी महाभारत छिड़ जायगा। दूसरी ओर दक्षिण अफ्रीका के जनरल हरजोग जैसे राजनीतिज्ञ हैं, जिनका कहना है कि अगर राष्ट्र-संघ अपने सदस्यों के प्रति अपने कर्तव्य का पालन न करेगा तो २० साल के भीतर ही संसारव्यापी युद्ध होना निश्चित है। इन दोनों तरह के विचार वालों के बीच में एक भारतीय विद्वान हैं जो कुछ समय पहले योरोप की सैर करके और वहाँ की राजनैतिक दशा का अध्ययन करके लौटे थे। भावी महायुद्ध के सम्बन्ध में उन्होंने साफ़ लफ़्ज़ों में कहा था:—

There were frontiers, question of minorities and economic disabilities. These would have to be readj-usted sooner or later. If they were readjusted there would be no war in Europe till 1940. If not war was inevitable and within two years.

" योरोप के सामने इस समय सीमाओं की समस्या, छोटे राष्ट्रों का सवाल और आर्थिक अधिकारों में भेदभाव का सवाल मौजूद है। जल्दी या देर में इनका फ़ैसला करना ही पड़ेगा। अगर निपटारा कर दिया गया तो योरोप में सन् १९४० तक

लड़ाई न होगी। नहीं तो लड़ाई का होना लाज़िमी है और वह भी दो साल के भीतर।"

इसमें शक नहीं कि यह अन्दाज बहुत सोच समझ कर लगाया गया है। आजकल की घटनाओं और नये तथा पुराने भविष्यवेत्ताओं के कथनों से सन् १९३८ तक लड़ाई की बहुत कुछ उम्मेद जान पड़ती है। पर साथ ही हमको यह भी नहीं भूल जाना चाहिये कि इङ्गलैण्ड, फ़्रांस और अमरीका आदि बड़े राष्ट्र लड़ाई से बहुत डर रहे हैं और उसे रोकने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। अगर इनको कामयाबी हुई तो लड़ाई दो-चार साल के लिये टल भी सकती है। इन बातों पर ग़ौर करने से अन्त में हम उसी नतीजे पर पहुँचते हैं, जो हमने इस पुस्तक के शुरू में लिखा है कि सम्बत् २००० के आस-पास लड़ाई का छिड़ जाना निश्चित है।

——यदि जापान और इङ्गलैण्ड में बड़ा संघर्ष हुआ तो हिन्दुस्तान क्या करेगा? ऐसी हालत में हमारा देश खामोश नहीं बैठा रह सकता, क्योंकि यह अवश्यम्भावी है कि इस बार हिन्द महासागर ही युद्ध-क्षेत्र बनाया जाय। हमको संसार के लोकमत का अधिक मूल्य नहीं लगाना चाहिये और यह समझ लेना चाहिये कि आत्म-रक्षा ही प्रत्येक राष्ट्र का सबसे अधिक महत्वपूर्ण कर्तव्य है।

—वीरश्रेष्ठ विनायक सावरकर